मुस्लिम विदुषियों
की
घर वापसी

समर्पण

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
की
पुण्य स्मृति में

elibrary.thearyasamaj.org

thearyasamaj .org

मुस्लिम विदुषियों की घर वापसी

30 मुस्लिम युवतियों की
वैदिक धर्म अंगीकार करने की प्रेरक कहानियाँ

मधु धामा

संपादन एवं सहलेखन
तेजपाल सिंह धामा

elibrary.thearyasamaj.org

सागर प्रकाशन

शाहदरा दिल्ली-110032

ISBN : 978-93-84066-16-1

© मधु धामा

प्रकाशक

सागर प्रकाशन

77सी/52/1, मुकेश नगर,
शाहदरा दिल्ली-110032

मूल्य

150.00

प्रथम संस्करण

2018

शब्दांकन

निधि, तेजस और तमन्ना धामा, शाहदरा, दिल्ली-110032

मुद्रक

विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

Muslim Vidushiyon Ki Ghar Wapsi (Stories for Social Change)
by Madhu Dhama, Tejpal Singh Dhama

elibrary.thearyasamaj.org

अनुक्रम

हसीना-हमीदा की दीवानगी.................................07

पहली शरणार्थी..10

सिमरन के श्याम सखा..20

भवानी की तलवार...37

यवन कांचनी..41

सुहागन सती सावित्री...67

हवन कुण्ड में आहुति...70

एमएलए की बहन...74

अन्नपूर्णा...77

शहर में सन्नाटा...84

लाड़ो बसंती..88

भिखारिन बा...91

किताब का हिस्सा...97

न्याय हम करेंगे...100

मछली पर दया..103

हाथ से निकला लाहौर......................................105

शैला-नूरा...109

मासूम वैदेही...112

सौतेली माँ का ताना..115

तकरीर पर तकरार..117

ठोकर लगी और मिल गए भगवान....................119

elibrary.thearyasamaj.org

मदरसे में मंत्र.....121
इन्शा की इंसानियत.....123
मेरा दूसरा जन्म.....126
घर चलो न पापा.....142
अनामिका.....155
दूसरी जाटनी.....158
जब सरस्वती बनीं मदीहा.....161
प्रायश्चित.....165

elibrary.thearyasamaj.org

हसीना-हमीदा की दीवानगी

''अब्बू आप क्या पढ़ रहे हैं?'' अरब के खस नामक छोटे से घर में रहने वाली हसीना और हमीदा ने अपने अब्बू से कहा, ''आप हर दिन पढ़ते ही रहते हैं।''

''बेटी, मैं अमिरूल कैस किताब पढ़ रहा हूँ।''

''अब्बू क्या है इस किताब में?'' हमीदा ने पूछ लिया था।

''बेटी इसमें हमारे पैगंबर हूद का वर्णन है, जो आद जाति के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने भेजा था।''

''अब्बू अच्छा हम भी तो सुनें हूद के बारे में हमें भी बताओ?'' अब हसीना ने कहा।

''बेटी हूद हिन्दुस्तान की सरजमीं पर उतारे गए थे।''

''किसलिए?'' हमीदा ने पूछा।

उनके अब्बू शंका का समाधान करने लगे थे :

जा इनाबिल् अम्रे मुकर्रमतुन फिद्दनिया इलस्समाए

व मुखजिल काफिरीना कमा यकूलून फिलकिताबन

अर्थात्

हे मेरे स्वामी आपने अपनी असीम कृपा की, जो संसार के लिये अवतरित हुए, जबकि पापियों ने इस पर कब्जा कर रखा था, जैसा कि आपने-स्वयं अपने ग्रन्थ में कहा है।''

''ओह् तो क्या हूद पापियों का नाश करने आए थे?'' हमीदा बोली।

''हाँ बेटी!

आयैन आयैन तबअरत दीन-अस्सादिक फिल-इन्स

जाअत तबर्रल मुमिनीना व तत्तखिजलकाफिरीन शदीदन

अर्थात्

जब जब संसार में धर्म की कमी होती है और पाप बढ़ जाता है तब तब भक्तों की रक्षा और पापीयों को दण्ड देने के लिये मैं जन्म लेता हूँ ऐसा हूद ने कहा है।''

''क्या हूद बहुत बड़े राजा बने थे?'' हसीना ने पूछा।

''हाँ बेटी!

रब्बना मुबारक बलदतुन नुजिल्त मसरूरततुन

व ताकुलल अर्जा बकरतुन फी उतुब्बि मसरूरन

अर्थात्

हे प्रभु, वह नगर धन्य है जहाँ आपने जन्म लिया और वह भूमि (धन्य है) जहाँ आप गौ चराते हुए अपने मित्रों के साथ खेला करते थे।''

''वे देखने में कैसे थे?'' हमीदा ने पूछा।

''मनभावन थे वे...

वल हुना फिस्सूरत अल-मलीह कमा जिइना फिस्सूरत बहुस्नि

नयना तत्तखिजी यदिहा फिस्समाइ लाकरारा मसीदा

अर्थात्

आपकी साँवली सूरत देखकर ऐसा मालूम होता है कि साक्षात् सौन्दर्य की प्रतिमा मानदण्ड में प्रकट हुई है। जब आप बाँसुरी बजाते हैं, तो उसकी मनोहर और सुरीली धुन पुरुषों और स्त्रियों को अपना भक्त बना लेती है।''

''अब्बू मैं हूद की जन्मभूमि देखना चाहती हूँ।'' हसीना ने कहा।

''और मैं भी।'' हमीदा भी बोल पड़ी और अब्बू के हाथ से किताब लेकर उसकी एक आयत पढ़ने लगी थी :

स्ऐतु जमाली इलाहतुन फिलमलबूसे यदाहु नयना

सअसहु हुल्ली फिज्ज्तुन मिनल इन्सि मसरूरा

हे ईश्वर, एक बार मुझे भी अपना रूप दिखा दो, जब कि आपने

पीताम्बर पहना हुआ हो और हाथ में बांसुरी हो, सिर पर ताज, कानों में कुण्डल हों जिस रूप को देखकर दुनिया आनन्द विभोर हो जाती है।

वजन्नतल हूर तनजी व तत्तखिजा बिललौनाते जबलुन

व लि इबाद स्साहिलीन-अल-हुब्बि हल कुन्तु मसरूरा

हे प्रभु, आपने अपने पवित्र चरणों की ठोकर से स्वर्ग की अप्सरा को मोक्ष प्रदान किया था और अंगुली पर पर्वत उठाया था। भक्तों और मित्रों के लिये सब कुछ किया था। क्या हमें वंचित रखोगे?''

''अच्छी बात है, हमारे गाँव के व्यापारियों का काफिला हिन्द के लिए परसों रवाना होगा, तुम तैयारी कर लो उनके साथ चली जाना।''

''शुक्रिया अब्बूजान! ईशालयम बालकम्।''

''बालकम् ईशायलयम्।''

हमीदा और हसीना व्यापारियों के काफिले के साथ भारत आई, लेकिन उन्हें भारत देश इतना अच्छा लगा कि वे फिर कभी यहाँ से वापिस न गई, उन्होंने यहाँ वेद, उपनिषदों का गहन अध्ययन किया और कालांतर में एक मंदिर में बालिकाओं को पढ़ाने के कार्य में लग गई। औरंगजेब के काल तक उनके द्वारा स्थापित विद्यालय मथुरा में था, बाद में मुगलों ने उसे तोड़कर मस्जिद में बदल दिया।

यहूदी लोग आज भी भारत को पवित्र भूमि मानते हैं और गोपाष्टमी मनाते हैं, लेकिन कुरान में भी हूद को अल्लाह का आद जाति यानी कि यादवों के लिए भेजा गया दूत ही माना गया है। हूद की तरह हजरत नूह की कहानी भी महाराज मनु की तरह ही मिलती-जुलती है। इससे यह सिद्ध होता है मुस्लिमों, यहूदियों और इसाइयों के पूर्वज आर्य हैं और उन सबका मूल धर्म वैदिक था।

संदर्भ

1. अमिरूल कैस, अरेबिक पुस्तक, संस्करण 1836
2. भक्त नारी, हनुप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस गोरखपुर, 2005

पहली शरणार्थी

''आर्यावर्त की जय हो!''

''कहो, द्वारपाल कार्णिक! क्या समाचार है?''

''महाराज, आर्ष देश के सम्राट पृथ्वीपति के द्वार पर एक याचक की भाँति शीश झुकाए खड़े हैं।''

''आर्ष देश के सम्राट?''

''जी, अन्नदाता!''

''तो खड़े क्यों हैं उन्हें अतिथिशाला में ले जाओ।'' फिर अनंगपाल ने थोड़ा रुककर पूछा, ''आर्ष देश में सब ठीक तो है?''

''अन्नदाता, वहाँ कुछ ठीक नहीं है, तख्ता पलट हो गया है, इसीलिए वहाँ के सम्राट् अपनी जान बचाकर आपके श्रीचरणों में स्थान चाहते हैं।''

''श्रीचरणों में स्थान?'' ज्योतिषराज जगन्नाथ अचानक ही बीच में चौंक पड़े, ''एक यवन सम्राट्, जो गौभक्षक हो उसे महाराज के श्रीचरणों में कैसे स्थान दिया जा सकता है? क्यों वे नहीं जानते आर्यावर्त का सम्राट् भगवान विष्णु के समक्ष माना जाता है। और भगवान विष्णु के चरणों में गौभक्षक मलेच्छ...नहीं...नहीं कदाचित् नहीं।''

महाराज अनंगपाल ने ज्योतिषराज की बात सुनकर फिर उनसे पूछा, ''जगन्नाथ इस समय किसी यवन का हमारी शरण में आना किस बात का सूचक हो सकता है?''

''महाराज ढलते सूर्य के वक्त किसी पराजित सम्राट् को शरण देना अच्छा नहीं माना जाता। शास्त्र कहते हैं कि ढलते सूर्य के वक्त

किसी पराजित राजा को शरण देना अपने ऊपर उसकी आपत्तियाँ मोल ले लेना है।''

''अरे भई, कुछ पोथी पतरे देखकर प्रमाण बताओ, क्योंकि सवाल पराजित राजा का नहीं, प्रश्न है आर्यों की शरणरक्षक मर्यादा का।''

''जी, महाराज!'' इतना कहकर जगन्नाथ ने अपनी पोथी के दो-चार पन्ने पलटे, फिर एक कागज पर एक-दूसरे को काटती हुई कई लकीरें खींची और फिर बिना कुछ बताए ही इस तरह खामोश हो गये कि जैसे उन्हें कोई साँप सूँघ गया हो।

जगन्नाथ की खामोशी देखकर आर्यावर्त की भव्य राजधानी इन्द्रप्रस्थ के स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान महाराजा अनंगपाल ने पूछा, ''क्या बात है, ज्योतिषराज? किसी यवन का इस समय हमारी शरण में आना क्या किसी अमंगल का सूचक है?''

''क्षमा करें पृथ्वीपति!'' फिर जगन्नाथ ने सिर झुकाकर कहा, ''किसी यवन को शरण देना ज्योतिष ही नहीं, बल्कि नीति के अनुसार भी अनुचित है। दरवाजे पर बाहर खड़े हुए याचक को शरण देने से आर्य सभ्यता और संस्कृति ही नहीं, बल्कि सृष्टि के आरंभ से आज तक सुसंपन्न आर्यों का चक्रवृत्ति साम्राज्य भी छिन्न-भिन्न हो सकता है।''

''क्या अनर्थ बकते हो ज्योतिषराज!'' महाराजा अनंगपाल की आँखें क्रोध से लाल हो गयी, फिर उन्होंने चिल्लाकर कहा, ''आर्यावर्त की ओर कुदृष्टि करके कौन अभागा बिना मौत मरने की सोचेगा। क्या तुम नहीं जानते, हमारी रगों में किस वंश का खून दौड़ रहा है? जो आर्यावर्त की ओर कुदृष्टि करेगा हम उसकी न केवल आँखें नोच लेंगे, बल्कि वो हश्र करेंगे कि उसकी सात पीढ़ियाँ ब्रह्माण्ड की किसी भी भूमि पर जन्म लेना ही भूल जाएँगी।''

''क्षमा करें महाराज! मेरा मतलब आपको आत्मिक कष्ट पहुँचाना नहीं था।'' फिर थोड़ा रुककर उन्होंने कहा, ''विश्व को ज्योतिष विद्या आर्यावर्त की ही देन है और ज्योतिष के हिसाब से ढलते सूर्य के समय शरण माँगने वाला याचक गोभक है, उसे शरण देना विपत्तियों को मोल

ले लेना है। माना कि आर्य अपनी मर्यादाओं और परंपराओं को निभाने के धनी रहे हैं, लेकिन.....।''

''लेकिन क्या?''

''धर्म मर्यादा से ज्यादा महत्व रखता है।'' फिर जगन्नाथ ने गंभीर होकर कहा, ''और एक गौभक्षक को शरण देना धर्म का हनन करना होगा।''

''क्या तुम नहीं जानते? जो धर्म का हनन करता है, धर्म उसका ही सर्वनाश कर देता है।''

''जानता हूँ महाराज! भलीभाँति जानता हूँ, लेकिन....।''

महाराज अनंगपाल ज्योतिष विद्या में बहुत विश्वास रखते थे, इसलिए उन्होंने पूछा, ''लेकिन, ऐसा कोई तरीका नहीं है, जिससे हम याचक को शरण भी दे दें और अनिष्ट की आशंका भी टल जाएगा।''

''अनिष्ट की आशंका तो शरण देने के बाद ही उत्पन्न होगी, महाराज! जिस बबूल का अभी बीज ही नहीं बोया हो, उसके काँटे तोड़ने के लिए किसी तरीके को खोजना कहाँ तक धर्म सम्मत है।''

सभा में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, तभी द्वारपाल ने पूछा, ''क्षमा करें महाराज! द्वारपाल पर आज रक्षक कम हैं, क्रीत के लिए क्या आज्ञा है?''

''याचक को हमारे सामने उपस्थित करो! राजपूत का पहला धर्म विपत्ति में फँसे हुए प्राणी की रक्षा करना है।''

महाराज के सामने सिर झुकाकर द्वारपाल चला गया और थोड़ी ही देर में शरण माँगने वाला यवन उपस्थित हो गया। आते ही सिर झुकाकर उसने पहले सम्राट् को प्रणाम किया और फिर कुछ कीमती उपहार महाराज के चरणों में रख कर बोला, ''आर्य सम्राट्! मैं फारस अर्थात् आर्ष सम्राट् कुतुबुद्दीन मोहम्मद को ज्येष्ठ पुत्र कयामत खान हूँ। दुष्ट सेनापति मेरे अब्बाजान का तख्ता पलट कर स्वयं साम्राज्य का स्वामी बन बैठा। इतना ही नहीं उस दुष्ट सेनापति ने गजनी के बहराम के साथ मिलकर मेरे अब्बाजान कुतुबुद्दीन मोहम्मद और भाई सैफुद्दीन

को निर्दयतापूर्वक फाँसी पर भी चढ़ा दिया। मुझे भी जिंदा या मुर्दा पकड़ने वाले को एक लाख दिरहम देने की घोषणा की है। मैं किसी तरह अपने प्राण बचाकर अपनी बेगम शाहबानो और पुत्री शबाना बेगम के साथ आपकी शरण में इसलिए आया हूँ कि आर्यावर्त के सम्राट कभी किसी की कोई भी प्रार्थना अस्वीकार नहीं करते।''

''हूँ, यवनों के राज्य में तो तख्ता पलट कोई नयी बात है ही नहीं।'' फिर महाराज अनंगपाल ने कहा, ''राजपूत का पहला धर्म है शरणागत की रक्षा! आप मेरे यहाँ निश्चिंत होकर रहें। जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, कोई आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकता। लेकिन एक बात...।''

''निस्संकोच कहिए पृथ्वीपति! गुलाम आपकी हर आज्ञा का पालन करेगा।'' महाराज की अधूरी बात पूरी करवाने के लिए शरणागत यवन ने सिर झुकाकर कहा।

''यवनराज, मेरी बात को अन्यथा न लेना। ज्योतिष व नीति के अनुसार एक गोभक्षक यवन को आर्यावर्त में शरण देना हमारे लिए अमंगलकारी होकर। इसलिए मैं चाहता हूँ कि यदि आप यवन मत अर्थात् इस्लाम को छोड़कर आर्य धर्म अपना लें, तो इससे आपको शरण भी मिल जाएगी और हमारा अमंगल भी टल जाएगा।''

''क्षमा करें महाराज!'' यवनराज ने प्रतिवाद करते हुए कहा, ''मैं परिवार समेत इस्लाम त्याग कर हिन्दू धर्म तो अपना लूँगा, लेकिन हिन्दू बनने के बाद कोई आर्य युवक मेरी पुत्री से शादी भी नहीं करेगा, बल्कि उसे मुसलमानी कहकर जीवनभर चिढ़ाया जाएगा। हम बच्चों का भविष्य दाँव पर रखकर मजहब तब्दील नहीं कर सकते।''

''लेकिन हिन्दुओं में ऐसा भेदभाव नहीं है। यहाँ तो कर्मों के अनुसार ही वर्ण व्यवस्था निर्धारित होती है।''

''महाराज! क्या आप इतना भी नहीं जानते कि वर्णव्यवस्था तो कब की छिन्न-भिन्न हो चुकी है। हिन्दुओं में जाति प्रथा आज एक सामाजिक बुराई का रूप धारण कर चुकी है। जातिप्रथा के दुष्परिणाम

हम स्वयं भुगत चुके हैं। जहाँ मैं पैदा हुआ उस भूमि का नाम फारस है, लेकिन हमारे बचपन के समय में उसका नाम आर्ष था। अर्धशतक पहले हमारे देश में सभी हिन्दू ही थे, लेकिन शूद्र वर्ण के लोगों की संख्या अधिक थी, ब्राह्मण उन्हें अछूत समझकर प्रताड़ित करते थे। उन्हें न तो वेद पढ़ने का अधिकार था और न ही यज्ञ करने का। शूद्रों ने इसी अपमान की अग्नि में जलते हुए इस्लाम मजहब कबूल कर लिया। ब्राह्मण लोग जाटों को अश्लील शब्दों से अपमानित करते थे, इस कारण क्षत्रिय जाटों ने भी शूद्रों की तरह इस्लाम कबूल कर लिया और फिर अपने दुश्मन ब्राह्मणों को या तो मौत के घाट उतार दिया या फिर कलमा पढ़ाया, दुग्ध की जगह गोरक्त पिला उन्हें मुसलमान बना लिया। हम भी जाटवंशी हैं और जाटवंशी होने पर हमें गर्व है, लेकिन कभी हमारे पूर्वज जातिप्रथा मानने वाले हिन्दू थे, ऐसा विचारने पर शर्म आती है। चमार-भंगी आदि तो हिन्दू धर्म के ही अभिन्न अंग हैं, लेकिन उच्च वर्ण के हिन्दू उनसे अत्यंत घृणा करते हैं, जबकि वेदों में कठिन परिश्रम करने वाले को शूद्र कहा गया है, लेकिन आजकल ये लोग इन्हें परिश्रमी न मानकर अछूत मानते हैं और घृणा करते हैं। हम तो यवन हैं, गोभक्षक हैं, इसलिए हमसे तो इनसे भी ज्यादा घृणा करते हैं। शूद्रों से ज्यादा निकृष्ट ही नहीं बल्कि हमें तो ये म्लेच्छ कहकर पुकारते हैं। इन सब बातों को देखते हुए हिन्दू धर्म अपनाकर हमें क्या गौरव हासिल होगा?''

''यवनराज! आपको कोई भ्रम हो गया है। हिन्दू तो बहुत ही मिलनसार होते हैं। अनेक जातियाँ भारत में आयी और यहीं की होकर रह गयी। आप निश्चिंत होकर रहिए आपको तो नौ सम्राटों कितना सम्मान मिलेगा।''

''कैसे?'' फिर उन्होंने और उत्सुक होकर पूछा, ''क्या यह संभव है पृथ्वीपति?''

''क्यों नहीं? यदि आप परिवार समेत हिन्दू बनने के बाद अपनी पुत्री की शादी मेरे साथ करने पर सहमति जता देंगे तो?''

''लेकिन...?''

''बोलो, क्या शंका है यवनराज?''

''मान लिया मैंने अपनी पुत्री का निकाह आपके साथ कर दिया, लेकिन ज्येष्ठ महारानी के पुत्र मेरी बेटी की संतानों को संभवतः मार डालेंगे?''

''पहले तो ऐसा यवनराज्य में होता है आर्य राज्य में नहीं, यह बात पल्ले में बांध लें यवनराज! उसके बाद सही बात यह है कि महारानी पुत्र सुख से वंचित हैं। इसलिए वही बहुत दिन से मुझे दूसरा विवाह करने के लिए प्रेरित कर रही हैं, ताकि राजवंश की बेल आगे बढ़ सके।''

''इसका मतलब यह हुआ कि यदि मेरी पुत्री आपकी महारानी बनती हैं तो इनसे जो पुत्र उत्पन्न होगा वही आर्यावर्त का भावी सम्राट होगा?''

''हाँ, बेशक! इसमें कोई शंका करने की जरूरत है ही नहीं।''

''हमारे पूर्वजों द्वारा जिस इस्लाम को अपनाने से हमें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ीं, उस इस्लाम में रहकर फायदा ही क्या? इस्लाम तो गरीबों का धर्म है, इसमें ईमान और भाईचारे का बड़ा गुणगान किया जाता है, लेकिन दूसरे मजहबियों को काफिर कहा जाता है, इंसान नहीं। इस्लाम कहता है मुसलमान बनो, बाइबल कहती है ईसाई बनो, लेकिन वेद कहते हैं मनुर्भव अर्थात मनुष्य बनों। सम्राट् मुझे मनुष्य बनकर अपार हर्ष की अनुभूति होगी, इसलिए चलिए कहाँ पर मुंडन कराकर किस यज्ञवेदी पर यज्ञोपवीत धारण करना है?''

''आप राजवंश से हैं, आपका शुद्धि संस्कार तो भव्य तरीके से किया जाएगा, वेदों को अपनाने के लिए इतनी लालसा क्यों?''

''सम्राट् वेद तो हैं ही अमृत की खान, मुझे वेदों की शरण दे दो और मेरी पुत्री का हाथ थामकर मुझे और मेरे कुल को धन्य कर दो।''

''आप यवन होकर वेदों के बारे में भी जानते हैं?''

''जी हाँ! दरअसल वेदों के बहुत से मंत्रों का भावार्थ कुरान से

साम्य रखता है और कुरान के अनुसार इस दुनिया में ईश्वर ने पहले भी अपनी किताब भेजी है। हमारा विश्वास है कि वेद वे ग्रंथ हैं, जो खुदा ने सृष्टि के आरंभ में भेजे और उन्हें बाबा आदम ने प्रचारित किया।''

''अरे भई बाबा आदम का वेदों से क्या संबंध? बाबा आदम तो कुरान और बाइबिल में ही वर्णित हैं। आपके ही पूजनीय हैं, हमारे तो मनु आदि हैं।''

''देखो सम्राट्! बाइबिल और कुरान में कहा गया है कि खुदा ने आदम को पैदा करके उसकी बायीं पसली से हव्वा को बनाया। आदम को खुदा से स्वर्ग के बगीचे की देखभाल करने का निर्देश मिला। बगीचे में ज्ञान और अमरत्व के दो वृक्ष थे, जिनका फल खाने के लिए खुदा ने आदम व हव्वा को मना किया हुआ था, क्योंकि परमात्मा को डर था कि इन वृक्षों का फल खाकर कहीं ये मेरी तरह ज्ञानी न हो जाएँ। उसी बाग में परमात्मा का शत्रु साँप रहता था, उसने हव्वा को वर्जित फल खाने को प्रेरित किया। आदम और हव्वा ने वह फल खा लिया, जिसके दंडस्वरूप उन्हें जमीन पर परिश्रम करने के लिए आना पड़ा तथा साँप के हाथ-पैर काटकर उसे जमीन पर पेट के बल चलने का शाप दिया गया। यही कथा हमारे यहाँ के कुछ पंडित वेदों में भी बताते हैं। उनका कहना है कि इन्द्र ने सोमरस का पान किया और उसने व्रज से प्रथम सर्प को मार डाला। सोम बुद्धि को उत्पन्न करने वाला ज्ञान वृक्ष था, जिसे इन्द्र अपने लिए सुरक्षित रखना चाहता था, लेकिन सर्प ऐसा नहीं होने की इच्छा रखता था। इसलिए इन्द्र व सर्प में झगड़ा हुआ और इन्द्र ने मायावी और छली अहि को काट डाला। तत्पश्चात बिना हाथ-पैर वाला साँप पृथ्वी पर आकर सोया।''

''अरे हाँ, यह प्रसंग तो ऋग्वेद में हमने भी पढ़ा है, लेकिन एक प्रसंग के कुछ अंग मिलने से यह साबित नहीं हो जाता कि इस्लाम और वेद धर्म में कुछ साम्य है और दोनों धर्म के मानने वालों के पूर्वज एक ही हैं।''

''आपके महाभारत आदि ग्रंथों में क्या मनु और जलप्रलय का

वर्णन नहीं है, शतपथ में तो विस्तृत वर्णन है।''

''आप यवन होकर आर्य धर्म को इतना करीब से कैसे जानते हैं? और मनु का इस्लाम से क्या संबंध?''

''दरअसल मेरा गुरु एक हिन्दू ब्राह्मण था, जिसे जबर्दस्ती मुसलमान बना दिया गया था, उसी से मैंने आर्ष ग्रंथों का अध्ययन किया है। और मनु तथा जलप्रलय का वर्णन जिस प्रकार आर्ष ग्रंथों में है उसी प्रकार कुरान और बाइबल में भी है। कहानी वही है। वहाँ भाषा परिवर्तन होने से मनु को बस नूह लिख दिया गया।''

''ओह! आप जैसे विद्वान को हिन्दू बनाकर हमें अपार आनंद की अनुभूति होगी। देश के चुनिंदा विद्वानों को शीघ्र ही आमंत्रित करूँगा। आप जब तक अतिथि गृह में विश्राम करें।''

''जो आज्ञा सम्राट्!''

उसी दिन शाम की बात है, महाराज उद्यान में ठहल रहे थे कि शबाना बेगम भी वहीं हिरणों के संग खेल का आनंद ले रही थी, जैसे ही महाराज उसकी ओर आए तो उन्होंने झुककर सलाम किया, ''ईशालयम् बालकम्!''

''बालकम् ईशालयम्,'' फिर महाराज अनंगपाल ने पूछा, ''आपको हमारा देश कैसा लगा शहजादी!''

''गर फिरदौस बर रू-ए-जमीं अस्त
हमीं अस्तो हमीं अस्तो हमीं अस्त।''

''हाँ धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो यह भारत की पवित्र भूमि ही है, तुमने ठीक कहा,'' फिर उन्होंने आगे कहा, ''और हमारे बारे में आपके क्या विचार हैं?''

''अब्बा जान ने हमें बताया, हमें कबूल है।''

''यानी कि तुम हमसे...।''

''हाँ मेरे शहंशाह, हम तो तुमसे उस समय से मुहब्बत करते हैं, जब हमने भारत की पावन धरती पर कदम भी नहीं रखा था।''

''हम कुछ नहीं समझे शहजादी, ऐसा कैसे हो सकता है।''

''दिल्ली के शहंशाह की वीरता के तो हमने बहुत ही किस्से सुने हैं, यहाँ की मधुर वेद वाणी, यहाँ की संपदा, यहाँ के मंदिर और तीर्थ स्थल...इन सबके बारे में हम बहुत पहले ही सुन चुकी हैं, हमारी तो बचपन से ही ख्वाहिश मलिका ए हिन्दुस्तान बनने की थी।''

''आपने तो हमारी हृदय की बात कह दी शहजादी, हम तुम्हें हिन्दुस्तान की महारानी का खिताब ही नहीं इस देश की राजमाता बनने का गौरव भी प्रदान करेंगे।''

दोनों एक दूसरे के निकट आ गए थे।

''इतनी खुशियाँ पाकर कहीं मैं मर न जाऊँ!''

''मरेंगे तो अब तुम्हारे दुश्मन।'' महाराज ने उसके होंठों पर हाथ रख दिया था।

उसी रात महाराजा ने अपने मंत्रियों की बैठक में स्पष्ट कर दिया कि वे शबाना बेगम से शादी कर रहे हैं, तो सब खुशी के मारे उछल पड़े थे। तूफान की तरह यह बात अगले ही दिन सारी इंद्रप्रस्थ नगरी में फैल गई थी।

''क्या कहा? हमारे महाराज दूसरी शादी कर रहे हैं। अरे यह तो बहुत ही हर्ष की बात है। महराज अनंगपाल की दो पुत्रियाँ ही तो हैं, अब दूसरी शादी होने से उन्हें पुत्र मिल जाएगा और हमें युवराज।'' फिर उस हलवाई ने ग्राहक से वार्तालाप छोड़कर अपने नौकर से कहा, ''अरे ओ कलुवा! दुकान में जितनी भी मिठाइयाँ हैं, सब लोगों में बाँट दो और इस भइया से भी कुछ नहीं लेना। इन्होंने जो मिठाइयाँ तुलवायी हैं, वह सब प्रसाद देना ही समझना। इन्होंने तो ऐसा शुभ समाचार सुनाया है कि इससे तो पूरे देश में हर्ष की लहर दौड़ जाएगी।''

''हाँ सेठ जी, देश में तो हर्ष की लहर दौड़ चुकी है। जन समुदाय के हृदयों में आशा की नयी किरण फूट चुकी है कि भावी महारानी निश्चय ही उत्तराधिकारी को जन्म देंगी।'' ग्राहक ने कहा।

''भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं भइया। हमारे सम्राट् कितने दयालु और अच्छे इंसान हैं यह तो सारी दुनिया जानती है। ऐसे भले

सम्राट् को ईश्वर ने अब तक पुत्र सुख से क्यों वंचित रखा यह हमारी समझ से परे था। लेकिन अब आ गया समझ में। ईश्वर ने इस गौरवशाली देश पर अपनी कृपा करके हम सबको धन्य कर दिया है।''

और इस प्रकार सारे आर्यावर्त में देखते ही खुशी की लहर दौड़ गयी। यवनराज का परिवार शुद्ध होकर हिन्दू बन गया। शुद्धिकृत यवन राजकुमारी का शबाना के स्थान पर नया नाम सुमन देवी रखा गया। शुद्धि संस्कार देशभर में एक पर्व के रूप में मनाया गया। महाराजा ने इस दिन गरीब लोगों को काफी धन दान-मान में दिया। गरीब देशों से आए भिखारी अपने देशों में इतना धन दान में लेकर गये कि वे वहाँ पर अपने-अपने राजाओं से भी ज्यादा धनवान बन गये। महाराजा अनंगपाल ने भारत देश में पहली युवती शरणार्थी सुमन देवी के साथ वैदिक पद्धति से विवाह रचाया और हँसी-खुशी रहने लगे।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. वंशचरितावली, महाराजा कृष्णदेवराय, संस्करण 1867
2. पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता, तेजपाल सिंह धामा, हिन्दी साहित्य सदन, करोल बाग, नई दिल्ली, संस्करण 2003
3. बेताज बादशाह, जयप्रकाश शर्मा, सागर प्रकाशन, संस्करण 2015

सिमरन के श्याम सखा

जिस व्यक्ति को भारत का सम्राट बनना था, वह युवक समेराम महायोगी बनने के पथ पर बढ़ चला था, लेकिन दूसरी ओर भारत के अपहरणकर्ता एक के बाद एक बदलते जा रहे थे। इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन पर लुटेरा मुहम्मद बिन तुगलक बैठ चुका था और उसने अपनी सेना के साथ जहाँ-जहाँ भी कूच किया, आतंक और अत्याचार उनके दाएँ और बाएँ ही रहे। नारियों को मसला-कुचला, गायों को काटा खाया, घरों को लूटा जलाया, लोगों को सताया मारा, बच्चों का हरण-वरण हुआ, लूटे मंदिर मस्जिद बने तथा सारे क्षेत्र को तलवार और मशाल से काटकर-जलाकर श्मशान-सा सुनसान कर दिया। फिर वे शान से आगे बढ़ गए, लेकिन उन दिनों भारत में एक राजा ऐसा भी था, जो अपनी शक्ति निरंतर बढ़ाता जा रहा था।

तुगलक ने दीपालपुर के राजा की बेटी मिनाक्षी का अपहरण किया और उसके साथ जबर्दस्ती निकाह पढ़ा। उसकी इच्छा के विरूद्ध उसे मुस्लमानी बनाया गया, जबकि वह शुद्ध शाकाहारी आर्य कन्या थी। मिनाक्षी से पहली संतान लड़की पैदा हुई, जिसका नाम सिमरन रखा गया। सिमरन बड़ी हुई तो उसे आखेट का बड़ा शौक था। वह कुछ अंगरक्षकों के साथ जंगल में जाया करती थी, एक दिन उसने जंगल में योग साधना करते हुए युवक समेराम को देखा तो उसे देखती ही रह गई और उससे परिणय निवेदन किया, ''हमें तुम बहुत अच्छे लगे।''

''देवी हरेक भारतीय ही अच्छा है, लेकिन कुछ विदेशी आक्रांताओं ने ही आर्य जाति को मिश्रित जाति बना दिया है, जिसमें कुछ दोष आ गए हैं।''

''हम शास्त्रों की बातें नहीं जानते, हम तो इतना जानते हैं कि आपका वरण करना चाहते हैं।''

''वह किसलिए देवी!''

''वह इसलिए कि हम तुमसे निकाह पढ़कर आपसे आप जैसा ही एक सुंदर पुत्र चाहते हैं।''

''बस इतनी सी बात माता,'' समेराम ने गंभीरता से कहा, ''तुम हमें ही अपना पुत्र समझ लो, इससे दोनों की समस्या का समाधान हो जाएगा, हमें माताश्री मिल जाएँगी और आपको योग्य पुत्र।''

''मूर्ख कहीं का, खाल खिंचवाकर उसमें भूसा भरवाकर उससे नहीं खेली तो मेरा भी नाम सिमरन नहीं।''

समय अपनी गति के साथ बढ़ता जाता है। मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में 34 विद्रोह हुए, जिनमें से 27 विद्रोह अकेले दक्षिण भारत में ही हुए। इसी दौरान समेराम साधना के पथ पर बढ़ते हुए एक महान योगी बन चुके थे। देशभर में उनके अनेक शिष्य थे। चित्तौड़ के राणा हम्मीर भी उनके शिष्यों में से एक थे।

कई साल बाद की बात है। उस दिन समेराम एकांत में बैठे हुए चिंतन कर रहे थे कि उन्हें खोजती हुई सिमरन उनके पास पहुँची। परन्तु उन्हें देखते ही उसके मन में वासना भड़क उठी और शिष्या बनने के स्थान पर उससे कामना पूर्ति की इच्छा ही जाग्रत हो उठी, ''प्रभु इस दासी को भी चरणों में स्थान दे दो।''

''माते! यह संभव नहीं।''

''मुझे माता कहकर मेरे प्रेम का अपमान मत करो प्रभु।''

''मैं एक संन्यासी हूँ देवी और संन्यासी के लिए हर नारी माता के समान ही होती है।''

''तो क्या संन्यासी और ऋषि-महात्मा परिणय बंधन में नहीं बंधते।''

''परिणय बंधन में बंधते तो फिर त्याग का मार्ग ही क्यों अपनाते?''

''नहीं मुझे बहकाओ मत...भारतीय धर्म ग्रंथों में जितने भी ऋषियों का उल्लेख है वे सभी विवाहित थे और उन्होंने संतानें उत्पन्न करके प्रकृति का पालन किया है।''

''ऋषि और संत में अंतर होता है देवी और फिर अब मेरे शरीर पर मेरा अधिकार नहीं है मेरे गुरुदेव का है।''

''तो क्या गुरुदेव मुझे अपनाने के लिए तुम्हें आज्ञा नहीं दे सकते।''

''ऐसा करना संन्यस्त धर्म के विरुद्ध होगा।''

''तो तुम मेरे अब कभी नहीं हो सकते प्रभु? मेरे मन की अभिलाषा क्या यूँ ही अधूरी रह जाएगी...मेरी मांग यूँ ही सिंदूर के बिना कलंकित रहेगी...बोलो नाथ बोलो...कुछ तो उत्तर दो मेरे प्रश्नों का... तुम्हारे प्रेम में मैं काफिर हो गई।''

''मैं क्या उत्तर दूँ...इसका उत्तर तो संभवतः स्वयं मेरे गुरु के पास भी नहीं होगा!''

''आपके गुरु को तो लोग भगवान कहते हैं न...फिर उनके पास मेरे प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं होगा...क्यों नहीं होगा मेरे प्रश्नों का उत्तर ...तुम उनसे पूछो नाथ...तुम्हें.. तुम्हें मेरे प्रेम की सौगंध।''

''सौगंध मत दिलाओ सिमरन...मैं गुरुदेव से प्रार्थना करूँगा कि तुम्हें सन्मार्ग दिखाएँ, ताकि तुम्हारी आत्मा तृप्त हो।''

''आत्मा तृप्त...तुम्हारे हृदय के मिलन बिना मेरी आत्मा भला तृप्त कैसे होगी नाथ?''

समेनाथ चल दिया था और सिमरन उसे रोकने का प्रयास करने लगी थी, ''देव...मेरे हृदय सम्राट...मेरे प्रेमी...इस अभागन को यूँ की तड़पाकर किसके सहारे छोड़ चले...मुझे भी साथ ले चलो नाथ...भार्या नहीं बना सकते शिष्या तो बना सकते हैं ना, दीक्षा तो दे सकते हैं ना।''

वह कुछ भी कहती, परंतु इस समय उसका प्रयास कहाँ सफल होने वाला था?

समेराम ने सिमरन के दीक्षा के निमंत्रण को विचारार्थ समाधि अवस्था में शून्य में जाकर अपने गुरु की दिव्यात्मा के समक्ष रखा, ''प्रभु सिमरन चाहती हैं कि मैं उन्हें कुछ उपदेश करूँ? दीक्षा दूँ।''

''तुम्हारा जीवन वट वृक्ष की उस सूखी पत्ती की तरह है समेराम, जो तूफ़ान में उड़ रही है...और सिमरन का जीवन जंगल की दावानल की तरह...''

''मैं जानता हूँ प्रभु! लेकिन मूक जंगली प्राणियों की रक्षा के लिए जंगल की दावानल को भी तो बुझाना आवश्यक है।''

''होता है, लेकिन क्या तुम सिमरन को दीक्षा देकर उन्हें अपनी शिष्या बनाकर और अपने पास ही रहकर संन्यास धर्म पर अड़िग रह सकोगे!''

''प्रभु आपका आशीर्वाद हो तो भला किसे सन्मार्ग न मिलेगा?''

''ठीक है जो लोग पथ भटक गये हैं, उन्हें रास्ता दिखाना आवश्यक है...लेकिन...''

''लेकिन क्या प्रभु?''

''दुनिया में सबसे अधिक शत्रु पथ प्रदर्शकों के ही होते हैं।''

''प्रभु! यह तो मेरा सौभाग्य रहेगा कि निंदक पास रहेंगे तो दुर्गुण मेरी आत्मा का स्पर्श तक न कर सकेंगे।''

''लेकिन शत्रु या निंदक तुम्हारी पिटाई भी कर सकते हैं।''

''मेरा अहोभाग्य वे मुझे घाव तो नहीं देंगे।''

''वे लोग तुम्हें घाव भी दे सकते हैं।''

''चलो अच्छा ही होगा...वे लोग मेरे प्राण तो नहीं लेंगे।''

''वे लोग तुम्हारे प्राण भी ले सकते हैं।''

''धन्य होंगे वे लोग...जो मेरी हत्या करके मुझे इस जन्म से मुक्ति दिलाने का उपकार करेंगे।''

''जाओ समेराम...जाओ...सिमरन का उद्धार कर दो और दीक्षा देकर नारी और मनुष्य के बीच समानता का बीज वपन करो...तुम उसे सन्मार्ग दिखाने के योग्य हो।''

गुरु की दिव्य आत्मा ने देखा कि समेराम अपने संन्यस्त धर्म से डिगने वाला नहीं है, वह शुद्ध सात्विक संन्यासी बन चुका है, तो उन्होंने उसे सिमरन को दीक्षा देने की अनुमति दे दी।

गुरुदेव ने तो सिमरन को दीक्षा की अनुमति दे दी थी, लेकिन तत्कालीन समाज महिलाओं को पर्दे की वस्तु ही समझता था। उन्हें दीक्षा देकर मोक्ष का भागी बनने के लिए पुरुष प्रधान समाज उन्हें अधिकारिणी नहीं समझता था। इसलिए समेनाथ के मन में भी एक ज्वार सा उठा हुआ था। वह अपने ही अनगिनत प्रश्नों के झंझावतों से टकरा रहे थे। और इसी उधेड़बुन में उस ओर चल दिए थे जिधर सिमरन दासी जैसा जीवन व्यतीत कर रही थी। सिमरन की कुटिया के बाहर आकर खड़े हुए तो वह उनकी ओर दौड़ पड़ी, ''मुझे विश्वास था नाथ...विश्वास...कि तुम आओगे...मेरे पास अवश्य आओगे। तुम्हें तो आना ही था...'' रोते...रोते आँसुओं ने सारे मुँह को ढक लिया था।

''देवी! तुम्हारे पास न आता तो भला किसके पास जाता.. लेकिन?''

''लेकिन क्या?'' उसके सीने से लिपटने का प्रयास करने लगी थी सिमरन, लेकिन समेराम ने अपने हाथ से उसे अलग ही रहने का संकेत किया।

''मेरी एक शर्त है।''

''कितने दिनों बाद आए और अब फिर बीच में सौतन शर्त को घसीट लाए, क्या शर्त है?''

''देवी! मैं आपके पास मात्र एक माह रहूँगा।''

''बस एक माह...सदा के लिए नहीं।''

''सदा तो यह शरीर भी साथ नहीं रहता देवी।''

''मगर तुम तो रहोगे ना...!''

''यदि एक महीने में तुमने मुझे अपने वश में कर लिया, तो मैं संन्यास धर्म त्यागकर तुमसे विवाह कर लूँगा, अन्यथा...''

''क्या अब भी मुझे तुम्हें अपने वश में करना होगा...और यदि नहीं

किया तो...अन्यथा...अन्यथा का अर्थ क्या होता है नाथ...?''

''तुम्हें मेरे पथ का अनुसरण करना होगा।''

''तुम्हारे पथ का अनुसरण नाथ! तुम्हारी तो मैं परछायी हूँ नाथ परछायी...समझते हो ना परछायी किसे कहते हैं।''

''हाँ समझता हूँ...लेकिन परछायी वास्तविकता नहीं होती, आकृति का भ्रम मात्र होती है।''

''भ्रम मात्र, मैं कुछ नहीं जानती नाथ...बस इतना जानती हूँ तुम्हें अपना मानती हूँ, अब नहीं खोना चाहती ... '' रोते हुए उसकी छाती से चिपट गई थी सिमरन, समेनाथ अवाक् पर पत्थर की मूर्ति सा बन गया था।

कुछ दिनों बाद की बात है। उस दिन सिमरन की कुटिया के एकांत में समेराम समाधिस्थ बैठे थे। सिमरन उनकी ओर आई, उन्हें देखकर हँसी और फिर...नृत्य करने लगी।

नृत्य के बाद हर्ष की आँखें खुली तो सिमरन प्रसन्न हो उठी, कि उन्होंने समेनाथ की समाधि और तपस्या भंग कर दी कि अब वे आकर उसे अपनी बाँहों में समेट लेंगे, लेकिन वह उठकर भगवान शिव की प्रतिमा के पास जाकर पूजा अर्चना करने लगे थे, सिमरन की ओर देखकर समेनाथ ने कहा, ''आओ देवी, थोड़ी पूजा भी कर लें।''

''किसकी पूजा... कैसी पूजा नाथ...प्रेयसी का आराध्य तो केवल उसका प्रेमी ही होता है, तुम्हारे सिवाय मैं भला और किसकी पूजा कर सकती हूँ।''

''भोलेनाथ की देवी...भोलेनाथ की...जो नाथों का भी नाथ है, क्या तुम उसकी पूजा नहीं करोगी?''

''नाथ!''

''मुझे नाथ मत कहो देवी! शिव के सिवाय और कोई दूसरा नाथ नहीं।''

''तो फिर क्या कहूँ...अब नाम भी तो नहीं ले सकती!''

''बाबा!''

''बाबा...क्या अभी भी तुम बाबा ही हो, चोला नहीं त्यागोगे..''

''क्यों मैं संन्यासी नहीं हूँ क्या? मैंने अपना धर्म त्यागा ही कहाँ है?''

''और मैंने आपको पाने के लिए इस्लाम जो त्याग दिया?''

''देवी! जितना प्रयास तुम मुझे रिझाने के लिए कर रही हो, यदि इतना प्रयास तुम वेदों का अध्ययन करने के लिए करती तो निश्चित रूप में तुम्हारा अब तक उद्धार हो गया होता...तुम हो तो हीरा लेकिन कीचड़ में फँसी हो।''

यह वाणी उसके हृदय में कई बार इस तरह गूँजी, जिस तरह पर्वतों में आवाज गूँजती है।

सिमरन पागलों की तरह भगवान शिव की प्रतिमा को निहारने लगी।

''अच्छा देवी, मैं चलता हूँ...आज एक महीना पूरा हो गया ...भोले शंकर तुम्हारा कल्याण करें!''

सिमरन भगवान शिव की प्रतिमा को ही देखती रही...जब समेनाथ जाने लगे...तब दौड़कर उसके पास आई, ''मुझे भी साथ ले चलो मेरे प्रभु...मैं भी संन्यासिन बनना चाहती हूँ...मैं भी साध्वी बनना चाहती हूँ ...मैं भी मोक्ष पाना चाहती हूँ।''

''अभी वह समय नहीं आया देवी...'' उसे रोकता हुआ समेनाथ बाहर निकल गया और सिमरन चौखट पर रोते हुए पागलों की भाँति उसे देखती ही रही।

समय फिर अपनी गति के साथ आगे बढ़ता चला। कुछ दिनों बाद महात्मा समेनाथ उपदेश दे रहे थे। सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित सहसा भीड़ चीरती हुई सिमरन आगे बढ़ती गई। वह महात्मा समेनाथ के मंच पर जा पहुँची। समेनाथ ने उपदेश देना छोड़कर उसके लिए आशीष का हाथ उठाया, ''आओ देवी...कहो क्या बात है?''

सिमरन ने दण्डवत्-सी की अवस्था में कहा, ''भगवन्...जब आपकी शरण में आ ही गयी, तो फिर कहने को कुछ शेष भी रहता

है...यह तो मुझे पता ही नहीं?''

''हाँ...देवी...ठीक कहती हो जो धर्म के मार्ग पर चल पड़ता है, उसके लिए फिर कुछ शेष बचता ही नहीं।''

''प्रभु! इसीलिए तो मैं अपना सर्वस्व समर्पण करके आपकी चरणरज में स्थान पाना चाहती हूँ।''

''अर्थात्...''

''मैं संन्यास धर्म की दीक्षा लेना चाहती हूँ भगवन्।''

''देवी यह तो अच्छी बात है, लेकिन धर्म की दीक्षा लेने के लिए सर्वस्व त्याग की क्या आवश्यकता है? सर्वस्व त्याग दोगी तो फिर आजीविका कैसे चलाओगी?''

''भगवन् क्या संन्यासी भी आजीविका चलाने के लिए कुछ संग्रह करते हैं।''

''मैं संन्यासियों की बात नहीं कर रहा शम्मो?''

''परंतु मैं तो कर रही हूँ ना भगवन्...मैं आपकी मण्डली में शामिल होकर साधिका का जीवनयापन करना चाहती हूँ।''

''साधिका...तुम साधिका बनना चाहती हो देवी...लेकिन?''

''लेकिन इसमें बाधा क्या है प्रभु?''

''हमारी मण्डली में किसी भी महिला का प्रवेश तो वर्जित है।''

''लेकिन क्यों? धर्म मण्डली में महिलाओं का प्रवेश वर्जित क्यों है मेरे प्रभु?''

''देवी, यह नियम तो सृष्टि के आदिकाल से चला आ रहा है।''

''प्रभु...जब सृष्टि के आदिकाल के नियम को आप भी मान्यता देते हैं...तो फिर योग-साधना और वेद प्रचार का बीड़ा क्यों? समतामूलक समाज के निर्माण की घोषणा क्यों? स्त्री-पुरुषों के समान अधिकार देने के लंबे-लंबे प्रवचन क्यों?...यह सब क्यों प्रभु क्यों?''

''माता तुम नहीं जानती कि धर्मोपदेशकों को किन-किन कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है...इसीलिए मण्डली में स्त्रियों का प्रवेश...''

''वर्जित है। मैं समझ गयी प्रभु...तुम भी उन्हीं में से हो?''

''किनमें से देवी?''

''धर्म की पुनःस्थापना के लिए आज तक जितने भी अवतार हुए हैं, सब पुरुष ही तो हैं प्रभु...परंतु अवतारवाद की यह व्यवस्था भगवान की नहीं हो सकती...यह तुम जैसे लोगों ने ही घड़ी है। पुरुष अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए अवतार भी बन सकते हैं और संन्यासी भी और स्त्री... स्त्री केवल सेवा करने वाली दासी और कुछ नहीं बन सकती.. क्यों प्रभु क्यों?''

''नहीं देवी...स्त्री दासी नहीं.. स्त्री तो माता है...जिस तरह धरती माता सबको सहन करती हुई सबका कल्याण करती है, इसी तरह स्त्री भी सब कष्ट सहकर सबको सुखी बनाती है।''

''हाँ, प्रभु...स्त्री सबको सुखी ही तो बनाती है...विवाह से पूर्व माता-पिता की सेवा करती है कन्या...विवाह के बाद फिर पति की सेवा...बच्चों का पालन-पोषण...सास-ससुर की सेवा...सेविका के अलावा स्त्री को और पदवी भला यह निष्ठुर समाज दे भी क्या सकता है प्रभु ...बोलो प्रभु बोलो...''

''अपने आपको संभालो देवी!''

''अपने आपको ही तो संभालने चली थी प्रभु...पर तुम्हारा समाज संभलने दे तब ना...धर्म संघ में जाती तो संभल जाती...फिर...'' रोते-रोते रुक गई थी।

''कहो देवी...सच क्या है?''

''प्रभु! आप नारी को पुरुषों के समान अधिकार की बातें करते हो...लेकिन धर्म मण्डली में पुरुषों का वर्चस्व बनाया रखना भी चाहते हो...इसलिए स्त्री को अपनी धर्म मण्डली में प्रवेश नहीं देना चाहते... कहते हो संन्यासी कल्याण मार्ग का पथिक होता है...यदि कोई पुरुष कल्याण मार्ग का पथिक हो सकता है...वेद उपदेशक हो सकता है... तो फिर स्त्री क्यों नहीं ...प्रभु स्त्री क्यों नहीं...बोलो प्रभु बोलो...मेरे प्रश्नों का उत्तर दो...''

''देवी! तुमने जो कहा सब सही है,'' समेनाथ ने कहा, ''लेकिन

साधिका बनने पर नारी को क्या-क्या कष्ट सहने पड़ सकते हैं, तुम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती!''

''प्रभु आदेश करके तो देखा होता, यह जीवन तुम्हारे चरणों में समर्पण कर दिया होता ...''

''...तुम पाँच गाँवों से भिक्षा ले आओ तो हम तुम्हें दीक्षा देने के लिए तैयार हैं, देवी।''

''दीक्षा से पहले भिक्षा यानी कि परीक्षा...यहाँ भी परीक्षा...कभी सीता की परीक्षा तो कभी सावित्री की...आखिर स्त्री इस चक्षुहीन समाज को कब तक परीक्षा देती रहेगी प्रभु कब तक!'' फिर गंभीर होकर बोली, ''यदि इस समाज को एक और स्त्री की परीक्षा चाहिए तो ठीक है प्रभु...मैं भिक्षा अवश्य लाऊँगी।''

वह भिक्षा के लिए चल पड़ी थी। पहले ही घर में सिमरन ने भिक्षा के लिए आवाज लगाई थी, ''भिक्षां देहि माई।'' परन्तु उस घर में कोई माई या माता नहीं थी। वहाँ तो शराबियों का अड्डा था। एक कक्ष में कई आदमी...शराब पी रहे थे। दरवाजा बिना कुंडी के बंद था।

''सुन,'' एक शराबी ने दूसरे से कहा, ''तू तो विवाह के लिए लड़की देखने गया था ना यार...फिर क्या हुआ?''

''नहीं चलेगी...लड़की दुबली-पतली कमजोर है, बिल्कुल लोमड़ी जैसी...मुझे तो शेरनी जैसी चाहिए...एकदम शेरनी।''

''यार तू भी...अरे उससे विवाह कर ले...फिर देखना शेरनी तो वह सुहागरात में ही बन जाएगी।''

तभी बाहर से भिक्षां देहि की आवाज सुनाई पड़ी थी, उन पियक्कड़ों को।

''लगता है सचमुच शेरनी आ गयी है।'' एक शराबी ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा, ''द्वार खुला है अंदर आ जाओ।''

द्वार खुला और सिमरन ने अंदर प्रवेश किया, ''भिक्षां देहि।''

''भिक्षा भी देंगे...पहले बोलो कि तुम लोमड़ी हो या शेरनी?'' एक शराबी ने पूछा।

''शेरनी।'' सिमरन का उत्तर था।

''लोमड़ी को शेरनी तो बनने का मंत्र हमें बता दिया, अब इस शेरनी को लोमड़ी बनाओ तो जानें।'' दूसरे शराबी ने पहले शराबी से कहा।

''आओ मेरी जान...'' एक शराबी उठकर सिमरन को पकड़ने की चेष्टा करने लगा।

कुछ ही समय बाद की बात है। संत समेराम प्रवचन दे रहे थे। फटे हुए कपड़ों में सिमरन आ पहुँची थी और महात्मा समेसिंह के मंच पर जा चढ़ी। उनके चरणों में रोते-बिलखते हुए गिर पड़ी, ''मैं परीक्षा में अनुतीर्ण हो गयी प्रभु अनुतीर्ण...मुझे अपनी शरण में ले लो प्रभु शरण में...इस दानवी दुनिया में और कष्ट सहने के लिए मुझे अकेला मत छोड़ो प्रभु...नहीं तो भूखे भेड़िया...''

महात्मा समेराम ने उसके फटे कपड़ों को देखा तो उनकी आँखों में भी आँसू आ गए, ''उठो देवी...उठो हम तुम्हें दीक्षा अवश्य देंगे।''

सिमरन प्रसन्नता से उठ गई थी...चेहरे से अपने आँसू पोंछती हुई बोली, ''...सच प्रभु!''

''हाँ देवी...हम एक दिन स्वयं तुम्हारी कुटिया में तुम्हें न केवल दीक्षा देंगे, वरन् सेवा का अवसर भी देंगे, जी भरकर सेवा कर लेना हमारी भी...''

''और आज प्रभु, आज भी तो कुछ सेवा का अवसर देने की कृपा करें।''

''नहीं आज हम आदेश देंगे, तुम अपनी कुटिया में जाओ और साधना करो। हम तुम्हें आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हारी साधना फलीभूत हो और तुम्हारी कुटिया के पास जो तालाब है, आज के बाद जो भी रोगी उस तालाब का जल आस्था के साथ ग्रहण करेगा वह रोगों से मुक्ति पाएगा और आप ऐसे दीन-दुखियों का अतिथि सत्कार करना।''

''मैं धन्य हो गई प्रभु धन्य।'' समेनाथ को प्रणाम कर सिमरन चल पड़ी थी। सिमरन की कुटिया के पास एक तालाब था। गुरुदेव

समेनाथ के प्रयास से इसके किनारे हैड, बहैडा और आँवला आदि औषधियों के वृक्ष लगाने के बाद उनके फल उसमें गिरने से पवित्र सरोवर में बदल गया और उस सरोवर का जो भी रोगी जल ग्रहण करता वह स्वास्थ्य लाभ पाने लगा। यह बात दूर-दूर तक फैल गई और उस तालाब का जल लेने के लिए दूर-दराज से लोग आने लगे। सिमरन दूर-दराज से आने वाले लोगों की सेवा में लगी रहती थी और सेवा करते-करते गुरुदेव समेनाथ को तो भूल ही बैठी थी।

किसी समय मुहम्मद तुगलक दिल्ली छोड़कर भाग गए थे और दिल्ली पर आर्यों का शासन हो गया था। लेकिन बाद में चित्तौड़ के राजपूतों की शक्ति क्षीण होते हुए मुस्लिम आक्रांता दोबारा दिल्ली कूच कर गए। समेराम का अब राजधर्म से कोई वास्ता नहीं रहा था, क्योंकि अधिकांश समय वे साधना में बिता रहे थे। राजनीति से उन्होंने कदम दूर खींच लिए थे, लेकिन मुहम्मद तुगलक अच्छी तरह जानता था कि जब तक समेराम जीवित है, तब तक दिल्ली के सिंहासन का पुनः अपहरण करना संभव नहीं। इसलिए उन्होंने दिल्ली में प्रवेश करने से पहले ही समेराम को मिटाने की योजना बनाई और इंद्रप्रस्थ की सीमा में प्रवेश करते ही रात्रि के समय सबसे हमला उन्होंने समेराम और उसके भक्तों पर ही किया। शिवमंदिर में उस दिन साधु-संत और कुछ भक्त सोए हुए थे और अचानक ही हमला किया। हड़बड़ी में साधु-संतों के हाथ जो आया उसी से प्रतिरोध करने लगे। समेराम अपने सफेद अश्व पर सवार होकर त्रिशूल से यवनों को गाजर-मूली की तरह काटने लगे। मुहम्मद तुगलक ने एक चाल चली। वहाँ पर एक गौशाला थी, उन्होंने गौशाला की बाड़ खोल दी और गायों पर प्रहार करना शुरू कर दिया। समेराम बिजली की गति से गायों की रक्षा के लिए दौड़े और उनकी रक्षा करने लगे। उनके सामने किसी भी म्लेच्छ के आने की हिम्मत नहीं हुई, लेकिन मुहम्मद तुगलक और फिरोज दोनों ने मिलकर समेराम की पीठ पर एक के बाद अनेक वाणों की वर्षा कर डाली। समेराम घायल अवस्था में घोड़े की पीठ पर गिर पड़े। मुस्लमानों ने जीत

की घोषणा कर दी। समेराम का अश्व भी घायल हो चुका था, लेकिन उस दिन चाँदनी रात में भी वह अश्व मुस्लिमों के जश्न मनाते वातावरण से अपने गुरु को पेड़ों की ओट से बाहर ले गया। वहाँ से कुछ ही दूरी पर पवित्र तालाब था, जिस पर सिमरन की कुटिया बनी हुई थी। अश्व उसी ओर लंगड़ाता हुआ सावधानी से चल पड़ा था।

समय गुजरने के साथ-साथ सिमरन के बाल अब पक चुके थे। बाहर से अचानक ही आवाज आई तो वह एक लाठी लेकर झुकी कमर के साथ खाँसती हुई बाहर निकली, तो उसने देखा बाबा समेनाथ अपने घोड़े पर बैठे मुस्करा रहे थे। उनके एक हाथ में त्रिशूल था, जो रक्त से सना हुआ। उनकी पीठ वाणों से छलनी हो चुकी थी।

''आप आ गए प्रभु।''

''हाँ देवी हम आ गए,'' उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, ''देवी आज से हम आपको अपनी सेवा का अवसर देते हैं।''

सिमरन का पूरा शरीर रोगी बना हुआ था। पागल-सी अवस्था में थी। सिर के बाल बिखरे पड़े थे। अधिकांश बाल सफेद हो चुके थे। उसके पास कोई नहीं था। अब तो कोई अतिथि भी नहीं आता था, लेकिन अचानक ही गुरुदेव कैसे आ गए उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था।

''यह क्या हाल बना रखा है देवी!''

''मेरे हाल की छोडिए देव, आप तो घायल हैं, क्या किसी जंग से आए हैं।''

''यह सारा जीवन ही तो एक जंग है देवी।''

''अब आए हैं भगवन, जब मैं आपकी कोई सेवा नहीं कर सकती। आज मेरे पास सौंदर्य, आमोद-प्रमोद का कुछ भी साधन तो नहीं बचा। आपने बहुत देर कर दी...प्रभु बहुत देर।''

''नहीं देवी मैंने देर नहीं की है। मैं सही समय पर आया हूँ। जब आपके पास रूप था, तो आपके पास कोई भी आ सकता था। भले ही आपको यौवन अवस्था में वैराग्य हो गया हो, लेकिन यदि मैं उन दिनों

आता तो लोग हम दोनों पर लाँछन लगा देते। गुरु शिष्या का पावन सम्बन्ध प्रश्नों के घेरे में आ जाता और फिर देश सेवा से इतना समय ही नहीं बचा था कि किसी को दीक्षा भी दी जा सके।''

''लेकिन आज तो...।''

''जब तुम्हारे पास आज कोई भी नहीं, तभी तो तुम्हें मेरी अधिक आवश्यकता है। यही तो सच्चा आना है देवी। आज हम तुम्हें दीक्षा देते हैं।''

सिमरन थोड़ी निकट आई, तो गुरुदेव बोले, ''वहीं खड़ी रहो देवी और आँखें बंद कर लो।'' फिर गुरुदेव ने आगे कहा, ''आज से हम तुम्हें दीक्षा देते हैं, हमारे साथ गायत्री मंत्र का उच्चारण करो।''

गायत्री मंत्र का सस्वर उच्चारण होने लगा। लेकिन जैसे ही गायत्री मंत्र का स्वर पूरा हुआ, तो गुरुदेव ने अपने गुरु का ध्यान किया और फिर धरती को निहारते हुए कहा, ''धरती माता मुझे दुख है कि मैं तुम्हारा उद्धार न कर सका। देश को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त न करा सका, लेकिन यदि मैंने सच्चे अर्थों में साधना की हो तो मुझे अपनी गोद में ले लो और आशीर्वाद दो कि मेरी साधना की शक्ति से लोगों को प्रेरणा मिलती रहे कि वे कल्याण मार्ग के पथिक बनें।''

अनुश्रुति के अनुसार, समेनाथ के इतना कहते कि आसमान में बहुत तेज से बिजली कड़की और हल की फाल की तरह ताड़क शस्त्र आसमान से उतरा, जिसके कारण धरती का सीना फट गया और समेनाथ अपने घोड़े के साथ भूमि में समा गए। हल के फाल जैसी वह आकाशीय बिजली पुनः आसमान में चली गई और जोरदार बरसात होने लगी। जिस स्थान पर समेनाथ मिट्टी में समाए थे, वहाँ वर्षा होने के कारण मिट्टी अपने आप ही गिरने लगी और सिमरन यह सब पागलों की भाँति देख रही थी।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि जोहड़ के एक छोर पर मिट्टी का टीला था, जिसे चूँहों और घूसों ने खोखला बनाकर रख दिया और जब समेराम युद्ध में घायल अवस्था में वहाँ आए तो वे खोखले हुए इस

टीले में धँसते चले गए। कुछ भी हो यह तो सत्य है कि समेराम अपने अश्व के साथ ही भूमि माता के गर्भ में चिर निद्रा में लीन हैं।

बाद में सिमरन और बाबा के कुछ भक्तों ने मिट्टी से वह स्थल ढककर समाधि को अंतिम रूप दिया और वहीं बाबा समेनाथ की सेवा करने लगी। बाबा ने निश्चय ही अपना वादा निभाया और उन्हें जीवनभर के लिए सेवा का अवसर दिया। ऐसा अवसर तो विरलों को ही प्राप्त होता है। लेकिन मुहम्मद बिन तुगलक को यह सहन न हुआ और उन्होंने वहाँ कराए गए निर्माण पर रोक लगा दी और सिमरन को काल कोठरी में डाल दिया।

लोगों में यहाँ तक अफवाहें फैला दी गईं कि जीवन के अंतिम क्षणों में समेनाथ ने मुस्लिम मजहब धारण करके सिमरन का हाथ थामा था और उसने अपना नया नाम समसखाँ रख लिया था। लेकिन ये सब बातें निराधार हैं। हालाँकि समेनाथ की समाधि को समसखाँ की दरगाह के नाम से भी प्रचारित किया और मुस्लिम लोगों को वहाँ चादर चढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया।

सिमरन अपने गुरु को श्याम सखा भी कहती थी, शायद इसी कारण बाद में लोगों को भ्रम भी हुआ हो और श्याम सखा ही समसखाँ बन गया। समेनाथ तो आजीवन ब्रह्मचारी रहे और महान संत हुए हैं। वे एक ओर जहाँ भगवान शंकर को अपना आराध्य मानते थे, वहीं दूसरी ओर अखण्ड ब्रह्मचारी महाबली के नाम से हनुमान की पूजा भी करते थे। इसलिए शम्मो अर्थात सिमरन ने वहाँ महाबली का एक छोटा सा थान भी बनाया था। लेकिन यवनों को यह भी सहन नहीं हुआ और उन्होंने उस थान को पहले तो बलि साहब की कब्र और बाद में लालबेग के नाम से प्रचारित किया। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि वहाँ समेराम के गुरु हरिनाथ की समाधि है और इसलिए समेनाथ ने गुरु के चरणों में ही धरती माता से शाश्वत विश्राम की इच्छा जताई थी, जो पूरी हुई।

जब बाबा समेनाथ की समाधि पर लोगों के जाने पर प्रतिबंध

लगा दिया तो, लोगों ने दूर से ही बाबा की पूजा करनी शुरू कर दी और जिस शिव मंदिर में कभी निजामुद्दीन औलिया और बाबा समेनाथ का शास्त्रार्थ हुआ था, उस स्थल के पास लोग पूजा अर्चना करने लगे। वहाँ भी बाबा समेनाथ की प्रतीकात्मक समाधि का निर्माण करा दिया गया। यवनों ने बाबा के समाधि स्थल को बार-बार तोड़ा, लेकिन भक्तों ने अपने आराध्य की चिर स्थली को हर बार ही सजाया-संवारा और आज भी समेनाथ की समाधि के चारों ओर मुगलकालीन दीवार इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। समय बदला और युग बदला। समाधि स्थल से दो मील दूर सराय सोहेल गाँव था, जो मुस्लिम प्रधान था और उस गाँव में तुगलक समर्थक मुस्लिम रहते थे। वे मुस्लिम ही बार-बार बाबा की समाधि को तोड़ते और उसे छद्म दरगाह का नाम देते थे। लेकिन आजादी के बाद 1947 में वह गाँव उजड़ गया, क्योंकि उस गाँव के अधिकांश लोग पाकिस्तान चले गए।

भारत सरकार ने यहाँ हवाई अड्डे का निर्माण किया। हवाई अड्डे के विस्तार के लिए गाँव नांगल देवत्व के निवासियों को भी विस्थापित करने की योजना सरकार ने बनाई और 1965 में इस गाँव के साथ-साथ कई अन्य गाँवों की सारी जमीन का कौड़ियों के भाव में अधिग्रहण कर लिया गया। गाँव नांगल देवत्व की आबादी (लाल डोरा) 63 एकड़ भूमि का नोटिस भारत सरकार ने 1972 में दिया और जुलाई 2007 में इस गाँव को उजाड़कर रंगपुरी की पहाड़ी पर बसा दिया गया। हालाँकि सरकार ने नए गाँव में अपनी ओर से एक मंदिर भी बनवाया, लेकिन लोगों की श्रद्धा इस समाधि स्थल से हटी नहीं, यही कारण है कि यह भूमि समाधि मंदिर जोहड व श्मशान का 28 बीघे का रकबा, जिसकी कीमत लगभग पौने पाँच लाख रुपए आँकी गई थी, उस रकम को लेने से ग्राम सभा ने इंकार कर दिया। यह रकम आज भी कापसहेडा एलएसी ऑफिस में जमा है।

बाबा की समाधि पर लोगों का आज भी आना-जाना लगा रहता है। शादी-विवाह के बाद आसपास के गाँव के हिन्दू नव वर-वधू यहाँ

आशीर्वाद लेने आते हैं एवं चद्दर चढ़ाकर दीपक जलाकर इच्छित वरदान की चाहना करते हैं। लोगों की बातों पर विश्वास किया जाए तो कहते हैं कि यहाँ आने वाले लाखों श्रद्धालु भक्तों की मनोकामना अवश्य पूरी होती है। आज यहाँ न तो जोहड़ रहा है और न ही 28 बीघे जमीन का परिसर, बस बाबा की समाधि और आसपास पुनःनिर्मित एक मंदिर है, जिसके परिसर में मुश्किल से दो बीघे ही जमीन होगी, लेकिन इस पर भी विमानपत्तन प्राधिकरण की काकदृष्टि लगी हुई है, देश के पहले गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी की समाधि कब तोड़ दी जाए! लोगों की आस्थाओं से कब खिलवाड़ हो जाए कहा नहीं जा सकता!

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. चंदा रानी, जयसिंह आर्य, संस्करण 1967
2. ठंडी अग्नि, तेजपाल सिंह धामा, हिन्दी साहित्य सदन, करोल बाग, नई दिल्ली
3. बेताज बादशाह, जयप्रकाश शर्मा, सागर प्रकाशन, संस्करण 2015

भवानी की तलवार

''मैं इस्लाम कबूल नहीं करूँगी।'' बारह साल की बालिका रुकमीबाई ने कहा, ''और न कभी मैं गोमांस खाऊँगी।''

''मान जाओ बेटी,'' शिवाजी महाराज के सरसेनापति नेताजी पालकर ने अपनी बेटी को समझाते हुए कहा, ''कर ले इस्लाम कबूल, तुम्हारी माँ और मैं भी कर चुके हैं। देखो मैंने अपना नाम मुहम्मद कुलीखान रख लिया है और अब हम अफगानिस्तान में मुगलों के खिलाफ बचे हुए हिन्दुओं का विद्रोह दबाने आए हैं।''

''पहले घर का विद्रोह तो दबा लो,'' कुलीखान की पत्नी जो नई नई मुसलमानी बनी थी, अल्लाह अल्लाह पुकारती हुई बोली, ''दो टके की छोरी हमें भी फाँसी पर चढ़वाएगी। जिंदा पीर को पता चल गया तो हमें जिंदा जमीन में गाड़कर मुर्दा पीर बना देगा।''

''कुछ भी हो मैं इस्लाम कबूल नहीं करूँगी,'' रुकमीबाई बात पर अड़ी हुई थी, ''तुम यहाँ भी हिन्दुओं को ही मारने आए हो, हे भगवान समझाओ इन्हें...औरंगजेब हिन्दुओं के हाथ से हिन्दुओं को ही मरवा रहा है।'' कोई समझौता न हुआ और मुहम्मद कुलीखान अपनी बेटी रुकमीबाई को एक शामियाने में कैद करके हिन्दुओं के विद्रोह को दबाने के लिए चला गया। इसी दौरान रुकमीबाई वहाँ से किसी तरह कैद से आजाद होकर एक घोड़े सवार हुई और हिन्दुस्तान के लिए अकेले ही रवाना हुई। रवाना होने से पहले उसने एक खत अपने पिता के नाम लिखा कि वह शिवाजी महाराज की शरण में जा रही है, वही उसका धर्म बचा सकते हैं और हाँ शर्म आ जाए तो तुम भी आ जाना

शिवाजी महाराज आप लोगों को भी पुनः हिन्दू बनाकर सरसेनापति का पद दे देंगे, जो स्वर्ग के इंद्र के पद से भी बड़ा है।

मुहम्मद कुलीखान जब विद्रोह दबाकर आया तो उसे अपनी बेटी के फरार होने का पता चला। बहुत सोच-विचार के बाद वह अपनी बेटी को तलाशने के लिए अपने काफिले के साथ रवाना हुआ। उसके काफिले के सभी सैनिक हिन्दू से मुस्लिम ही बने हुए थे। मुहम्मद कुलीखान अपनी बेटी को तो न पकड़ सके, लेकिन उसे तलाशते हुए मराठा साम्राज्य में पहुँच गए थे, जहाँ शिवाजी के सैनिकों ने उसे बागी समझकर कैद कर लिया।

2

रुकमीबाई भी यात्रा करते हुए उनसे पहले ही मराठा साम्राज्य में पहुँच गई थी। उसकी प्रिय सखी शिवाजी की तीसरी बेटी सखुबाई थी। वह उसके पास पहुँची और अपने आने का कारण बताया। सारी बात शिवाजी महाराज के कानों तक पहुँची, तो शिवाजी बोले, ''बेटी जो हिन्दू मुस्लिम बन जाते हैं, उन्हें दोबारा हिन्दू नहीं बनाया जा सकता।''

''क्यों नहीं बनाया जा सकता,'' रुकमीबाई ने शिवाजी महाराज से कहा, ''फिर तो एक दिन ऐसा आएगा कि सारा हिन्दुस्तान ही मुस्लिम बन जाएगा, तब हमारी सभ्यता और संस्कृति का क्या होगा? हमारी गौरवशाली संस्कृति क्या यूँ ही नष्ट हो जाएगी। फिर आप मुगलों के खिलाफ जंग क्यों लड़ रहे हैं? आपका लक्ष्य क्या है?''

''मेरा लक्ष्य,'' कहते हुए शिवाजी ने थोड़ा सोचा और फिर बोले, ''आर्य संस्कृति का उत्थान।''

''तो आर्य संस्कृति का उत्थान म्लेच्छों को हिन्दू बनाए बिना न होगा। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तो मुझे अपने हाथ से गोमांस खिलाकर मुसलमानी बना दें महाराज?''

''बेटी तुमने मेरी आँखें खोल दी,'' भावुक हो गए थे शिवाजी महाराज, ''तुम्हें मुसलमानी बनने की जरूरत नहीं, अब हम म्लेच्छों की घर वापसी अवश्य करेंगे।'' भावुक होते हुए रुकमीबाई के चरणों में

झुक गए थे शिवाजी महाराज, तभी रुकमीबाई ने फिर कहा, ''उठिए महाराज! मैं आपको यह तलवार भेंट करती हूँ।''

शिवाजी ने आदर के साथ रुकमीबाई के हाथों से उनकी तलवार स्वीकार की। रुकमीबाई ने उस तलवार को कुछ विशिष्ट धातुओं से स्वयं निर्मित करवाया था, ''मुझे विश्वास है कि जब तक आपके हाथों में यह तलवार रहेगी, आप अजेय बने रहेंगे।''

शिवाजी ने तलवार माथे से चूमी। वे रुकमीबाई का धर्म के प्रति समर्पण देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने वादा किया, ''भवानी रुकमीबाई! मैं आपके पिता को पुनः हिन्दू बनाकर आपको उनके पास भेजूँगा और आपके पिताश्री को दोबारा सरसेनापति का पद भी दिया जाएगा।''

''मेरे पिता ही नहीं, जो हिन्दू भाई बिछुड़कर मुस्लिम बन गए उन सबकी घर वापसी कराइए महाराज। जो मंदिर तोड़कर मस्जिद बना दी मुगलों ने...वहाँ चल रहे मदरसों को वेद विद्यालय में बदलें महाराज, ताकि वेद मंत्र पुनः चहुँओर गूँजते दिखाई दें...''

''ऐसा ही होगा, जय भवानी।'' कहते हुए वे चल दिए थे।

3

मुहम्मद कुलीखान की तरह ही बजाजीनाइक निंबालकर का मुकदमा भी शिवाजी की अदालत में था, वह भी मुगलों की कैद में मुस्लिम बन गया था, लेकिन अब मराठों ने उसे गिरफ्तार कर लिया था और उसकी आजादी के लिए यही शर्त रखी कि यदि वह दोबारा हिन्दू बन जाएगा तो उसे छोड़ दिया जाएगा, वरना सरेआम फाँसी दे दी जाएगी।

आज शिवाजी की अदालत में वह अपनी सफाई दे रहा था, ''महाराज मैं दोबारा हिन्दू तो बन जाऊँगा, लेकिन हिन्दू समाज मुझे अपनाएगा नहीं।''

''क्यों नहीं अपनाएगा हिन्दू समाज तुम्हें, जब हम अपना रहे हैं।''

''कहने और अपनाने में बहुत अंतर है महाराज,'' निंबालकर ने

कहा, ''यदि मैं हिन्दू बन गया तो कोई हिन्दू मेरे बच्चों का विवाह अपने परिवार में नहीं करेगा।''

''हम अभी आपकी बेटी को अपने घर की बहू बनाने के लिए तैयार हैं।'' शिवाजी बोले।

''महाराज मेरी बेटियों को तो कोई भी अपने घर की बहू बना लेगा, लेकिन कोई हिन्दू मेरे शुद्धिकरण के बाद अपनी बेटी को मेरे घर की बहू नहीं बनाएगा...और मेरा खानदान नष्ट हो जाएगा, इसलिए मुझे क्षमा करें।''

''हम भले ही सब मत-मतांतरों का आदर करते हों, लेकिन यह कभी नहीं चाहेंगे कि हमारे हिन्दू भाई धर्मच्युत हो जाएँ और म्लेच्छ बन जाएँ। हम अभी इसी समय अपनी बेटी सखुबाई का विवाह आपके बेटे महादजी निंबालकर से करने की घोषणा करते हैं....और गंगाजल से आपके चरण धोकर आपको हिन्दू धर्म में पुनः प्रवेश कराएँगे।''

भरे दरबार में गंगाजल के कई घड़े मँगाए गए और बजाजीनाइक निंबालकर के परिवार के अलावा अब वहाँ मुहम्मद कुलीखान और उसके बच्चे, म्लेच्छ बनाए गए सैनिकों सहित उपस्थित किए गए। महाराजा शिवाजी ने बजाजीनाइक निंबालकर, मुहम्मद कुलीखान और उनके बाल-बच्चों व सैनिकों के गंगाजल से स्वयं पैर धोए, अपने अंगवस्त्र से उनको पोंछा और अपने साथ बैठाकर उन्हें खाना खिलाकर पुनः हिन्दू समाज में उनकी घर वापसी की। लेकिन इस दौरान रुकमीबाई और सुखुबाई को किसी ने न पूछा, उनकी ओर तो किसी का ध्यान ही नहीं था। इतिहासकारों का भी नहीं रहा, इसीलिए तो उन्हें आज कोई नहीं जानता। रुकमीबाई की शिवाजी को दी गई तलवार को भी कहते हैं कि वह तो पत्थर की देवी ने दी थी।

संदर्भ

1. वेद वृक्ष की छाँव तले, फरहाना ताज, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32
2. शिवाजी एंड हिज टाइम्स, सर जदुनाथ सरकार, ओरियंट लांगमन, दिल्ली, संस्करण 1973

यवन कांचनी

''दारा भाईजान! एक बात पूछूँ?'' मस्तानी ने एक बार दाराशिकोह से आग्रह किया। मस्तानी उन दिनों मुगलों के महल में ही रहती थी और दारा को वह भाईजान कहकर पुकारती थी। दारा से ही उसके सबसे मधुर संबंध थे, क्योंकि एक ज्ञानी हमेशा ज्ञानी के पास ही बैठना पसंद करता है।

''पूछिए मेरी गुड़िया रानी?'' दारा ने मुँह बोली बहन से पूछ ही लिया था, ''क्या पूछना चाहती हो?''

''आप वेद, उपनिषद आदि पढ़ते हैं, क्या आपको शहंशाह का डर नहीं है?''

''इसमें डर की क्या बात है, तुम भी तो प्राचीन सभ्यता और संस्कृति में रूचि रखती हो और फिर तुम तो ब्रह्मसूत्र में बंधी होने के कारण अभी तक काफिर ही हो!''

''लेकिन मेरी तो बात और है ना!''

''आपकी बात और कैसे है?''

''क्योंकि मेरे पड़दादा तो आर्य थे।''

''मस्तानी क्या तुम्हें पता है?''

''क्या भाईजान?''

''मुहम्मद से पहले कोई मुसलमान नहीं था, ईसा से पहले कोई इसाई नहीं था, जरथ्रुस्त्र से पहले कोई पारसी नहीं था!''

''तो फिर कौन थे?''

''सब आर्य ही थे यानी हिन्दू ही थे। और हिन्दुओं की भी अनेक धारणाएँ मुस्लिमों ने नकल की है!''

''आप यह कैसे कह सकते हैं?''

''तो आपको प्रमाण चाहिए!''

''आपको तो पता है ना कि हम बिना प्रमाण किसी बात को स्वीकार ही नहीं करते!''

''तो फिर सुनिए :

''काबा जो बैतुल्लाह यानी अल्लाह का घर माना जाता है, उसका अति प्राचीन नाम मक्ख-मेदिनी है और मक्ख-मेदिनी का मतलब होता है यज्ञभूमि। मक्का का काबा मंदिर वास्तव में काव्य शुक्र का मंदिर है। काबा काव्य का ही अपभ्रंश है। शुक्र का अर्थ जुम्मा अर्थात् बड़ा होता है और गुरु शुक्राचार्य बड़े ही माने जाते हैं।''

''बहुत खूब यह तो हमें पता है, लेकिन आगे क्या है?''

''आगे भी सुनिए : यज्ञ करने वाला अपनी साँसारिक इच्छाओं और वासनाओं को छोड़ देता है और यज्ञ में पाक एवं बिना सिले सफेद वस्त्र पहनने की परम्परा वैदिक काल में रही है और यही सब हज के दौरान भी होता है, हाजी एहराम पहनते हैं यानी दो बिना सिले सफेद कपड़े के टुकड़े होते हैं। यज्ञ हिंसा से रहित होता है और हज भी हिंसा से रहित होती है। मक्का का पाक क्षेत्र पूरी तरह सम्मानित है, यहाँ वेदों को तो भूल गए, लेकिन यहाँ पर फिर भी अल्लाह की सबसे पहली किताब वेदों के ही कानून का पूरी तरह पालन किया जाता है, वेद में किसी भी प्रकार की हिंसा या बलि का विधान नहीं और मक्का में यही वेदों का कानून आज भी चलता है, इस पाक क्षेत्र में कोई भी हाजी किसी भी जानवर, यहाँ तक की मक्खी और इससे भी आगे बढ़कर किसी प्रकृति यानी किसी पौधे को तनिक भी हानि नहीं पहुँचा सकते। हज यात्री का पूरा अस्तित्व अल्लाह को समर्पित हो जाता है।''

''लेकिन बकर ईद पर तो इतने बकरे काटे जाते हैं, साल भर हिंसा की और फिर हज कर लिया, क्या यह अजीब नहीं है, वेदों में तो हिंसा ही नहीं!''

''हाँ वेदों में हिंसा नहीं है, लेकिन हिन्दुओं में बलि प्रथा तो है।

मंदिरों में न जाने कितने बकरे काटे जाते हैं।''

''लेकिन बकरा ईद की तरह सामूहिक बलि तो हिन्दू नहीं देते, कभी-कभी एकाध बकरा काट लिया!''

''क्यों नहीं देते नेपाल खालिस हिन्दुओं का देश है, उसमें गढ़ीमाई का त्योहार मनाया जाता है। हर पाँच साल पर मनाए जाने वाले इस दो दिन के त्योहार में हजारों पशुओं की बलि एक साथ दी जाती है।''

''मतलब!''

''नेपाल का बारियापुर गाँव दुनिया का सबसे बड़ा बूचड़खाना बन जाता है दो दिनों में।''

''गढ़िमाई है क्या?''

''गढ़िमाई को शक्ति की देवी माना जाता है, उन्हें मानने वालों का मानना है कि बलि देने से उन्हें गढ़िमाई का आशीर्वाद मिलेगा। पशुओं की बलि देने से गढ़िमाई मंदिर के चारों तरफ खून ही खून नजर आता है। मंदिर में जिन भैंसों की बलि दी जाती है, उनके सिर को एक गड्ढे में रखा जाता है।''

''लेकिन वेदों में पशु बलि का विरोध है!''

''हाँ विरोध है, लेकिन ज्ञान के विलुप्त होने से ही ये ऐसे-ऐसे अंधविश्वास फैले हैं। लेकिन जैसे वेदों में पशु हिंसा की मनाही है, वैसे ही काबा में भी है। अब सोचने वाली बात है कि यदि अल्लाह को कुर्बानी पंसद होती तो काबा जो बैतुल्लाह यानी अल्लाह का घर माना जाता है, फिर यहाँ पर सबसे अधिक बकरे काटने के लिए हाजी साथ लेकर जाते? लेकिन यह क्षेत्र तो हिंसा से रहित है, क्योंकि यहाँ वेदों का कानून चलता है। पाँच वक्त की नमाज का बहुत महत्व है। नमाज खुद संस्कृत का शब्द है यानी पंच और यज्ञ। और पाँच का महत्व वेदों में ही है, जैसे पंचाग्नि, पंचपात्र, पंचगव्य, पंचांग आदि। पाँच दिन के हज के दौरान पूरी दुनिया के हाजी मक्का में एकत्र होते हैं और एक साथ इबादत करते हैं और एक साथ लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहते हैं। हज शब्द ही संस्कृत के व्रज का अपभंश है, वज्र का

अर्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना है। सफेद वस्त्रधारी हाजी काबा की सात परिक्रमाएँ करते हैं, सात परिक्रमा का विधान पूरी तरह वेदों का है। सप्तपदी मंदिरों में होती है, सप्तपदी विवाह संस्कार में होती है यज्ञ के सामने। सच तो यह है कि मुसलमानों में हज की यात्रा इस्लाम पूर्व की है। यहाँ तो शिव और अन्य देवों के बुत हुआ करते थे। लोग कहते हैं कि कुरान का प्रत्येक शब्द स्वर्ग में लिखे हुए शिलालेख से अल्लाह ने देवूदत ग्रेबियल द्वारा मोहम्मद को जैसा सुनाया, वैसा लिखा गया। बाइबिल कहती है और स्वर्ग में ईश्वर का मंदिर खोला और उसके नियम का संदूक उसके मंदिर में दिखाई दिया। ईश्वर का ज्ञान चार संदूकों में है। अब सच यह है कि सृष्टि के आरम्भ में ही अल्लाह ने चार मौलाओं यानी ऋषियों को अपना ज्ञान दिया, इसलिए अल्लाह का कानून वेद हैं। वेदों में ज्ञान और विज्ञान है, लेकिन कुरान में ज्ञान-विज्ञान की बातें कम और इतिहास अधिक है। लेकिन इतिहास लिखने का कार्य अल्लाह का नहीं हो सकता, इतिहासकारों का होता है। अल्लाह तो ज्ञान और विज्ञान की बातें ही बता सकते हैं।''

''सब आर्य ही थे यानी हिन्दू ही थे। और हिन्दुओं की भी अनेक धारणाएँ मुस्लिमों ने नकल की है! आप इस बात को गोल-मोल कर गए।''

''नहीं हम अपनी बात पर अडिग हैं।''

''तो बताइए हिन्दुओं के पञ्च यज्ञ मुस्लिमों में क्या?''

''पाँच वक्त की नमाज।''

''हिन्दुओं में आचमन अंगस्पर्शन मुस्लिमों में?''

''वजू।''

''हिन्दुओं में स्नान, मुस्लिमों में?''

''गुसल।''

''हिन्दुओं का शोच मुस्लिमों का?''

''तय्युम।''

''हिन्दुओं में माला जाप मुस्लिमों में?''

‘‘तस्बीह, तहलील करना।’’
‘‘हिन्दुओं का पाठ करना मुस्लिमों का?’’
‘‘तिलावत।’’
‘‘हिन्दुओं का उपवास मुस्लिमों का’’
‘‘रोजे।’’
‘‘हिन्दुओं की स्मृति, मुस्लिमों की’’
‘‘जिक्र।’’
‘‘हिन्दुओं की नरक की अग्नि, मुस्लिमों की’’
‘‘अजाब।’’
‘‘हिन्दुओं का परलोक, मुस्लिमों की’’
‘‘आखिरत।’’
‘‘हिन्दुओं की धोती, मुस्लिमों की’’
‘‘इहराम।’’
‘‘हिन्दुओं का एकांतवास, मुस्लिमों का’’
‘‘एतिकाफ।’’
‘‘हिन्दुओं का प्रायश्चित, मुस्लिमों का’’
‘‘कफ्फारा।’’
‘‘हिन्दुओं की महाप्रलय, मुस्लिमों की’’
‘‘कयामत।’’
‘‘हिन्दुओं की बलि, मुस्लिमों की’’
‘‘कुरबानी।’’
‘‘हिन्दुओं में दान-पुण्य मुस्लिमों के?’’
‘‘खैरात व जकात।’’
‘‘हिन्दुओं में बलिदान मुस्लिमों में?’’
‘‘सदक।’’
‘‘हिन्दुओं की तीर्थ यात्रा मुस्लिमों की?’’
‘‘हज्ज।’’
‘‘हिन्दुओं की प्रदक्षिणा मुस्लिमों की?’’

elibrary.thearyasamaj.org

''तवाफ।''
''हिन्दुओं का प्रायश्चित मुस्लिमों का?''
''कफार।''
''हिन्दुओं का श्राद्ध मुस्लिमों का?''
''फातिहः।''
''हिन्दुओं का स्वर्ग मुस्लिमों की?''
''जन्नत।''
''हिन्दुओं का नर्क मुस्लिमों की?''
''दोजख।''
''हिन्दुओं का अक्षयवट मुस्लिमों का?''
''तूबा।''
''हिन्दुओं की अप्सरा, मुस्लिमों की?''
''हुरे।''
''हिन्दुओं का धर्मराज, गण मुस्लिमों का?''
''रिज्वान, मलाइक।''
''हिन्दुओं का चित्रगुप्त मुसलमानों का?''
''करामन।''
''हिन्दुओं का यमराज मुस्लिमों का?''
''इज्राईल।''
''हिन्दुओं का प्रगतम्बर मुस्लिमों का?''
''पैगम्बर।''
''हिन्दुओं ईड मुस्लिमों का?''
''ईद!''
''हिन्दुओं की प्रार्थना, मुस्लिमों की''
''हम्द।''
''हिन्दुओं की वैतरणी मुस्लिमों का?''
''पुले सिरात।''
''हिन्दुओं का कल्पवृक्ष मुस्लिमों का?''

elibrary.thearyasamaj.org

''सद्रह।''

''हिन्दुओं की वारुणी मुसलमानों का?''

''शराबे तहुर।''

''हिन्दुओं का ध्यान मुस्लिमों का?''

''मुराब्क।''

''हिन्दुओं का कैलाश मुस्लिमों का?''

''अर्शे अजीम। इस तरह अनेक चीजें मुस्लिमों ने हिन्दुओं से ही अनुकरणीय मानी हैं।''

''भाईजान! आप तो धर्म और दीन के बारे में बहुत जानते हैं, हमने कभी सोचा भी नहीं था।''

''यह सब तो अध्ययन करते-करते पता चल गया।''

''तो फिर आपका क्या विचार है?''

''किस बारे में?''

''इस्लाम के बारे में!''

''इस बात को यहीं विराम दे दीजिए तो अच्छा रहेगा, जब कभी हिन्दुस्तान का ताज हमारे सिर पर होगा, तब यह सवाल पूछना?''

''लेकिन भाईजान एक बात कहूँ बहुत ही सच्ची है और कड़वी भी।'' मस्तानी ने गंभीर होकर कहा था।

''कहिए ऐसी क्या बात है?''

''आप हिन्दुस्तान के कभी शहंशाह नहीं बन सकते!''

''हमारा तो हक बनता है, फिर कौन बनेगा?''

''कोई भी बने, लेकिन आप नहीं।''

''मगर क्यों?''

''वह इसलिए कि मुल्ला-मौलवी आपको काफिर समझते हैं।''

''ओह! समझा...उनको शायद डर है कि हम शहंशाह बनते ही कहीं उनके दीन की दुकानदारी बंद न कर दें। इन पंडितों और मुल्लाओं ने धर्म को भी धंधा बना लिया है। अंध विश्वास, रूढिवाद, कब्र और बुत की पूजा के नाम पर दुनिया को ठगना ही इनका पेशा हो गया,

लोगों को उस एक ईश्वर के विषय में यह लोग नहीं बताते और न ही चिंतन करते हैं।''

''वह इसलिए भाईजान की इन्हें खुद ही नहीं पता कि ईश्वर एक है और वह हर जगह है।'' कहते हुए मुस्करा दी थी मस्तानी।

''हाँ आपने ठीक कहा, यही बात अरब में सदियों पहले हरेक लोग कहता था।''

''इसका प्रमाण?''

''अया मुबारेकल अरज मुशैये नोंहा मिनार हिंदे।
व अरादकल्लाह मज्जोनज्जे जिकरतुन।
वह लवज्जलीयतुन ऐनाने सहबी अरवे अतुन जिकरा।
वहाजेही योनज्जेलुर्ररसूल मिनल हिंदतुन।
यकूलूनल्लाहः या अहलल अरज आलमीन फुल्लहुम।
फत्तेबेऊ जिकरतुल वेद हुक्कुन मालन योनज्वेलतुन।
वहोबा आलमुस्साम वल यजुरमिनल्लाहे तनजीलन।
फऐ नोमा या अरवीयो मुत्तवअन योवसीरीयोनजातुन।
जइसनैन हुमारिक अतर नासेहीन का-अ-खुबातुन।
व असनात अलाऊढ़न व होवा मश-ए-रतुन।

''इसका मलब क्या है भाईजान?''

''हे भारत की पुण्यभूमि (मिनार हिंदे) तू धन्य है, क्योंकि ईश्वर ने अपने ज्ञान के लिए तुझको चुना। वह ईश्वर का ज्ञान प्रकाश, जो चार प्रकाश स्तम्भों के सदृश्य सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है, यह भारतवर्ष (हिंद तुन) में ऋषियों द्वारा चार रूप में प्रकट हुआ। और परमात्मा समस्त संसार के मनुष्यों को आज्ञा देता है कि वेद, जो मेरे ज्ञान के भंडार हैं, इनके अनुसार आचरण करो। वह ज्ञान के भण्डार साम और यजुर है, जो ईश्वर ने प्रदान किए। इसलिए, हे मेरे भाइयो! इनको मानो, क्योंकि ये हमें मोक्ष का मार्ग बताते हैं। और दो उनमें से रिक्, अतर (ऋग्वेद, अथर्ववेद) जो हमें भ्रातृत्व की शिक्षा देते हैं, और जो इनकी शरण में आ गया, वह कभी अन्धकार को प्राप्त नहीं होता।''

''यह तो हमें भी पता है, लेकिन मुहम्मद के घर वाले किस दीन को मानते थे।''

''हजरत मोहम्मद के चाचा उमर-बिन-ए-हश्शाम की कविता नहीं पढ़ी क्या?''

''नहीं तो आप ही बता दीजिए!''

''कफविनक जिकरा मिन उलुमिन तब असेक।
कलुवन अमातातुल हवा व तजक्कः।
न तज खेरोहा उड़न एललवदए लिलवरा।
वलुकएने जातल्लाहे औम असेः।
व अहालोलहा अजहू अरानीमन महादेव ओ।
मनोजेल इलमुद्दीन मीनहुम व सयत्तः।
व सहबी वे याम फीम कामिल हिन्दे यौमन ।
व यकुलून न लातहजन फइन्नक तवज्जः।
मअस्सयरे अरव्लाकन हसनन कुल्लहूम ।
नजुमुन अजा अत सुम्मा गबुल हिन्दू ।

''मतलब?''

''वह मनुष्य, जिसने सारा जीवन पाप व अधर्म में बिताया हो, काम, क्रोध में अपने यौवन को नष्ट किया हो। यदि अन्त में उसको पश्चाताप हो और भलाई की ओर लौटना चाहे, तो क्या उसका कल्याण हो सकता है? एक बार भी सच्चे हृदय से वह महादेव जी की पूजा करे, तो धर्म-मार्ग में उच्च से उच्च पद को पा सकता है। हे प्रभु! मेरा समस्त जीवन लेकर केवल एक दिन भारत (हिंद) के निवास का दे दो, क्योंकि वहाँ पहुँचकर मनुष्य जीवन-मुक्त हो जाता है। वहाँ की यात्रा से सारे शुभ कर्मों की प्राप्ति होती है, और आदर्श गुरुजनों (गबुल हिन्दू) का सत्संग मिलता है।

''ओह तो आप अरब का संबंध हिन्दू धर्म से जोड़ते हैं?''

''इसमें जोड़नेवाली बात ही क्या है? ईरानी 'कुरुष', 'कौरुष' व अरबी कुरैश मूलतः महाभारत के युद्ध के बाद भारत से लापता उन

24165 कौरव सैनिकों के वंशज हैं, जो मरने से बच गए थे। अरब में कुरैशों के अतिरिक्त 'केदार' व 'कुरुक्षेत्र' कबीलों का इतिहास भी इसी तथ्य को प्रमाणित करता है। कुरैश वंशीय खलीफा मामुनुर्शीद के शासनकाल में निर्मित खलीफा का हरे रंग का चंद्रांकित झंडा भी इसी बात को सिद्ध करता है। कौरव चंद्रवंशी थे और कौरव अपने आदि पुरुष के रूप में चंद्रमा को मानते थे। इस्लामी झंडे में चंद्रमा के ऊपर 'अल्लुजा' अर्थात् शुक्र तारे का चिन्ह, अरबों के कुलगुरु 'शुक्राचार्य' का प्रतीक ही है। भारत के कौरवों का सम्बन्ध शुक्राचार्य से छुपा नहीं है। इसी प्रकार कुरआन में 'आद' जाति का वर्णन है, वास्तव में द्वारिका के जलमग्न होने पर जो यादव वंशी अरब में बस गए थे, वे ही कालान्तर में 'आद' कौम हुई। 24वीं सदी ईसा पूर्व में 'हिजाज' (मक्का-मदीना) पर जग्गिसा (जगदीश) का शासन था। 2350 ईसा पूर्व में शर्स्किन ने जग्गीसा को हराकर अंगेद नाम से राजधानी बनाई। शर्स्किन वास्तव में नारामसिन अर्थात् नरसिंह का ही बिगड़ा रूप है। 1000 ईसा पूर्व अंगेद पर गणेश नामक राजा का राज्य था। 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व हिजाज पर हारिस अथवा हरीस का शासन था। प्राचीन काल में अरब-निवासी सुसभ्य और शिल्प-कला में प्रवीण थे। ईसा से एक हजार वर्ष पूर्व अरब के आग्नेय कोण की सभ्यता चरम सीमा पर पहुँची हुई थी। गर्मियों में वर्षा के हो जाने से सबा और हमीर का यह यमन देश बड़ा हरा-भरा रहता था। यहाँ की प्रशस्तियाँ और भव्य प्रासादों के ध्वंसावशेष आज भी हमें बलात् प्रशंसा के लिए प्रेरित करते हैं।''

''लेकिन अरब की यह सभ्यता खत्म कैसे हुई? मुहम्मद के समय तो अरब में अश्लीलता, अधर्म अपने चरम पर था।''

''प्राचीन ज्ञान से विमुख होने के कारण कालान्तर में अरब के लोग घोर अविद्यान्धकार में निमग्न हो गये और सारी शिल्पकलाओं को भूल कर ऊँट-बकरी चराना मात्र उनकी जीविका का उपाय रह गया। अब आर्य मात्र ग्वाले बनकर रह गए और आर्य से अर्वा बन गए यानी बकरी चराने वाले। वह इसके लिए एक स्रोत से दूसरे स्रोत, एक स्थान

से दूसरे स्थान में हरे चरागाहों को खोजते हुए खेमों में निवास करके कालक्षेप करने लगे। कनखजूरा, गोह, गिरगिट आदि सारे जीव उनके भक्ष्य थे। नर-बलि, व्यभिचार, द्यूत और मद्यपान आदि का उनमें बड़ा प्रचार हो गया। प्राचीन राज्यों के विध्वंस हो जाने पर परस्पर लड़ने-भिड़ने वाले क्षुद्र परिवार-सामन्तों का स्थान-स्थान पर अधिकार था। एक भी आदमी का हत होना उस समय उभय परिवार के लिए चिरकाल-पर्यन्त कलह का पर्याप्त बीज हो जाता था।''

''ओह! कोई ऐतिहासिक उदाहरण?''

''अम्रू ने अपने भाई के मारे जाने पर एक के बदले सौ के मारने की प्रतिज्ञा की। उसने एक दिन अपने प्रतिपक्षी 'तमीम' वंशियों पर धावा किया, किन्तु लोग बस्ती छोड़ कर भाग गये थे। केवल 'हमरा' नाम की एक बुढ़िया वहाँ रह गई थी, जिसे उसने जलती आग में डलवा दिया। उसी समय अभाग्य का मारा 'अमारा' नामक एक क्षुधातुर सवार दूर से धुआँ उठते देख भोजन की आशा से उधर आ निकला। इन लुटेरों के पूछने पर उसने उत्तर दिया कि मैं कई दिन का भूखा हूँ, कुछ मिलने की आशा से आया हूँ। इस पर 'अम्रू' ने अपने साथियों को आज्ञा दी कि इसको आग में डाल दो। कोमल शिशुओं को लक्ष्य बनाकर तीर मारना, असह्य पीड़ा देने के लिए एक-एक अंग को थोड़ा-थोड़ा करके काटना, शत्रु के मुर्दों की नाक-काट डालना, यहाँ तक कि उनके कलेजे खा जाना इत्यादि उस समय के अनेक क्रूर कर्म उनकी नृशंसता के परिचायक थे।''

''ओह, यही कारण है कि मुहम्मद ने इन सामाजिक बुराइयों के खात्मे के लिए अभियान चलाया।''

''हाँ यह सही है कि इस्लाम का उदय एक सुधारवादी आंदोलन के रूप में ही हुआ था, लेकिन मोहम्मद के अनुयायी भी लोगों से जबरन इस्लाम कबूल करवाते थे और जो ऐसा नहीं करता था, उसे वे मौत के घाट उतार देते थे। इसे वे जिहाद का नाम देते थे।'' इस प्रकार वे दोनों काफी देर तक बातें करते रहे।

2

औरंगजेब के भाग्य में ही हिन्दुस्तान का खूंख्वार तानाशाह होना लिखा था, इसलिए शाह सुजा, जिसने अपने को बंगाल का गवर्नर घोषित करवाया था, को हारकर बर्मा के अराकान क्षेत्र जाना पड़ा और 1659 में औरंगजेब ने शाहजहाँ को कैद करने के बाद अपना राज्याभिषेक करवाया।

हिन्दुस्तान का तानाशाह बनते ही औरंगजेब ने जहानत खाँ व उनकी बेगम को कैद में डाल दिया, क्योंकि वह दाराशिकोह की ओर था और उनकी बेटी मस्तानी को महल में ही नजरबंद कर दिया। कुछ दिन बाद जहानत खाँ को कारागार में ही षड्यंत्र करके मरवा दिया और उनकी बेगम को कैदियों का खाना बनाने के काम में लगा दिया गया।

''हम शहंशाहे हिन्द से एक दरख्वास्त करना चाहते हैं?'' मस्तानी ने एक दिन औरंगजेब से कहा, ''हमें इजाजत दी जाए।''

''कहिए क्या कहना चाहती हैं आप?''

''हमारा कसूर क्या है, जो हमें महल में नजरबंद करके रखा गया है और हमारे अब्बू का कत्ल करवा दिया और अम्मी से कारागार में कैदियों के लिए खाना तैयार करवाते हैं। हमारे ही दुर्दिन थे, जो हम हिन्दुस्तान आ गए, हमारे महल में एक हजार से अधिक नौकर-चाकर रहा करते थे।''

''लौंडी रस्सी जल गई, लेकिन बल नहीं गया।''

''यह हमारी बात का जवाब नहीं।''

''तुम्हारा बाप काफिर था, इसलिए उसे मौत की सजा दी गई।''

''नहीं...उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था।''

''लेकिन उन्होंने तुम्हारा यज्ञोपवीत संस्कार करवाया था, यह हम जानते हैं और आप आज तक जनेऊ पहनती हैं, जबकि हम सवा मन जनेऊ पंडितों के गले से रोज उतरवाते हैं।''

''यज्ञोपवीत का मजहब से क्या वास्ता है?''

''यह काफिर होने की निशानी है!''

''नहीं यह तो इनसान होने की निशानी है।''

''कैसे? जरा हम भी तो सुनें?''

''सबसे पहली बात तो यह है कि यज्ञोपवीत यानी जनेऊ उन लोगों का संस्कार है, जिनके वंशज मुस्लिम हैं।''

''क्या बकती हो, यह तो काफिरों का पहनावा है।''

''नहीं, हम जानती हैं कि कुरान की अधिकांश बातें उनसे पहले की खुदाई किताब जेंद अवेस्ता में भी हैं और पारसी शास्त्रों के अनुसार पवित्र मेखला, अधोवसन (इहराम) का सम्बन्ध आधुनिक पारसियों से भी है और परसियन ही यज्ञोपवीत पहनते थे और मुहम्मद से पहले सारी मख-मेदिनी में हरेक इनसान यज्ञोपवीत पहनता था, लेकिन मुहम्मद इसके लाभ से अनभिज्ञ थे सो इसे गलत ठहरा दिया। लेकिन इहराम तो आज तक पहना जाता है, हज करने वाले मक्का से जाने से पहले फकीराना वस्त्र इहराम पहनते हैं, वह अधोवस्त्र ही तो है।''

''अच्छा जनेऊ के लाभ हैं, जरा हम भी तो सुनें?''

''शरीर के पृष्ठभाग में पीठ पर जाने वाली एक प्राकृतिक रेखा है जो विद्युत प्रवाह की तरह कार्य करती है। यह रेखा दाएँ कंधे से लेकर कटि प्रदेश तक स्थित होती है। यह नैसर्गिक रेखा अति सूक्ष्म नस है। इसका स्वरूप लाजवंती वनस्पति की तरह होता है। यदि यह नस संकुचित अवस्था में हो तो मनुष्य काम-क्रोधादि विकारों की सीमा नहीं लाँघ पाता। अपने कंधे पर यज्ञोपवीत है इसका मात्र एहसास होने से ही मनुष्य भ्रष्टाचार से परावृत्त होने लगता है। यदि उसकी प्राकृतिक नस का संकोच होने के कारण उसमें निहित विकार कम हो जाए तो कोई आश्यर्च नहीं है। इसीलिए सभी धर्मों में किसी न किसी कारणवश यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। जनेऊ पहनने से आदमी को लकवा से सुरक्षा मिल जाती है, क्योंकि आदमी को बताया गया है कि जनेऊ धारण करने वाले को लघुशंका करते समय दाँत पर दाँत बैठा कर रहना चाहिए अन्यथा अधर्म होता है।''

''अच्छी बात है, कल हम वैद्यों और हकीमों से इस बारे में चर्चा

करेंगे, यदि ऐसा है तो हम कल से जनेऊ उतरवाना बंद कर देंगे और यदि ऐसा नहीं हुआ तो तुम्हारा जनेऊ ही नहीं हम नथ भी उतार देंगे।''

''जी!'' और अगले दिन औरंगजेब के दरबार में राजधानी के नामी-गिरानी हकीम उपस्थित थे। यज्ञोपवीत का संबंध धर्म से नहीं चिकित्सा विज्ञान से है, इस विषय पर लंबी चर्चा और तर्क-वितर्क हुआ और अंत में निर्णय यही हुआ कि औरंगजेब को आदेश पारित करना पड़ा कि आगे से किसी का जनेऊ न उतारा जाए, क्योंकि देश में लकवा के मरीज बढ़ रहे हैं और प्रशासन उनके उपचार का प्रबंध करने में सक्षम नहीं है और मस्तानी को नजरबंदी से मुक्ति मिल गई, अब वह कारागार में बंद अपनी माँ से जब इच्छा करती, तब मिलने चली जाया करती, उसके लिए रोक-टोक के बंधन खत्म कर दिए गए।

3

बुंदेलखंड के शिवाजी के नाम से प्रख्यात छत्रसाल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल 3 संवत 1706 विक्रमी तदनुसार दिनांक 17 जून, 1648 ईस्वी को एक पहाड़ी ग्राम में हुआ था। इस बहादुर वीर बालक की माता जी का नाम लालकुँवरि था और पिता का नाम चम्पतराय था। चम्पतराय बहुत ही वीर व बहादुर थे। चम्पतराय के साथ युद्ध क्षेत्र में लालकुँवरि भी साथ ही रहती थीं और अपने पति को उत्साहित करती रहती थीं। गर्भस्थ शिशु छत्रसाल तलवारों की खनक और युद्ध की भयंकर मारकाट के बीच बड़े हुए। यही युद्ध के प्रभाव उसके जीवन पर असर डालते रहे। माता लालकुँवरि की धर्म व संस्कृति से संबंधित कहानियाँ बालक छत्रसाल को बहादुर बनाती रहीं। अपने पिता के वचन को पूरा करने के लिए छत्रसाल ने पँवार वंश की कन्या देवकुँवरि से विवाह किया। छत्रसाल ने अपने मात-पिता को शहीद होते हुए देखा था, इसलिए देश को स्वतंत्र कराने की तीव्र इच्छा उसके मन में थी। यही कारण था कि उन्होंने एक सेना तैयार की, लेकिन अभी अनुभव नहीं था, इसलिए ऐसे ही एक अवसर को उचित जानकर मुगलों की सेना से भीड़ गया।

लेकिन विशाल मुगल सेना के आगे उसकी क्या चलती, बेचारा मुगलों के चंगुल में फँस गया और उसे औरंगजेब के सामने पेश किया गया, ''तो तुम हो, जिसने सल्तनत से बगावत करने की हिम्मत की है।''

''आजादी पाने के लिए संघर्ष की शुरुआत की है।''

''आपको गुलाम किसने बनाया है।''

''विदेशी आक्रांताओं ने!''

''कौन विदेशी आक्रांता हैं वे!''

''...''

''हम तो विदेशी नहीं हिन्दी हैं, क्योंकि हमारा जन्म भारत में हुआ है।'' औरंगजेब ने आगे कहा, ''लेकिन विदेशी हैं कौन?''

''वह गुंडे आप ही हैं!''

''काफिर!'' आग बबूला हो उठे थे औरंगजेब, फिर आदेश दिया, ''इस काफिर को काल-कोठरी में डाल दो, इसका फैसला रमजान के बाद करेंगे।''

छत्रसाल काल-कोठरी में डाल दिया गया। उस काल-कोठरी में सुबह उसे खाना देने के लिए एक औरत आई और उसने खाना सरका दिया तो अंदर से छत्रसाल बोले, ''मुझे यह खाना नहीं चाहिए।''

''कारागार में अपनी पसंद का खाना किसी को नहीं मिलता।'' उस औरत ने जवाब दिया।

''लेकिन मैं शाकाहारी हूँ।''

''यह शाकाहारी भोजन ही है।''

''इस बात पर कैसे भरोसा करूँ?''

''मैं श्रीराम की सौगंध खाकर कहती हूँ कि खाना शाकाहारी है।''

''श्रीराम की सौगंध? क्या आप हिन्दू हैं?''

''जी!''

''लेकिन कारागार में चाकरी कैसे?''

''एक बहुत लंबी कहानी है।''

''फिर भी बताओ तो सही!''

''मैं सम्राट जहानत खाँ की बेगम सीमा महल हूँ!''

''बेगम मतलब!''

''जी मेरे मात-पिता हिन्दू थे।''

''ओह!''

''और मेरे शौहर को औरंगजेब ने मार डाला और मुझे कारागार में खाना तैयार करने के लिए छोड़ दिया और बेटी को अपने ही महल में नजरबंद करके रखा है। कभी-कभी मुझसे मिलने आती है।''

''आप यदि मुझे मुक्त करने में मदद करें, तो मैं आपको जो चाहें पुरस्कार दे सकता हूँ।''

''यदि मैंने आपको कारागार से निकलवा दिया तो जो माँगूँगी वह दे पाओगे?''

''हम वचन देते हैं, राजपूत के प्राण चले जाएँ पर, वचन नहीं जाता।''

''मैं नहीं चाहती कि मेरी बेटी मस्तानी भी मेरी तरह मुसलमानी का जीवन जिए, इसलिए आप वादा कीजिए कि मेरी बच्ची के धर्म पिता बनेंगे और उनका कन्यादान किसी हिन्दू वीर से करेंगे।''

''हम वादा करते हैं कि हम आपकी बेटी को अपनी बेटी के रूप में स्वीकार कर लेंगे और उनका वर कोई वीर हिन्दू ही होगा।''

''अच्छी बात है मैं कुछ करती हूँ आप तैयार रहना।''

और सीमा महल छत्रसाल को कारागार से भगाने के लिए युक्तियाँ सोचने लगी। एक दिन उसकी बेटी उससे मिलने आई तो उसने उसे अगली बार बेहोशी की औषधि लाने को कहा। अगली बार मस्तानी जब बेहोशी की औषधि लेकर आई तो उसे सारे खाने में मिला दिया और उस दिन पकवान भी कई अच्छे-अच्छे बनाए थे। सब कारागार के सैनिकों को वह पकवान पहले परोसा गया और इतना स्वादिष्ट बना था कि सब अँगुली चाटते रह गए। लेकिन छत्रसाल को उस दिन भोजन नहीं दिया गया। मस्तानी ने मुख्य रक्षक से चाबियों का गुच्छा भी झटक लिया, क्योंकि वह भी सभी की तरह बेहोशी के

आगोश में चला गया था और फिर छत्रसाल को मुक्त कराकर वे लोग आसानी से कारागार से बाहर निकल गए। बाहर निकलते हुए छत्रसाल ने एक सैनिक के वस्त्र पहन लिए थे। कुछ ही दिनों में छत्रसाल अपने महल में पहुँच गए और वहाँ विशेष यज्ञ करके उन्होंने मस्तानी को अपनी धर्म पुत्री के रूप में अंगीकार कर लिया और उनकी माताश्री के लिए भी ससम्मान महल के अंदर ही रहने की उचित व्यवस्था हमेशा के लिए कर दी।

4

मस्तानी को नृत्य कला में बहुत ही रूचि थी और उन्होंने एक दिन छत्रसाल से कह भी दिया था, ''पिताश्री! आपने हम पर बहुत उपकार किए हैं, जो एक अनाथ को न केवल दुष्टों के कारागार से मुक्त कराया, वरन उसे एक आदर्श आर्य परिवार भी दिया है। हमें बेटी का दर्जा दिया है, यदि आपकी जगह कोई म्लेच्छ होता तो हमें बेटी तो क्या मानता, वरन हमारी इज्जत को भी तार-तार कर देता। इसलिए हम आपसे एक प्रार्थना और करना चाहते हैं।''

''कहिए पुत्री आप क्या कहना चाहती हैं।''

''हमें संगीत बहुत पसंद है।''

''अच्छी बात है, हम आज ही आपके लिए संगीत और नृत्य के शिक्षक नियुक्त कर देंगे।''

''धन्यवाद!''

''बेटी को कभी पिता को धन्यवाद नहीं कहना चाहिए, क्योंकि यह तो पिता का कर्तव्य है।''

''जी! आप बहुत अच्छे हैं, ईश्वर ऐसा हिन्दू पिता हरेक मुस्लिम बेटी को दे।''

मस्तानी को कथक बहुत पसंद था। दरअसल कथक का नृत्य रूप 100 से अधिक घुँघरुओं को पैरों में बांध कर तालबद्ध पदचाप, विहंगम चक्कर द्वारा पहचाना जाता है और हिन्दु धार्मिक कथाओं के अलावा पर्शियन और उर्दू कविता से ली गई विषय-वस्तुओं का नाटकीय

प्रस्तुतीकरण किया जाता है। कथक का जन्म उत्तर में हुआ, किन्तु पर्शियन और मुस्लिम प्रभाव से यह मंदिर की रीति से दरबारी मनोरंजन तक पहुँच गया। कथक की शैली का जन्म ब्राह्मण पुजारियों द्वारा हिन्दुओं की पारम्परिक पुनः गणना में निहित है, जिन्हें कथिक कहते थे, जो नाटकीय अंदाज में हाव-भावों का उपयोग करते थे। क्रमशः इसमें कथा कहने की शैली और अधिक विकसित हुई तथा एक नृत्य रूप बन गया। उत्तर भारत में मुगलों के आने पर इस नृत्य को शाही दरबार में ले जाया गया और इसका विकास एक परिष्कृत कलारूप में हुआ, जिसे मुगल शासकों का संरक्षण प्राप्त था और कथक ने वर्तमान स्वरूप लिया। इस नृत्य में अब धर्म की अपेक्षा सौंदर्य बोध पर अधिक बल दिया गया। मस्तानी ने कथक मुगलों के उन महलों में ही सीखा जो उन्होंने गुंडागर्दी करके हिन्दुओं से छीने थे, जो आजकल की ऐतिहासिक इमारतों को मुस्लिमों द्वारा बनवाई बताते हैं, उनसे पूछों की क्या हिन्दू राजा झोंपड़ों में रहते थे? यदि झोंपड़ों में नहीं रहते थे उनके महल कहाँ गए। शब्द कथक का उद्भव कथा से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ है कहानी कहना। पुराने समय में कथा वाचक गानों के रूप में इसे बोलते और अपनी कथा को एक नया रूप देने के लिए नृत्य करते। इससे कथा कलाक्षेपम और दक्षिण भारत में हरी कथा का रूप बना और यही उत्तर भारत में कथक के रूप में जाना जाता है। लगभग 15वीं शताब्दी में इस नृत्य परम्परा में मुगल नृत्य और संगीत के कारण बड़ा परिवर्तन आया। 16वीं शताब्दी के अंत तक कसे हुए चूड़ीदार पायजामे को कथक नृत्य की वेशभूषा मान लिया गया। भारत में नृत्य की जड़ें प्राचीन परंपराओं में है। इस विशाल उपमहाद्वीप में नृत्यों की विभिन्न विधाओं ने जन्म लिया है। लेकिन मस्तानी को कथक अधिक पसंद था, इसलिए कथक की पूर्ण दीक्षा का प्रबंध राजा छत्रसाल ने किया।

औरंगजेब इस बात को सहन नहीं कर पा रहा था कि एक काफिर उसके कारागार से भाग गया और साथ में एक माँ-बेटी को भी भगा

ले ले गया। उसने छत्रसाल को दोबारा बंदी बनाने के लिए पुनः कई प्रयास किए, लेकिन औरंगजेब छत्रसाल को पराजित करने में सफल नहीं हो पाया। उसने रणदूलह के नेतृत्व में 30 हजार सैनिकों की टुकड़ी मुगल सरदारों के साथ छत्रसाल का पीछा करने के लिए भेजी। छत्रसाल अपने रणकौशल व छापामार युद्ध नीति के बल पर मुगलों के छक्के छुड़ाता रहा। छत्रसाल को मालूम था कि मुगल छलपूर्ण घेराबंदी में सिद्धहस्त हैं। उनके पिता चंपतराय मुगलों से धोखा खा चुके थे। छत्रसाल ने मुगल सेना से इटावा, खिमलासा, गढ़ाकोटा, धामोनी, रामगढ़, कंजिया, मडियादो, रहली, रानगिरि, शाहगढ़, वांसाकला सहित अनेक स्थानों पर लड़ाई लड़ी। छत्रसाल की शक्ति बढ़ती गई। बन्दी बनाये गये मुगल सरदारों से छत्रसाल ने दंड वसूला और उन्हें मुक्त कर दिया। बुन्देलखंड से मुगलों का एकछत्र शासन छत्रसाल ने समाप्त कर दिया।

5

"पिताश्री एक बात कहूँ?" मस्तानी ने एक दिन छत्रसाल से कहा था।

"कहिए पुत्री क्या कहना चाहती हो?"

"आपने बचपन से अब तक सारा जीवन संघर्ष में ही लगा दिया। देश की स्वतंत्रता और धर्म की रक्षा के लिए आप जीवित बलिदानी बन गए हैं, लेकिन..."

"लेकिन क्या पुत्री?"

"इतिहास आपको कैसे याद रखेगा?"

"मतलब?" फिर बोले, "लेकिन हम इतिहास में अमर होने के लिए यह सब नहीं करते!"

"लेकिन आने वाली पीढ़ियाँ तो इतिहास से ही सबक और प्रेरणा लेती हैं।"

"ओह, परंतु आप कहना क्या चाहती हैं?"

'राष्ट्र प्रेम, वीरता और हिन्दुत्व के कारण आपको भारी जन समर्थन प्राप्त है। आपने एक विशाल सेना तैयार कर ली, जिसमें 72

प्रमुख सरदार हैं। वसिया के युद्ध के बाद मुगलों ने आपको 'राजा' की मान्यता प्रदान की है। आपने 'कालिंजर का किला' भी जीता और मांधाता चौबे को किलेदार घोषित किया। आपने पन्ना में राजधानी स्थापित की। लेकिन राज्याभिषेक अभी तक करवाया नहीं, वह करवाएँ, ताकि इतिहास में आपका नाम दर्ज हो।''

''नहीं...नहीं हम छत्र के भूखे नहीं हैं, हमारा तो नाम ही छत्रसाल है।''

''वह तो ठीक है, लेकिन देश में एक व्यवस्था तो होनी चाहिए और उसके लिए शासक का होना आवश्यक है।''

''ओह! हम इस बारे में योगीराज प्राणनाथ जी से बात करेंगे।''

''उनसे तो बात हम कर चुके, योगीराज भी चाहते हैं कि आपका राज्याभिषेक हो।''

''ओह यह बात है!''

और फिर विक्रम संवत 1744 मे योगीराज प्राणनाथ के निर्देशन में छत्रसाल का राज्याभिषेक किया गया।

छत्रसाल बहुत दूरदर्शी थे। उन्होंने ऐसे लोगों को पहले हटाया जो मुगलों की मदद कर रहे थे। दक्षिण भारत में जो स्थान समर्थ गुरु रामदास का है, वही स्थान बुन्देलखंड में प्राणनाथ का रहा है, जिस प्रकार समर्थ गुरु रामदास के कुशल निर्देशन में छत्रपति शिवाजी ने अपने पौरुष, पराक्रम और चातुर्य से मुगलों के छक्के छुड़ा दिए थे, ठीक उसी प्रकार गुरु प्राणनाथ के मार्गदर्शन में छत्रसाल ने अपनी वीरता से, चातुर्यपूर्ण रणनीति से और कौशल से विदेशियों को परास्त किया था। प्राणनाथ छत्रसाल के मार्ग-दर्शक, आध्यात्मिक गुरु और विचारक थे। छत्रसाल एक आदर्शवादी, स्वतंत्रता प्रेमी, गुणी और धर्मनिरपेक्ष हिन्दू शासक थे। उन्होंने मुस्लिम कन्याओं को उचित सम्मान दिया, महिलाओं की रक्षा की और मुस्लिम सैनिकों को अपने सैन्य बल में सम्मानित पद देकर उनका विश्वास प्राप्त किया। छत्रसाल मुगलों के विरोधी नहीं थे, वह मुगल साम्राज्य के विरोधी थे।

छत्रसाल के शौर्य और पराक्रम से आहत होकर मुगल सरदार तहवर खाँ, अनवर खाँ, सहरूदीन, हमीद बुन्देलखंड से दिल्ली का रुख कर चुके थे। बहलोद खाँ छत्रसाल के साथ लड़ाई में मारा गया था। मुराद खाँ, दलेह खाँ, सैयद अफगन जैसे सिपहसलार बुन्देला वीरों से पराजित होकर भाग गये थे। छत्रसाल के गुरु प्राणनाथ आजीवन हिन्दू मुस्लिम एकता के संदेश देते रहे। उनके द्वारा दिये गये उपदेश 'कुलजम स्वरूप' में एकत्र किये गये। पन्ना में प्राणनाथ का समाधि स्थल है, जो अनुयायियों का तीर्थ स्थल है। प्राणनाथ ने इस अंचल को रत्नगर्भा होने का वरदान दिया था। किंवदन्ती है कि जहाँ तक छत्रसाल के घोड़े की टापों के पदचाप बनी वह धरा धनधान्य, रत्न संपन्न हो गई। छत्रसाल के विशाल राज्य के विस्तार के बारे में यह पंक्तियाँ गौरव के साथ दोहराई जाती है :

इत यमुना उत नर्मदा इत चंबल उत टोस
छत्रसाल सों लरन की रही न काहू हौस।

छत्रसाल अपने समय के महान शूरवीर, संगठक, कुशल और प्रतापी राजा थे।

6

एक बार सम्राट मुहम्मद शाह के शासन काल में प्रयाग के सूबेदार बंगश ने छत्रसाल पर आक्रमण किया। उसकी इच्छा एरच, कौच, सेहुड़ा, सोपरी, जालोन पर अधिकार कर लेने की थी। छत्रसाल को मुगलों से लड़ने में दतिया, सेहुड़ा के राजाओं ने सहयोग नहीं दिया। उनका पुत्र हृदयशाह भी उदासीन होकर अपनी जागीर में बैठा रहा। तब छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा को संदेश भेजा :

जो गति भई गजेंद्र की, वही गति हमरी आज।
बाजी जात बुंदेल की, बाजी रखियो लाज।।

जब बाजीराव को यह संदेश प्राप्त हुआ, तब वह अपना भोजन ग्रहण कर रहे थे। वह भोजन छोड़कर तुरंत उठ खड़े हुए और घोड़े पर सवार हो गए। यह देखकर उनकी पत्नी ने कहा, ''कम-से-कम आप

भोजन तो ग्रहण कर लें और तब जाएँ।''

''अगर देरी करने से छत्रसाल हार गये तो इतिहास यही कहेगा कि बाजीराव खाना खा रहा था, इसलिए देर हो गई।'' उन्होंने अपनी पत्नी को उत्तर दिया और फिर सैनिकों को निर्देश देते हुए बोले, ''क्षणभर में तैयार हो जाओ, हमें रण निमंत्रण मिला है।''

बाजीराव दल-बल के साथ वहाँ से निकल पड़े और उन्होंने रणभूमि में पहुँचते ही कोहराम मचा दिया।

तलवारों से तलवार टकरा रही थी, मुस्लिम गाजर मूली की तरह काटे जा रहे थे, इसलिए हिन्दू सैनिकों में नव उत्साह संचार कर गया था और कई वीर तो शत्रु विनाश होने के कारण अब जंग-ए-मैदान में भी यह सोचने को मजबूर थे कि अब किस म्लेच्छ को दोजख पहुँचाए, क्योंकि अधिकांश मारे गए और बचे-खुचे जान बचाने के लिए भाग रहे हैं। ऐसे में हिन्दू सेनापति ने अपने अंगरक्षक से चर्चा करनी शुरू की।

''वीर हम अब जंग अवश्य जीत जाएँगे!'' बाजीराव पेशवा ने अपने एक अंगरक्षक और योद्धा से कहा, ''क्योंकि हम देख रहे हैं कि महाराज छत्रसाल को मुक्त कराने के लिए हमारी ओर से एक वीरांगना भी शत्रुओं को गाजर मूली की तरह काट रही है।''

''इस वीरांगना की वीरता से तो मैं भी प्रभावित हूँ महाराज!''

''लेकिन यह है कौन?''

''क्या आप इनसे परिचित नहीं हैं?''

''यह महाराज छत्रसाल की धर्मपुत्री मस्तानी हैं।''

''धर्मपुत्री यानी...।''

''मुगलों की कैद से एक बार महाराज छत्रसाल को इस वीरांगना की माँ ने मुक्त कराया था, तब से यह महाराज छत्रसाल की लाड़ली बेटी बन गई।''

''और इनकी माताश्री...!''

''उन्हें भी महाराजश्री ने अपने महल में अभयदान दिया है।''

''क्या उनसे शादी की है?''

''नहीं...नहीं...ऐसा कुछ नहीं। वे तो बुंदेलों के शिवाजी हैं और छत्रपति शिवाजी के बारे में तो आप जानते ही हैं कि वे पराई स्त्री को माता के समान मानते हैं।''

''अच्छी बात है, लेकिन महाराज के हाथ अच्छा हीरा लगा है, इस वीरांगना जैसी बहादुर हमने कभी नहीं देखी!''

''महाराजश्री मैंने सुना है कि यह वीरांगना नृत्य में भी प्रवीण हैं।''

''यह तो सोने पर सुहागा जैसी बात हुई।''

''जी! साक्षात् दुर्गा का अवतार हैं।''

इस प्रकार वीरान हो चुकी युद्ध भूमि में उन्होंने काफी चर्चा की और फिर म्लेच्छों से मैदान साफ करके विजय का शंखनाद कर दिया।

साधनों के अभाव में बुन्देल नरेश वीर क्षत्रसाल प्रयाग के सूबेदार मुस्लिम आक्रांता मुहम्मद खां बंगश द्वारा पराजित हो जाते हैं। वंगश क्षत्रसाल को बंदी बना लेता है। इस बात की सूचना जब मराठा वीर बाजीराव को मिलती है, तो वह अपनी विशाल सेना लेकर क्षत्रसाल को बंगश से मुक्त करवाने के लिए निकल पड़ते हैं और बंगश से जंग के दौरान वे एक वीरांगना को निहार रहे थे और चर्चा कर रहे थे कि आखिर यह है कौन!

30 मार्च 1729 को बंगश को हरा दिया गया।

मुगल, पठान और मध्य एशियाई जैसे बादशाहों के महान योद्धा बाजीराव के हाथों पराजित हुए। निजाम-उल-मुल्क, खान-ए-दुर्रान, मुहम्मद खान ये कुछ ऐसे योद्धाओं के नाम हैं, जो मराठों की वीरता के आगे धराशायी हो गये। बाजीराव की महान उपलब्धियों में भोपाल और पालखेड का युद्ध, पश्चिमी भारत में पुर्तगाली आक्रमणकारियों के ऊपर विजय इत्यादि शामिल हैं। बाजीराव ने 41 से अधिक लड़ाइयाँ लड़ीं और उनमें से किसी में भी वह पराजित नहीं हुए। वह विश्व इतिहास के उन तीन सेनापतियों में शामिल हैं, जिसने एक भी युद्ध नहीं हारा। कई महान इतिहासकारों ने उनकी तुलना अक्सर नेपोलियन बोनापार्ट से की है। पालखेड़ का युद्ध उनकी नवोन्मेषी युद्ध रणनीतियों

का एक अच्छा उदाहरण माना जाता है। कोई भी इस युद्ध के बारे में जानने के बाद उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। भोपाल में निजाम के साथ उनका युद्ध उनकी कुशल युद्ध रणनीतियों और राजनीतिक दृष्टि की परिपक्वता का सर्वोत्तम नमूना माना जाता है। एक उत्कृष्ट सैन्य रणनीतिकार, एक जन्मजात नेता और बहादुर सैनिक होने के साथ ही बाजीराव, छत्रपति शिवाजी के स्वप्न को साकार करने वाले सच्चे पथ-प्रदर्शक थे।

4 अप्रैल 1729 को छत्रसाल ने विजय उत्सव मनाया। इस विजयोत्सव में बाजीराव का अभिनन्दन किया गया और बाजीराव को अपना तीसरा पुत्र स्वीकार कर अपने राज्य का तीसरा भाग बाजीराव पेशवा को सौंप दिया। प्रथम पुत्र हृदयशाह पन्ना, मऊ, गढ़कोटा, कालिंजर, एरिछ, धामोनी इलाका के जमींदार हो गए, जिसकी आमदनी 42 लाख रुपए थी। दूसरे पुत्र जगतराय को जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, नांदा, सरिला, इलाका सौंपा गया, जिसकी आय 36 लाख थी। बाजीराव पेशवा को काल्पी, जालौन, गुरसराय, गुना, हटा, सागर, हृदय नगर मिलाकर 33 लाख आय की जागीर सौंपी गई। जब बाजीराव का अभिनन्दन किया गया, तो उनके सम्मान-समारोह में मस्तानी ने बाजीराव की वीरता की कथा कहते हुए कथक नृत्य प्रस्तुत किया।

आज उसका कथक नृत्य कुछ अलग ही ढंग का था। उसके पाँवों की थिरकन में महान नायक की कथा के साथ-साथ मदहोशी का आलम भी था, सम्मोहन का जादू पसर रहा था और दर्शक भाव-विभोर होकर देख रहे थे। समय जैसे थम सा गया था और सब कुछ नृत्य में तिरोहित होता नजर आ रहा था। लय और लास्य की दरिया में दर्शक डूब-उतरा रहे थे। कोई भी उस दृश्य को अनदेखा नहीं करना चाह रहा था। लोगों ने इसके पहले न तो वैसा नृत्य देखा था और न वैसी नर्तकी। ऐसे में स्वाभाविक ढंग से दर्शक-दीर्घा में फुसफुसाहट होने लगी कि यह नर्तकी कौन है, आज तक तो इसे किसी ने देखा नहीं, आखिर

यह आई कहाँ से है। सभी मंत्रमुग्ध होकर नृत्य देख रहे थे। इन्हीं दर्शकों में एक नौजवान, रोबीला रणबांकुड़ा भी था, जो अपलक नर्तकी को निहारे जा रहा था। जब नृत्य समाप्त हुआ तो तालियों की गड़गड़ाहट से मंच भर उठा। लेकिन वह नौजवान तो अब भी उसे सम्मोहित भाव से ही देखे जा रहा था। उसे तो ताली बजाने की भी सुध नहीं थी। इसी दौरान नर्तकी की नजरें नौजवान की नजरों से मिलीं और ऐसी मिलीं कि दोनों तत्काल एक-दूसरे को दिल दे बैठे। पहली नजर का प्यार था वह।

आखिर वह नर्तकी थी कौन? यह नर्तकी कोई और नहीं बल्कि मस्तानी थी, जो विजयोत्सव के अवसर पर स्वयं नृत्य प्रस्तुत कर रही थी। तो क्या मस्तानी कोई दरबारी नर्तकी थी? कतई नहीं। मस्तानी कोई पेशेवर नर्तकी नहीं बल्कि बुंदेलखंड के अधिपति स्वयं महाराज छत्रसाल की धर्म पुत्री थी और जो नौजवान नृत्य के समाप्त होने पर भी मस्तानी को अपलक निहारे जा रहा था, वह था बाजीराव पेशवा, जो चौथे मराठा छत्रपति शाहूजी का प्रधानमंत्री और प्रधान सेनापति था। उस रात की महफिल के बाद बाजीराव और मस्तानी का प्रेम पंख लगाकर उड़ने लगा। वे एक-दूसरे के लिए जीने लगे, शायद दोनों की मंजिल की तलाश पूरी हो चुकी थी।

बाजीराव ने कथक नृत्य के बाद छत्रसाल से पूछा, ''महाराज यह यवन कांचनी कौन थीं।''

''हमारी धर्म पुत्री!''

''ओह!''

''और कुछ कहना चाहते हो बाजीराव...''

''जी...जी...।''

''संकोच मत कीजिए...बताइए क्या कहना चाहते हो?'' बाजीराव पेशवा और मस्तानी के बीच पनपे प्रेम से छत्रसाल भी अब अनजान नहीं थे। उन्होंने जब देखा कि बाजीराव मस्तानी की तरफ आकर्षित हैं, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे ऋण चुकाने का उन्हें एक अवसर मिल गया हो।

"दरअसल मस्तानी का कथक तो हमें अच्छा लगा ही, उससे अच्छी हमें उसकी सूरत लगी।"

"एक बात कहूँ बाजीराव!"

"कहें महाराज!"

"आप क्या मस्तानी का हाथ थामेंगे!"

"जी मैं कुछ समझा नहीं?"

"मेरे जँवाई राजा बनेंगे!"

"महाराज यह तो आपने मेरे मुख की बात कह दी।" कहते हुए बाजीराव ने छत्रसाल के पैर छू लिए थे।

हिन्दू पिता की धर्म संतान होने के कारण मस्तानी प्रणामी संप्रदाय की अनुयायी बन गई थी, जिसके संस्थापक प्राणनाथ थे। उन्होंने बाजीराव को मस्तानी से शादी करने की रजामंदी पूछी। बाजीराव पेशवा ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और दोनों पति-पत्नी की मजबूत डोर में बंध गए। छत्रसाल ने शादी में उपहार स्वरूप 33 लाख सोने के सिक्कों के अलावा अपने राज्य का एक तिहाई हिस्सा भी दे दिया। छत्रसाल ने ड्योढी महल में एक समारोह में पेशवा और मस्तानी का विवाह कराकर उन्हें पूना विदा किया।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. दर-दर की ठोकरे और घर वापसी, फरहाना ताज, संस्करण 2016

सुहागन सती सावित्री

चंपारण जिले के नरकटियागंज की कहानी है यह। यहीं विवाह होकर आई थी सावित्री। सावित्री जन्म से मुस्लिम थी, कुछ ही दिन पहले उनका परिवार मुस्लिम से हिन्दू बना था। उनके पति का नाम था वैद्यनाथ और श्वसुर का नाम धरिच्छनराम था। शादी के समय वैद्यनाथ की उम्र केवल 19 साल ही थी और सावित्री तो 15 साल की थी। सावित्री अभी कच्ची कली ही थी, यौवन के पुष्प खिले ही कहाँ थे, फिर भी आ गई सुहाग की सेज पर...सुहागरात ही थी उस दिन...दूध का गिलास लेकर सास ने भेज दिया था पति के कमरे में।

''दूध पी लीजिए!'' उसने घूँघट की आड से पति को कहा था।

''नहीं रहने दो स्टूल पर रख दो और मेरे पास आओ...।''

''ना बाबा ना मैं आपके पास नहीं आऊँगी?''

''क्यों हमारे पास क्यों नहीं आओगी, अरे हम तुम्हें विवाह कर लेकर आए हैं, भगाकर नहीं लाए, तुम तो हमारे बच्चों की माँ बनोगी।'' कहते हुए वह उसको छूने चला था।

''मुझे नहीं बनना गुलाम देश में हिन्दुओं के मुस्लिम बच्चों की माँ।'' दूर हट गई थी वह। उसे बस इतना ही पता था कि यदि मर्द औरत को होंठों से छू लेता है तो वह पेट से रह जाती है, आगे दीन दुनिया जानती ही न थी।

''गुलाम देश में हिन्दुओं के मुस्लिम बच्चों की माँ? यह तुम क्या कह रही हो सावित्री।''

''मैं सही कह रही हूँ, मैंने बस्तीराम अग्निवाण के भजन सुने हैं, उन्होंने ही कहा था कि हैदराबाद निजाम सबको मुस्लिम बना रहा है, वह कहता है मुगलों की विजय पताकाएँ फिर से कश्मीर से कन्याकुमारी

तक लहराएँगी...सब हिन्दुओं को मुसलमान बना देगा। ना बाबा ना, थूक कर चाटना मुझे पसंद नहीं...मैं दोबारा मुस्लिम बनकर मांस नहीं खाऊँगी, न ही मांसाहारी बच्चे पैदा करूँगी। उसने पवित्र वेदों पर भी प्रतिबंध लगा दिया है। मुझे तो वेदमंत्र प्रिय हैं अजान नहीं।''

''तो फिर क्या करोगी तुम?''

''मैं तो औरत हूँ ना...मैं क्या कर सकती हूँ, करना तो तुम्हें है।''

''मुझे क्या करना है?''

''जाओ निजाम का सिर काटकर ला दो, ताकि हमारे वेद बचे रह सकें और मेरी होने वाली संतान वेद मंत्र पढ़ सकें।''

''इतना आसान है क्या यह?''

''तो जाओ अपना सिर कटवा लो, एक कायर की अपेक्षा एक शहीद की विधवा होकर मरने में मुझे गर्व होगा।''

19 वर्ष का वह युवा वैद्यनाथ उसी समय निकल पड़ा था हैदराबाद के लिए...उसने मालूम किया कि उस दिन निजाम किंग कोठी में ऐश करेंगे, तो वह किसी तरह छिपता छिपाता किंग कोठी में पहुँच गया था। यहाँ तक कि निजाम के कमरे ही नहीं उसके पलंग के नीचे तलवार लेकर छिप गया था। निजाम आया कमरे में लेकिन वह बहुत सनकी था, अपने साथ दो तीन औरतें लेकर आया और उन्हें कमरे की तलाशी लेने को कहा। अब तलाशी में वैद्यनाथ पकड़ा गया। अरेस्ट करके उसे पालमूर के जंगलों में बनाई गई जेल में ले जाया गया था। वहाँ उसे तरह-तरह की यातनाएँ दी गई, इस्लाम कबूलने के लिए प्रलोभन दिया गया, लेकिन वह टस से मस न हुआ अपने धर्म पर अडिग रहा।

''तुम्हें इस्लाम कबूलने में आपत्ति क्या है?'' जेलर ने पूछा था।

''मुझे कोई आपत्ति नहीं, लेकिन मेरी पत्नी को है, वह चाहती है कि मैं निजाम का सिर काटकर ले जाऊँ।''

''छोड़ दो उस पत्नी को इस्लाम कबूल लो, यहाँ हूर की परी से तुम्हारा निकाह करवा दिया जाएगा, मैं खुद अपनी साली से तुम्हारा निकाह करवा दूँगा और घर, जमीन जायदाद सब मिलेंगी।''

''तुम खुद ही बताओ, मैं अबोध नारी का साथ कैसे छोड़ दूँ, जिसने देश और धर्म के लिए अपने मांग के सिंदूर को धर्म की बलिवेदी पर चढ़ा दिया हो।'' वैद्यनाथ ने कहा था।

फिर उसको इतनी घोर पीड़ा दी गई कि वह मरणासन्न की स्थिति में पहुँच गया और एक दिन मरा समझकर उसे जेल से बाहर जंगल में फेंक दिया गया, वहाँ कुछ हिन्दुओं ने उसे देखा, वह तो जिंदा था। उसे लाकर बेतिया अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहाँ 25 जून 1939 को उनका देहावसान हो गया। लाश घर लाई गई, सबका रो-रोकर बुरा हाल था, लेकिन सावित्री की आँखों से एक भी आँसू न निकला। औरतें कानाफूँसी करने लगी थी, कैसी रांड है पति के मरने का भी गम नहीं, चूड़ियाँ टूट चुकी थी। फिर उसने खुद ही अपने सारे जेवर उतारकर एवं जो घर के अंदर रखे थे वे भी लाकर सब मर्दो के सामने आकर अपने ससुर से कहा, ''पिताजी, उनके जाने का तुम्हें बहुत दुख है, लेकिन मैं प्रसन्न हूँ कि मैंने अपना पति देश और धर्म पर लुटा दिया, क्या मेरी अंतिम इच्छा पूरी करोगे?''

''कहो बेटी?''

''इन गहनों को बेचकर एक धर्मशाला और यज्ञशाला यहाँ गाँव में बनवा देना, वह पूरी तरह जेवर अपने ससुर को दे भी न पाई कि ससुर के पैर पकड़ते हुए जमीन पर गिर दंडवत हो गई...कुछ औरतों ने उसे उठाया, लेकिन उसके तो प्राण पखेरू उड़ चुके थे...एक ही चिता में पति और पत्नी दोनों का अंतिम संस्कार किया गया, अग्नि की लपटों और लकड़ियों के बीच उनका शरीर दिखाई न पड़ रहा था, दीपक तले अंधेरे की भाँति उनके लिए यह रात ही थी...रात ही क्यों शायद सुहागरात....कालांतर में वहाँ शहीद वैद्यनाथ की स्मृति में एक धर्मशाला का निर्माण अवश्य हुआ, लेकिन उस पर सावित्री का कहीं नाम न था।

संदर्भ

1. आर्य समाज के महाधन, लेखक स्वामी स्वतंत्रतानंद, प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान, देहली, संस्करण 1948 ई.
2. वेद वृक्ष की छाया तले, फरहाना ताज, धामा साहित्य सदन, संस्करण 2015

हवन कुण्ड में आहुति

1 जुलाई 1857 को जब कानपुर से अंग्रेजों ने प्रस्थान किया तो बहुत खुश हुई थी कुमारी मैना। तेरह साल थी उसकी उम्र। जिस व्यक्ति ने उसे गोद लिया था, वह उससे पूछ बैठी थी, ''लुटेरे अंग्रेज तो चले गए अब हमारा राजा कौन होगा?''

''तुम्हीं बताओ कौन होना चाहिए?''

''आप और कौन? आपने ही तो यहाँ से अंग्रेजों को भगाया है।''

''अच्छी बात है।'' इस प्रकार मैना के पिताश्री ने पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की तथा पेशवा की उपाधि भी धारण की।

''बापू मैंने सुना है कि पंडित तेजसिंह तिवारी अंग्रेजों को दोबारा बुलाने वाले हैं।'' मैना ने अपने पिता से पूछा।

''नहीं बेटी तुमने गलत सुना है, ऐसा नहीं हो सकता।'' बच्ची की बात का जवाब तो दे दिया, लेकिन रहा नहीं गया और वे स्वयं क्रांतिकारी पंडित तेजसिंह तिवारी के ग्राम हिरनगाँव में आकर बड़े जोश में बोले, ''पंडित जी आप इन फिरंगियों की अधीनता स्वीकार मत करना।''

उसके बाद मैना के पिता के फतेहपुर तथा आंग आद के स्थानों में अंग्रेजों से भीषण युद्ध हुए। कभी क्रांतिकारी जीते तो कभी अंग्रेज। तथापि अंग्रेज बढ़ते आ रहे थे। जब बरेली में क्रांतिकारियों की हार हुई तब मैना के पिता ने समझ लिया कि अभी आजादी पाने का सही समय नहीं आया है।

''अब क्या करेंगे आप?'' मासूम मैना ने पूछ लिया था।

''हवन करेंगे और क्या करेंगे।'' कहकर हँसे थे मैना के पिता।

जन्म दिन था मैना का...हवन करने की तैयारी हुई। एक क्विंटल तांबे का विशाल हवन कुंड तैयार करवाया था मैना के पिता ने...हवन की पूरी तैयारी हो रही थी, परंतु मैना के पिता को पता चला कि अंग्रेज भारी फौज के साथ इधर ही आ रहे हैं, तो उन्होंने वह स्थान छोड़ने का निर्णय किया, लेकिन मैना ने स्पष्ट कह दिया, ''मैं बिना हवन करे नहीं जाऊँगी?''

''बेटी हमें महल अभी छोड़ना होगा।''

''तो आप छोड़ दीजिए पिताश्री, मगर मैं नहीं जाऊँगी और यहीं हवन करूँगी।''

''मगर क्यों? ऐसे तो अंग्रेज तुम्हें मार देंगे।''

''तो क्या होगा,'' फिर गंभीर होकर उसने कहा, ''आप अपने साथियों के साथ निकल जाइए, मैं यहाँ रहूँगी तो अंग्रेज यही सोचेंगे कि आप यहीं कहीं हैं, इसलिए आप आसानी से दूर सुरक्षित स्थान पर जा सकते हैं और फिर अवसर पा पूरी तैयारी करके उन अंग्रेजों को मार भगाना।''

मैना के पिता बड़े असमंजस में थे कि उसका क्या करें? उसके पिता ने उसे समझाया कि अंग्रेज अपने बन्दियों से बहुत दुष्टता का व्यवहार करते हैं। फिर मैना तो एक कन्या थी। अतः उसके साथ दुराचार भी हो सकता था, पर मैना साहसी लड़की थी। उसने अस्त्र-शस्त्र चलाना भी सीखा था। उसने कहा, ''मैं क्रांतिकारी की पुत्री होने के साथ ही एक हिन्दू ललना भी हूँ। मैंने वेद मंत्र और रामायण और गीता पढ़ी है, मुझे अपने शरीर और नारी धर्म की रक्षा करना आता है।''

अंततः उसके पिता ने विवश होकर कुछ विश्वस्त सैनिकों के साथ उसे वहीं छोड़ दिया।

एक दिन अंग्रेज सेनापति हे ने गुप्तचरों से सूचना पाकर महल को घेर लिया और तोपों से गोले दागने लगा। इस पर मैना बाहर आ गयी। सेनापति हे नाना साहब के दरबार में प्रायः आता था। अतः उसकी बेटी

मेरी से मैना की अच्छी मित्रता हो गयी थी। मैना ने यह संदर्भ देकर उसे महल गिराने से रोका, पर जनरल आउटरम के आदेश के कारण सेनापति हे विवश था। अतः उसने मैना को गिरफ्तार करने का आदेश दिया, क्योंकि मैना को महल के सब गुप्त रास्ते और तहखानों की जानकारी थी। जैसे ही सैनिक उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़े, वह वहाँ से गायब हो गयी। सेनापति के आदेश पर फिर से तोपें आग उगलने लगीं और कुछ ही घंटों में वह महल ध्वस्त हो गया। सेनापति ने सोचा कि मैना भी उस महल में दब कर मर गयी होगी। अतः वह वापस अपने निवास पर लौट आया। पर मैना जीवित थी। रात में वह अपने गुप्त ठिकाने से बाहर आकर यह विचार करने लगी कि उसे अब क्या करना चाहिए? उसे मालूम नहीं था कि महल ध्वस्त होने के बाद भी कुछ सैनिक वहाँ तैनात हैं। ऐसे दो सैनिकों ने उसे पकड़ कर जनरल आउटरम के सामने प्रस्तुत कर दिया।

मैना के पिता पर एक लाख रुपए का पुरस्कार घोषित था। जनरल आउटरम उन्हें पकड़ कर आंदोलन को पूरी तरह कुचलना तथा ब्रिटेन में बैठे शासकों से बड़ा पुरस्कार पाना चाहता था। उसने सोचा कि मैना छोटी सी बच्ची है। अतः पहले उसे प्यार से समझाया गया, पर मैना चुप रही। यह देखकर उसे जिन्दा जला देने की धमकी दी गयी, पर मैना इससे भी विचलित नहीं हुई। अंततः आउटरम ने उसी विशाल हवन कुंड में लकड़ी, अग्नि और मिट्टी का तेल डालकर मैना को जलाने का आदेश दिया, जो उसके जन्म दिन के लिए तैयार किया गया था। निर्दयी सैनिक मोहम्मद्दीन और मीर सुलेमान ने, जो अंग्रेजों के पिट्ठू थे, उन्होंने ऐसा ही किया। तीन सितम्बर, 1857 की रात में 13 वर्षीय मैना अग्नि की लपटों में जिंदा जला दी गई और वह अग्नि तांबे के एक विशाल हवनकुंड में जल रही थी। युवा सैनिक मोहम्मद्दीन इस हृदयविदारक घटना को कभी न भूल पाया। उसने सैनिक की नौकरी छोड़कर विभिन्न धर्मो का अध्ययन किया और उसकी आस्था अग्नि पूजा के प्रति हो गई, यहाँ तक कि वह पारसी विषय का

अध्यापक भी हो गया था पंजाब के एक स्कूल में...और कालांतर में उसने स्वामी दयानंद के हाथों यज्ञोपवीत धारण करके हमेशा के लिए म्लेच्छ मजहब को तिलांजलि दे दी थी। उधर जब मैना के पिता को अपनी बेटी के बलिदान की बात पता चली तो वह बहुत दुखित हुआ और संन्यासी बन गया। उस समय मैना का पिता नेपाल के रास्ते अफगान में पहुँचकर क्रांति की नई योजना बना रहा था, वह वहाँ से थारपारकर बदीन मार्ग से मौरवी रियासत पहुँचे। और संन्यासी बनकर उपदेशों के माध्यम से हिन्दू जनता को आजादी पाने के लिए जाग्रत करने लगे। अपनी बलिदानी बेटी की धर्मनिष्ठा से ये अत्यंत प्रभावित थे। मोरवी नरेश सरवाघजी ठाकुर उनके परम भक्त हो गए थे। एक दिन जब मैना के पिता का ईश्वर ईच्छा से प्राणांत होने लगा तो उन्होंने मोरवी नरेश सरवाघजी ठाकुर को एक गुप्ती दी और अपने मरने पर उसे खोलने को कहा। अंततः मैना के पिता चल बसे। मौरवी रेलवे स्टेशन के पीछे एक आश्रम में उनकी समाधि आज भी है। मोरवी नरेश सरवाघजी ठाकुर ने जब वह गुप्ती खोली तो उसमें बहुत सा धन था, और एक पत्र, जिसमें लिखा था मैं अपना सारा धन देश को समर्पित करता हूँ इससे कोई राष्ट्रहित का कार्य किया जाए। मोरवी नरेश सरवाघजी ठाकुर ने उस धन से रेलवे लाइन डलवाकर यातायात की सुलभ व्यवस्था करवाई। जानते हो मैना के पिता कौन थे...नाना साहेब ...जी हाँ आज सारी दुनिया महान क्रांतिकारी नाना साहेब को जानती है, लेकिन उनकी बेटी मैना को कोई नहीं जानता, जिसके कारण नाना ऐसे देशभक्त संन्यासी बने, जिन्होंने लोगों को उपदेश के माध्यम से देश को स्वतंत्र कराने के लिए जागरुक किया।

संदर्भ

1. बलिदानी बेटियाँ, मधु धामा, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32, 2016
2. दयानंद सरस्वती, हिज लाइफ एंड आयडियाज, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978

एमएलए की बहन

''अरे क्या हुआ जोया।'' मौलवी मुहम्मद अली कुरैशी ने घर में अस्त-व्यस्त से कपड़ों के साथ कदम रखते हुए अपनी बदहवास सी छोटी बहन से पूछ लिया, ''तुम्हारे कपड़े कैसे फटे?''

''भाई जान!'' कहते हुए जोया मुहम्मद अली के सीने से लगकर रोने लगी थी, ''तुम्हारी बहन की इज्जत आज लुटते-लुटते बची...पंडित भोजदत्त जी...''

''पंडित भोजदत्त तो आर्य मुसाफिर विद्यालय वाले अपने ही आगरा के हैं ना...एक अखबार भी निकालते हैं, क्या किया उस काफिर ने तुम्हारे साथ...मैं उस हरामी को आज ही मौत के घाट उतार दूँगा, मुहम्मद अली कुरैशी ने रोषभरे शब्दों में कहा, ''तुम जानती नहीं क्या हम सलल्लाहू, अलैवस्स्लम हजरत मोहम्मद के कुरैशी खानदान से हैं, कुरैशी खानदान के कुछ लोग पूर्व मध्यकाल में हिन्दुस्तान में आकर बस गए थे, ताकि यहाँ इस्लाम का प्रचार किया जा सके और काफिरों का खात्मा, मैं उस काफिर को आज ही मौत के घाट...''

''नहीं भाईजान नहीं, आप इस्लाम के बहुत बड़े विद्वान हैं, मौलवी हैं प्रचारक हैं कुरान का पठन-पाठन करते और करवाते हैं, आपके मुख से क्रोध अच्छा नहीं लगता,'' फिर वह सहज भाव से बोली, ''पंडित जी तो बहुत नेक आदमी हैं, दरअसल कुछ मुस्लिम लड़के ही मेरी इज्जत को तार-तार करना चाहते थे, अचानक ही पंडित जी उस निर्जन क्षेत्र में न जानें कहाँ से आ निकले और उन्होंने तो उन गुंडों को मार-मार कर अधमरा कर दिया, मेरे कपड़े फट गए थे, उन्होंने तो अपने सिर की पगड़ी से आपके घर की इज्जत को ढका है, आप यह पगड़ी कल

उन्हें लौटा दीजिए।'' जोया ने अपने बदन से लिपटी पगड़ी उतार दी और चुनरी ओढ़ ली थी।

अगले दिन मौलवी मुहम्मद अली कुरैशी पंडित भोजदत्त जी से मिले और उनका शुक्रिया अदा किया। पंडित जी ने उन्हें चलते हुए स्वामी दयानंद सरस्वती का उर्दू में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश 'नूरे हकीकत' भेंट कर दिया। मौलवी साहब ने 'नूरे हकीकत' लाकर जोया को दे दिया और वह जब भी समय मिलता तो उसे पढ़ने लगी। उसका 13 और 14वाँ समुल्लास तो कई बार पढ़ा और फिर एक दिन अचानक ही इस्लाम को लेकर अपने ही भाई मुहम्मद अली कुरैशी से शास्त्रार्थ कर बैठी। मौलवी साहब एक विद्वान आदमी थे, वे जब पराजित हो गए तो उन्होंने भी ध्यान से सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और वैदिक धर्म अंगीकार कर लिया और अपना नाम रखा पंडित शांतिस्वरूप...इसी नाम से वे अखबारों में धर्म पर आधारित लेख लिखने लगे और एक प्रसिद्ध आदमी बन गए। एक दिन जोया ने अपने भाई से कहा, ''भाईजान आप तो पंडित शांतिस्वरूप के नाम से सारी दुनिया में छा गए,'' वह अपने भाई के साथ दिल्ली आई हुई थी, और गांधी जी के आंदोलन में भाग लेने लगी थी, अपने भाई को आजादी की जंग में कूदने के लिए उन्होंने ही तैयार किया था, ''कल की सभा में बापू (महात्मा गांधी) भी आपकी तारीफ कर रहे थे और जब आपने अपने भाषण में कुरान की आयतों का उच्चारण किया तो कुछ मुस्लिम क्या बोल रहे थे जानते हो?''

''क्या बोल रहे थे?''

''इस काफिर पंडित शांतिस्वरूप को तो मुस्लिम बनाओ, यह तो बड़ा विद्वान है सारे भारत को इस्लाम में बदल देगा,'' फिर उसने आगे कहा, ''और आर्य समाजी कह रहे थे, इसको तो आर्य समाज का प्रचारक बनाओ, यह तो सब लोगों को आर्य बना डालेगा।''

''और तुम मुझे क्या बनाना चाहती हो?''

''मैं आपको राजनेता बनाना चाहती हूँ भाईजान!''

''क्यों?''

''क्योंकि जब तक आर्य राजनीति नहीं करेंगे, तब तक न तो देश आजाद होगा और न ही वेदों का उद्धार होगा।''

''तो मुझे कहाँ से चुनाव लड़ना चाहिए?''

''मैं चाहती हूँ इस बार 1937 के चुनाव में आप हरदोई जिले से चुनाव लड़ें और वहाँ के राजा को हराकर एमएलए बन जाएँ।''

''मगर मुझे वोट देगा कौन, मुस्लिम इसलिए नहीं देंगे कि मैं वेदों का प्रचारक बन गया और हिन्दू इसलिए नहीं देंगे कि मैं हिन्दुओं में व्याप्त सामाजिक बुराइयों का खंडन करता हूँ।''

''भाईजान आप बापू से कहकर कांग्रेस का टिकट तो ले लें...फिर देखिए मेरे भाईजान की कैसी जीत होती है, सबकी जमानत जब्त न करवा दी तो मेरा नाम भी जयश्री (जोया) नहीं, ऐसा प्रचार करूँगी कि दुनिया देखती रह जाएगी।''

''अच्छी बात है बहन मैं तुम्हारी खातिर राजनीति के गंदे दलदल में भी कदम रखने को तैयार हूँ।''

इतिहास गवाह है 1937 में पंडित शांतिस्वरूप को हरदोई से एमएलए के चुनाव में रिकॉर्ड मत मिले, वे एमएलए बन गए। आर्य समाज के इतिहास में उनका नाम गर्व के साथ लिया जाता है। उन्होंने 92 वर्ष की उम्र तक वेदों का प्रचार किया। इस तरह एक इस्लाम मतावलम्बी हजरत मुहम्मद साहब के कुरैशी वंश का व्यक्ति हिन्दू धर्म में आकर वेद, उपनिषद और वैदिक सिद्धांतों का डंका बजाता है, इससे यह बात निर्विवाद सत्य सिद्ध हो जाती है कि वेदों का रास्ता ही सही है। परंतु जिस जोया यानी कि जयश्री ने उन्हें आर्य बनने के लिए प्रेरित किया, उसका इतिहास में कहीं नाम नहीं है।

संदर्भ

1. निर्णय के तट पर, प्रथम भाग, संपादक लाजपत राय अग्रवाल, अमरस्वामी प्रकाशन विभाग, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण
2. मेरा जीवन संघर्ष, पंडित शांति स्वरूप, स्वयं प्रकाशित, संस्करण 1952

अन्नपूर्णा

अभी घोर अंधेरा ही था। आसमान में बादल घिरे हुए थे। साँय-साँय करती ठंडी हवा बह रही थी। अचानक ही बादल रड़के और बिजली कड़कने लगी। चौधरी रामफल सिंह को सुनाई न देता था और दिखाई भी कम देता था। मुख पर हलके से लकवे का प्रभाव था, इसलिए बोल भी स्पष्ट नहीं पाते थे, फिर भी उन्होंने कभी संध्या व हवन न छोड़ा था। उम्र भले ही 80 के पार हो गई हो। धन से तो धनी थे ही धर्म के भी धनी थे, इसीलिए तो रात के घनघोर अंधेरे में एक हाथ में सत्यार्थ प्रकाश और दूसरे में छोटी सी लठिया उठाई और आर्य समाज मंदिर के लिए निकल पड़े। एक बार फिर जोर की बिजली कड़की और वे दिशाभ्रम के शिकार हो गए। जिस ओर आर्य समाज था, उसके विपरीत दिशा में चल दिए। मंदिर की बजाय किसी के घर का दरवाजा धिकाया था।

2

प्रख्यात संगीतकार अलाउद्दीन खान का घर यूँ तो शानदार था, लेकिन जबसे उनका संबंध अपनी पत्नी को छोड़कर किसी दूसरी औरत से हुआ था, तब से उनकी विवाहिता पत्नी मदनमंजरी और उनकी बेटी रोशनआरा खान घर की बैठक में ही सो जाती थीं। उस रात भी वे घर की बैठक में ही सोई हुई थीं। द्वार की ओर रोशनआरा की चारपाई थी। रोशनआरा की उम्र मुश्किल से 13 साल की रही होगी उस समय। मौसम खराब था...ठंडा था और माँ-बेटी अलग-अलग चारपाई पर चद्दर तानकर गहरी नींद के आगोश में गई हुई थी कि अचानक ही रात के अंधेरे में द्वार खुला और द्वार से प्रवेश करने वाला व्यक्ति

रोशनआरा की खाट से टकरा गया और रोशनआरा की छाती के दोनों उभारों पर जैसे ही उसके हाथ जा लगे, तो वह उन्हें....। रोशनआरा की नींद टूट गई और वह अचानक ही चीख पड़ी।

''क्या हुआ।'' बहन की चीख सुनकर उसका भाई अली अकबर खान और उस दिन घर में आया हुआ एक मेहमान पाशा खान अंदर से एक साथ बोले।

''चोर...चोर...।'' मदनमंजरी भी चिल्लाई थी।

चोर की बात सुनते ही पाशा खान, ने बकरा हलाल करने की छुरी उठाई और तुरंत ही घर की बैठक में आ पहुँचा था। उसने आते ही रोशनआरा के ऊपर पड़े हुए व्यक्ति पर छुरी से प्रहार कर दिया था।

एक हल्की सी चीख आई बस...तब तक मदनमंजरी ने दीपक जला दिया था। उन दिनों उनके घर में बिजली न थी। लेकिन जैसे ही दीपक जलाया तो मदनमंजरी चीख पड़ी, ''चौधरी रामफल सिंह?'' फिर पाशा खान से बोली, ''यह तो चौधरी रामफल सिंह हैं, इलाके के सबसे प्रभावशाली और धनी व्यक्ति...बुढ़ापे में दिशाभ्रम के कारण हमारे घर में घुस गए होंगे और खाट से टकराकर रोशनआरा के ऊपर गिर पड़े होंगे। तुम्हारे प्रहार से तो यह अंधा-बहरा बुजुर्ग मर गया ...या अल्लाह अब क्या होगा?''

''जो होना है अभी हो जाएगा?'' कहते हुए पाशा खान ने चौधरी रामफल सिंह का मृत शरीर अपने हाथों में उठाया और एक पड़ोसी इकबाल, जिनसे उनकी उसी दिन कहासुनी हुई थी, उनके द्वार के आगे पटक आया उसे।

सुबह सवेरे जब इकबाल की पत्नी ने घर का द्वार खोला तो क्षेत्र के सबसे धनी व्यक्ति के शव को अपने द्वार पर देखते ही चीख पड़ी। उस रात वह घर में अकेली थी और पति कहीं बाहर गए हुए थे। उसे कुछ समझ नहीं आया कि क्या करे, इसलिए घर का ताला लगाया और वहाँ वे उसी गाँव में चली गई जहाँ उसका पति गया हुआ था।

अगले ही दिन चौधरी रामफल सिंह के बेटे सुरजन ने इकबाल

और उसकी पत्नी के नाम चौधरी रामफल सिंह की हत्या के आरोप अपने प्रभाव के चलते वारंट निकलवा दिए।

3

रोशनआरा खान भारतीय शास्त्रीय संगीत शैली में सुरबहार वाद्ययंत्र (बांस का सितार) बजाने वाली एकमात्र किशोरी थी। इनके पिता अलाउद्दीन खान प्रसिद्ध 'सेनिया मैहर घराने' के संस्थापक थे। यह घराना 20वीं सदी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए एक प्रतिष्ठित घराना के रूप में अपना स्थान बनाए हुए था। जिस रात उससे सोती हुई से अंधेरे में चौधरी रामफल सिंह टकराया था, तो उनका सत्यार्थ प्रकाश वहाँ छूट गया था। हत्या के बाद चौधरी रामफल सिंह का शव तो इकबाल के द्वार पर पहुँचा दिया गया था, लेकिन उनका सत्यार्थ प्रकाश जो उर्दू में था, वहीं रोशनआरा की चारपाई पर रह गया था।

बाद में रोशनआरा खान ने वह सत्यार्थ प्रकाश अलमारी में रख दिया और समय मिलने पर उसे पढ़ने लगी कि काफिर लोगों की इस किताब में आखिर क्या है? धीरे-धीरे रोशनआरा खान ने सत्यार्थ प्रकाश कई बार पढ़ा और उसे पढ़ने के बाद उसे विश्वास हो गया कि दुनिया में जितने भी दीन और धर्म हैं वे सब लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण बनाए हुए हैं। ईश्वर तो एक ही है और मनुष्यता सबसे बड़ा धर्म है। सत्यार्थ प्रकाश के 14वें समुल्लास जिसमें कुरान की समीक्षा थी, उसे तो उसने कई बार पढ़ा और उसे विश्वास हो गया कि मात्र 1400 साल पहले दुनिया में आई कोई किताब अल्लाह की पुस्तक नहीं हो सकती...ईश्वर का संदेश और ज्ञान तो चार ऋषियों ने सृष्टि के आरंभ में ही प्रदान कर दिया था। अब उसे बेहूदा संगीत भांडों का कर्म लगने लगा था। रविन्द्र शंकर चौधरी (रविशंकर) जो एक हिन्दू युवक था, वह भी उसके पिता से संगीत की शिक्षा ले रहा था, इसलिए धर्म के मामले को लेकर रोशनआरा का रविशंकर से कई बार वाद-विवाद हुआ और रविशंकर को लगा कि इस किशोरी को तो उससे

भी अधिक वैदिक धर्म का ज्ञान है, सो उसने एक दिन उससे कह दिया, ''रोशनआरा तुम तो विदुषी हो, चलो कहीं भाग चलें।''

''भागकर क्या करेंगे?''

''शादी और क्या?''

''मैं भागकर शादी क्यों करूँ, मेरी और मेरे परिवार की कोई इज्जत नहीं है क्या इस दुनिया में?''

''अरे बाबा तुम काफिर हो गई हो, वेदों को मानने लगी हो, इसीलिए भागकर शादी करने की सलाह देता हूँ।''

''देखो पवित्र वेदों में इतनी शक्ति है कि एक दिन मैं अब्बू को भी आर्य बना दूँगी और तब करूँगी किसी आर्य से विवाह?''

''किसी आर्य से क्यों? मुझसे नहीं करोगी?''

''क्या तुम्हारी आस्था वेदों में है?''

''अरे वेदों के मुझे हजारों मंत्र कंठस्थ हैं और प्रतिदिन संध्या हवन करता हूँ।''

''ठीक है तो मैं तुमसे ही शादी करूँगी।'' उस समय रोशनआरा की उम्र मात्र 13 साल ही थी। जैसे ही उसे समय मिलता तो वह धर्म और दीन को लेकर अपने पिता से चर्चा करती और एक दिन उनके पिता ने अपनी बेटी की विचारधारा को उत्कृष्ट मान ही लिया था। तब उन्होंने आर्य समाज में रविन्द्र शंकर के बड़े भाई और आर्य समाज के प्रधान उदयशंकर की छत्रछाया में अपनी बेटी का नामकरण संस्कार दोबारा कराया और अब 14 वर्ष की उम्र में उनका नाम रखा गया अन्नपूर्णा देवी। एकमात्र भाई उस्ताद अली अकबर खान तथा बहनों शारिजा और जहाँनारा ने वैदिक धर्म अंगीकार करने इंकार कर दिया, लेकिन रोशनआरा का विरोध भी नहीं किया।

4

अन्नपूर्णा अब आर्य बन चुकी थी, इसलिए उनके मन में बार-बार यही बात याद आती रहती थी कि उनके कारण चौधरी रामफल की हत्या

हुई और उसके बदले बेचारा निर्दोष इकबाल और उनकी पत्नी कारागार में चली गई। अन्नपूर्णा का दिल इस बेइंसाफी पर कराह उठा और एक दिन उन्होंने सारी बातें चौधरी रामफल सिंह के बेटे सुरजन के घर जाकर उन्हें बता दी कि उनके पिता की हत्या कैसे हुई और उसके पीछे क्या कारण था? अन्नपूर्णा की सचाई और न्यायप्रियता के कारण सुरजन को गर्व हुआ था।

अन्नपूर्णा ने कोर्ट में सचाई बताकर निर्दोष इकबाल और उनकी पत्नी को कारागार से न केवल मुक्त कराया वरन् उन्हें अपने पिता से कुछ धनराशि भी दिलाई, भले ही उसके दूर के रिश्ते के भाई पाशा खान को हथकड़ी लग गई हों।

पाशा ने हथकड़ी लगकर जाते हुए अन्नपूर्णा से पूछा था, ''बहन आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? मैंने तो आपकी इज्जत बचाने के लिए चौधरी रामसिंह की हत्या की थी।''

''मेरे प्यारे भाई,'' अन्नपूर्णा ने कहा, ''मैं एक आर्य नारी हूँ, जिसका कर्तव्य है सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्याग करने में सर्वदा उद्यत रहना...फिर मैं निर्दोष इकबाल को कारागार में कैसे रहने देती। मेरे वेद किसी से नाइंसाफी करने की इजाजत मुझे नहीं देते।''

भाई कुछ आगे न बोला, तो अन्नपूर्णा ने ही कहा, ''आप निश्चिंत रहें, जज सचाई जानकर आपको सजा नहीं देगा।''

और हुआ भी ऐसा ही, अन्नपूर्णा की गवाही से जज भी बेहद प्रभावित हुआ और चौधरी रामफल की हत्या को दो औरतों की इज्जत की रक्षा के लिए अंधेरे में भ्रमवश उठाया गया कदम बताया गया, परंतु पाशा खान को अब तक सचाई छिपाए रखने का दोषी माना गया और उन्हें न उम्रकैद मिली और न ही फांसी की सजा, वरन् अन्नपूर्णा के तर्क-वितर्कों के कारण मात्र छह महीने की ही सजा मिली।

5

अन्नपूर्णा ने शास्त्रीय संगीत, सितार और सुरबहार (बांस का सितार) बजाना अपने पिता से सिखा था और मैहर में इनके पिता अलाउद्दीन

खान यहाँ के तत्कालीन महाराजा बृजनाथ सिंह के दरबारी संगीतकार थे। महाराजा बृजनाथ सिंह आर्य समाज के संरक्षक थे। महाराजा बृजनाथ सिंह ने ही शुद्धि संस्कार के दौरान रोशनआरा का नया नाम 'अन्नपूर्णा' रखा था।

1941 में अलाउद्दीन खान ने अन्नपूर्णा का विवाह संस्कार वैदिक विधि से रवि शंकर से करा दिया। उस समय रवि शंकर की उम्र 21 वर्ष और अन्नपूर्णा की उम्र मात्र 14 वर्ष थी। विवाह के बाद अन्नपूर्णा को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम शुभेन्द्र शंकर रखा गया। आर्य समाजी हो जाने के कारण अन्नपूर्णा देवी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को कभी भी अपने पेशे के रूप में नहीं लिया और न कोई संगीत का एलबम ही बनाया, फिर भी अभी तक इन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत से प्रेम करने वाले प्रत्येक भारतीय से पर्याप्त आदर और सम्मान मिलता रहा है।

लगभग 21 वर्षों तक वैवाहिक जीवन एक साथ व्यतीत करने के बाद अन्नपूर्णा ने एक दिन रवि शंकर से पूछा, ''मैंने सुना है कि तुम्हारे जीवन में कोई दूसरी औरत आ गई है?''

''आपने सही सुना है।''

''आपने ऐसा क्यों किया,'' वह बोली, ''आर्य तो एक पत्नीव्रता होते हैं, जैसे की भगवान राम।''

''और भगवान राम के पिता के बारे में क्या कहना चाहेंगी आप?''

''कोई संतान न होने पर एक के बाद एक कई विवाह उन्होंने संतान की लालसा में ही किए,'' फिर वे बोली, ''परंतु हमारे तो एक बेटा है ना!''

''देखो मेरी जिंदगी में अब तुम्हारी कोई जगह नहीं तुम जा सकती हो।''

''ठीक है मैं तुम्हारा घर छोड़कर जा रही हूँ, लेकिन तुम हिन्दू नहीं हो सकते...हिन्दू तो पत्नी को अर्धांगनी का दर्जा देते हैं, विवाह को

सात जन्मों का बंधन मानते हैं और तुम मुझे ठुकरा रहे हो।''

''रोका किसने है जाओ...जाओ...और कान खोलकर सुन लो अब मैं हिन्दू नहीं रहा।''

पति के ठुकराए जाने पर ये मुंबई चली गईं और वहाँ पर एकाकी जीवन व्यतीत करने लगीं एवं संगीत का शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया। जवानी तो कट सकती है, लेकिन ढलती उम्र अकेले नहीं कटा करती, इसलिए इन्होंने वर्ष 1982 में ऋषि कुमार पंड्या से पुनः विवाह कर लिया। चौधरी रामफल सिंह और जिनके कारण रोशनआरा आर्य बनी और अनेक आर्य उपदेशिकाओं को संगीत का शिक्षण दिया, उन्हें आज आर्य समाज की दुनिया में कोई नहीं जानता।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. दयानंद ने क्या दिया मुझे? अन्नपूर्णा देवी, हिन्द पाकेट बुक्स, जीटी रोड शाहदरा दिल्ली-95, संस्करण 1968
2. निर्णय के तट पर मुस्लिम विदुषियाँ, देवप्रकाश, संस्करण 1955

शहर में सन्नाटा

सन् 1962 की कहानी है यह....सरहद पर चीन ने भारत पर आक्रमण किया हुआ था और यहाँ शहर में एक नाबालिग बालिका पर बहशी दरिंदे दारोगा का हवश पूरी करने के लिए अटैक होने की आहट आने लगी थी। उस समय रात के दो बजे थे। पूरे शहर में सन्नाटा था। पुलिस थाने में बंद चोर उचक्के कोठरियों में बंदी अवस्था में ऊँघ रहे थे, जब भी सोने को होते उनके ऊपर गर्म पानी उड़ेल दिया जाता। सामने टेबल पर दारोगा बाबू अपने एक रिश्तेदार के साथ बैठे, कभी उनसे बात करते और कभी सलाखों के पीछे बंद एक 12 साल की किशोरी को घूर लेते थे। थाने में आया दारोगा बाबू का मेहमान देवबंद से उच्च शिक्षित था, जिसने आलिम फाजिल उर्दू माध्यम से किया था। वह जमायते इस्लामी हिन्द का जिला संयोजक भी था और महावत टोली के पेश इमाम और इससे पहले चंपारन बेतिया की मस्जिद में इमाम रह चुके थे। हिन्दू मुस्लिम दंगों में हिन्दुओं का सफाया करके क्षेत्र को मुस्लिम बहुल बनाना और अरेबिक धन से गरीब और लाचार हिन्दुओं का धर्म बदलवाकर उनसे इस्लाम कबूल करवाना उसका एक और पेशा था। इन शख्स का नाम था मौलाना खुर्शीद आलम खाँ...

खैर दारोगा से रहा न गया और उस किशोरी को निकाल ले आया और एक दूसरे कमरे में उसे ट्रक के टायर की हवा भरी हुई ट्यूब पर उल्टा लेटा दिया और चमड़े की बैल्ट से उसकी खाल उधेड़नी शुरू की, ''तो तू कबूल नहीं करोगी कि तूने हामिद भाई के होटल के गल्ले से 2000 रुपए चोरी किए हैं?''

''नहीं साहब, मैंने तो दो रोटी चुराई थी...''

''वह तो मालूम है रोटी तो चुराई थी बेवा और बीमार माँ के लिए...लेकिन रुपए भी तो उड़ाए थे ना...''

''नहीं साहब मैंने रुपए नहीं चुराए गायत्री माँ की कसम...''

''ओह तो गायत्री माँ के लिए रुपए चुराए थे, तुम्हारी माँ का नाम तो कटारी देवी है ना...''

''साहब गायत्री माँ तो एक वेद मंत्र है, कोई सच में मानव नहीं।''

''ओह! तू अनपढ़ गँवार चोरनी गायत्री मंत्र भी जानती है? अच्छा चल सुना दे।''

उसने गायत्री मंत्र सुना दिया, गायत्री मंत्र सुनकर दारोगा बाबू ने मौलवी की ओर देखते हुए कहा, ''तो मियाँ आज चखोगे इस कवाब का स्वाद, यकीन मानिए झूठा नहीं है, क्योंकि गायत्री मंत्र जो पढ़ती है, सुना है वेद पढ़ने वाली छोरियाँ चरित्र की पाक दामन होती हैं।''

मौलवी मुस्करा दिया और हाथ पैर बंधी लड़की के सलवार का नाड़ा एक झटके में दारोगा बाबू ने तोड़ डाला था...बेबस थी लड़की रोने लगी और रोते हुए गायत्री मंत्र का ही जाप कर रही थी और बोल रही थी, ''गायत्री माँ मुझे बचा लो...''

अचानक ही मौलवी के मन में पता नहीं क्या आया कि उसने अपनी पगड़ी उतारकर उस लड़की के ऊपर डाल दी और एक झटके से दारोगा को अलग कर दिया, ''इसे छोड़ दीजिए, यह धर्म में विश्वास करती है, यदि इस्लाम कबूल कर लेगी तो हमें नौ बार हज करने जितना शबाब मिलेगा,'' फिर उस लड़की से कहा, ''तो तुम इस्लाम कबूल करोगी?''

''नहीं साहब मैं इस्लाम कबूल नहीं करूँगी।''

''यदि इस्लाम कबूल नहीं करोगी, तो दारोगा बाबू तुम्हारी इज्जत लूट लेंगे, फिर तुम किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहोगी और बिन बिहायी माँ बन जाओगी...तुम्हारे माथे पर हमेशा के लिए कलंक लग जाएगा, लोग थू थू करेंगे तुम्हारे मुँह पर।''

''नहीं साहब मैं इज्जत और जान दोनों लुटा सकती हूँ, लेकिन

धर्म नहीं गँवा सकती, आज मैं बेबस हूँ, लाचार हूँ...मुझसे मेरा धर्म मत छीनों...मैं कँगाल हूँ, मेरे पास धर्म के सिवाय और कुछ धन नहीं है।''

''हम धर्म नहीं छीन रहे, तुमसे अल्लाह पर ईमान लाने को कह रहे हैं।''

''ऐसा ईमान लाने से तो मरना भला है?''

''यदि तुम इसलाम नहीं कबूलोगी तो हम तुम्हें कोठे पर बैठा देंगे ...'' एक बार फिर दारोगा चल पड़ा था बालिका की अस्मत पर हाथ डालने के लिए, लेकिन मौलवी ने उसे रोक दिया, ''इसे हम कल अपने घर ले जाएँगे और हम समझा लेंगे।''

मौलवी का घर तो दूसरे शहर में था, यहाँ तो रिश्तेदार के पास वह किसी काम से मिलने आया था, उस दिन रिश्तेदार दारोगा की ड्यूटी थाने में थी, इसलिए थाने चला आया था, देर रात की गाड़ी होने से...फिर वहीं थाने के पास ही दारोगा का घर भी था...घर क्या सरकारी क्वार्टर मिला हुआ था, वहीं पुलिस लाइन में...

खैर मौलवी अगले दिन उस लड़की को वहाँ से उसी के घर ले गया और उसकी वृद्ध माँ को खूब समझाया कि वह और उसकी बेटी इसलाम कबूल कर ले। दोनों माँ बेटी इसके लिए तैयार नहीं हुई तो मौलवी पास की अलमारी में रखी किताबें उलटने पलटने लगा कि ऐसा क्या पढ़ती हैं ये जो धर्म नहीं दे सकती, परंतु जान दे सकती हैं। इसी घर में उसके हाथ एक पुस्तक लगी, जिसका नाम था 'बंगाल कैसे मुस्लिम प्रांत बना!' जिस जमाने में वह किताब लिखी गई थी, उस जमाने में बिहार शायद बंगाल का हिस्सा रहा होगा, क्योंकि उसमें मौलवी के गाँव के इस्लामीकरण की भी कहानी थी। तो मौलवी को पता चला कि उसके पूर्वज मिश्र ब्राह्मण थे। एक पुस्तक उसे और मिली नूरे हकीकत यानी कि सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू रूपांतरण...वह दोनों पुस्तकें अपने साथ ले गया और माँ बेटी को कुछ पैसा देकर वहीं छोड़ गया, लेकिन जाते हुए अपने रिश्तेदार दारोगा को भी सावधान कर दिया कि उनको सताए ना...मौलवी ने नूरे हकीकत पढ़ा तो उसके

विचार बदल गए और उसने वैदिक धर्म अंगीकार करने का मन बना लिया...जब आर्य समाज के सामने उसने अपने वैदिक धर्म अंगीकार करने की बात रखी तो आर्य समाजी भी डर गए, क्योंकि मौलवी के रिश्तेदार अधिकतर पुलिस में बड़े पदों पर थे, इसलिए यदि मौलवी वैदिक धर्म अंगीकार कर लेते तो रिश्तेदार हिन्दुओं को सताते अवश्य ...पूरे बीस वर्ष तक वह भारत में भटकता रहा और हिन्दू संस्कृति पर अनुसंधान करता रहा...अंततः सितंबर 1981 में विश्व हिन्दू परिषद और आर्य समाज के एक संयुक्त कार्यक्रम में उन्होंने भारी जनसमूह के सामने वैदिक धर्म अंगीकार किया और अपना नाम रखा जयप्रकाश आर्य...और अपनी पत्नी का नाम उर्मिला आर्य और उस लड़की...जो अब अधेड़ उम्र की हो चुकी थी, उसे अपने घर लेकर आए और एक आर्य परिवार में उसका कन्यादान किया...उन्होंने वेदों का प्रचार करना शुरू किया और कई वर्ष तक वेदों का प्रचार करते रहे, लेकिन एक दिन उनके एक मुस्लिम रिश्तेदार ने अपने वाहन से टक्कर मारकर जयप्रकाश को शहीद कर दिया... उनकी विधवा पत्नी एक हिन्दू बहुल शहर में चली गई और वैदिक परंपरा के अनुसार जीवनयापन करने लगी और कभी-कभी उनके घर वह बेटी आती है, जो कभी थाने में पूर्व मौलवी को मिली थी, जिसकी उन्होंने इज्जत बचाई थी, परंतु उसके बदले उस बेटी से उसे मिला वैदिक धर्म पुरस्कार के रूप में...उस बेटी को आज कोई नहीं जानता, जयप्रकाश आर्य और उर्मिला को बहुत से लोग जानते हैं...चलिए हम उस बेटी से परिचय करवा देते हैं, उस बेटी का नाम है...मैत्रेयी...जो आजकल गाजियाबाद में रहती हैं।

संदर्भ

1. पांचजन्य साप्ताहिक, 11-10-1981, पृष्ठ 5
2. मेरा स्वर्ग संसार, मैत्रेयी, प्रकाशक सागर प्रकाशन शाहदरा दिल्ली-32

लाड़ो बसंती

लाहौर के दातागंजबख्श मोहल्ले में रहने वाली बालिका बुशरा नीरू शेख की बेटी थी। 1943 की बात है यह, जब उनके घर में पटना की जामा मस्जिद के इमाम मोहम्मद दीन मुहम्मद अतिथि के रूप में आए थे। शाम का वक्त था इमाम साहब नमाज पढ़ रहे थे कि अचानक ही उसकी नमाज में खलल पड़ गया, क्योंकि बालिका बुशरा जिसकी उम्र मुश्किल से 10 साल होगी तिक-तिक खेलती हुई हिन्दुओं का गायत्री मंत्र पढ़ रही थी। इमाम साहब ने अचानक ही नमाज छोड़ दी और बालिका के पास आकर उसका कान पकड़कर ऐंठते हुए बोला, ''यह काफिरों का मंत्र कहाँ से सीखा?''

''वेदानंद बाबा ने सिखाया है।''

''वह कौन है?''

''हमारे ही तो घर में रहते हैं किराएदार!''

''लाहौलविलाकुवत आपके घर में एक काफिर रहता है और आपको भी काफिर बना दिया,'' फिर बालिका से पूछा, ''कहाँ हैं वे इस समय?''

''ऊपर के कक्ष में!''

इमाम दीन मुहम्मद चले गए थे बाबा वेदानंद के पास, स्वामी वेदानंद जी कुछ लिख रहे थे तो दीन मोहम्मद ने पूछा, ''बाबा क्या लिख रहे हैं आप?''

''आइए बैठिए,'' उन्होंने इमाम का स्वागत किया और कहा, नई किताब ''मिरजाई और वेद'' लिख रहा हूँ।

''यह कैसी किताब है?''

''इसलाम की समालोचना है इनमें।''

''और ऐसी ही समालोचना सुनाकर एक मासूम बालिका को काफिर बना रहे हो?'' बुशरा की ओर इशारा करते हुए कहा, जो वहाँ पहुँच चुकी थी।

''देखो भाई हम तो सत्य कहते हैं और उसका ही प्रचार करते हैं, आपको भी सत्य की राह पर चलना हो तो हमसे मुबाहिसा कर सकते हो।''

''और मुबाहिसा में आप हार गए तो?'' इमाम ने कहा।

''मैं इस्लाम कबूल कर लूँगा।'' वेदानंद बाबा ने कहा, जिनका पूरा नाम स्वामी वेदानंद तीर्थ था और जो कभी लाहौर में दयानंद उपदेशक विद्यालय के मुख्य अध्यापक रह चुके थे, लेकिन इस समय किसी कारणवश एक मुस्लिम मुहल्ले में रह रहे थे।

''और चाचा आप हार गए तो,'' बुशरा ने जबान चलाते हुए इमाम से कहा, ''इस्लाम छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना पड़ेगा मेरी और मेरे अब्बू की तरह ...''

''हमें मंजूर है।'' दोनों ओर से शर्ते लिखित में मंजूर हुई और विद्वानों की एक निर्णायक समिति के सामने दोनों का शास्त्रार्थ हुआ। तीन दिनों तक वेद और कुरान पर शास्त्रार्थ हुआ और अंततः इमाम साहब पराजित हो गए और उन्होंने हार मानते हुए स्वामी वेदानंद तीर्थ के हाथों वैदिक धर्म धारण करके वेदों का प्रचार करने का प्रण लिया और कालांतर में इमाम साहब स्वामी विज्ञानंद सरस्वती के नाम से जाने गए। उन्होंने वेदों के प्रचार की धूम मचा दी और गाजियाबाद के शहर के बीच लाला शंभूदयाल ने उनसे प्रभावित होकर एक एकड़ कीमती जमीन उनको दान कर दी, जिसमें उन्होंने वेदों का अध्ययन और प्रचार करने के लिए एक आश्रम की स्थापना की।

6 मार्च 1980 को 98 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। स्वामी विज्ञानंद के कई शिष्य योग्य सांसद बने, शिक्षक बने, वैज्ञानिक

बने इसलिए उन्हें दुनियाभर में जाना गया, लेकिन बुशरा, जिनका नाम बसंतकौर हो गया था एक आर्य पंजाबी युवक से शादी के बाद, उन्हें कौन जानता है...कोई भी नहीं, शायद मैं भी जान पाती यदि उनकी आत्मकथा पर आधारित और हिन्द पाकेट बुक्स से प्रकाशित आत्मकथांश उपन्यास लाड़ो बसंती न पढ़ा होता तो...

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. शुद्धि आंदोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी, संतोष आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा, उप्र, संस्करण 2016
2. लाड़ो बसंती, हिन्द पाकेट बुक्स, 18 दिलशाद गार्डन, शाहदरा, जीटी रोड, दिल्ली-110095, संस्करण 1963

भिखारिन बा

''अब्दुल्लाह यह मैं क्या सुन रहा हूँ कि तुम्हारी यह छोकरी आर्य समाज मंदिर में हवन करने जाती है?'' जकारिया साहिब ने अब्दुल्लाह के घर की बैठक में बैठे हुए रोष भरे शब्दों में कहा, ''यह अब तक मुस्लिम क्यों नहीं बनी, इसे भी बनाइए, यदि इसे मुस्लिम नहीं बनाया गया तो इसका तुमसे कुछ भी संबंध नहीं है।''

अब्दुल्लाह ने 27 जून 1936 को नागपुर में इस्लाम कबूल किया था और 29 जून 1936 को मुंबई में इसकी सार्वजनिक घोषणा की और 1 जुलाई को यह घटना घट गई। उस पर इस्लाम का रंग चढ़ गया था और हर हाल में पूरे हिंदुस्तान को इस्लामी देश बनाना चाहता था। वह जकारिया के सवाल का कुछ जवाब नहीं दे पाया और तभी जकारिया ने अब्दुल्लाह की मासूम बेटी मनु जो उस समय किशोरी ही थी, उसकी ओर मुखातिब होकर कहा, ''क्यों तुम इस्लाम कबूल नहीं करोगी?''

''नहीं मैं इस्लाम कबूल नहीं करूँगी!''

''यदि तुम इस्लाम कबूल नहीं करोगी तो तुम्हें मुंबई चौपाटी पर बेइज्जत कर तुम्हारी बोटी-बोटी करके चील और कव्वों को खिला दी जाएगी,'' फिर वे अब्दुल्लाह की ओर मुखातिब हुए, ''अब्दुल्ला काफिर लड़कियाँ और औरतें अल्लाह की ओर से मुस्लिमों को दी गई नेमतें हैं, देखो यदि तुम्हारी बेटी इस्लाम कबूल नहीं करती तो तुम्हें इसको गुलाम समझने का पूरा अधिकार है, और जो माली पेड़ लगाता है उसे फल खाने का भी अधिकार है, यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो हम ही कुछ करेंगे। हमें हर हाल में हिन्दुस्तान को मुस्लिम देश बनाना है और पहले हम लोहे को लोहे से ही काटना चाहते हैं।'' कहकर वह चला गया था और उसी रात अब्दुल्लाह ने अपनी नाबालिग बेटी की नथ तोड़ डाली

थी। बेटी के लिए पिता भगवान होता है, लेकिन यहाँ तो बेटी के लिए पिता शैतान बन गया था। मनु को कई दिन तक रक्तस्राव होता रहा और उसे डॉक्टर से इलाज तक करवाना पड़ा, लेकिन इसी दौरान अब्दुल्लाह ने कई बार अपनी बेटी को हवश का शिकार बनाया। जब मनु पीड़ा से कराहने लगी तो उसने अपने दादा को खत लिखा, जो बापू के नाम से सारी दुनिया में प्रसिद्ध हो चुका था, लेकिन बापू ने साफ कह दिया कि इसमें मैं क्या कर सकता हूँ? इसके बाद मनु ने अपनी दादी को खत लिखा, खत पढ़कर दादी बा की रूह काँप गई, ''हाय मेरी फूल सी पौती के साथ यह कुकर्म...और वह भी पिता द्वारा...''

बा ने 27 सितंबर 1936 को अपने बेटे अब्दुल्लाह को पत्र लिखा और बेटी के साथ कुकर्म न करने की अपील की और साथ ही पूछा कि 'तुमने धर्म क्यों बदल लिया? और गोमांस क्यों खाने लगे?'

बा ने बापू से कहा, ''अपना बेटा हीरा मुस्लिम बन गया है, तुम्हें आर्य समाज की मदद से उसे दोबारा हिन्दू बना लेना चाहिए।''

''देखो मैं शुद्धि आंदोलन का विरोधी हूँ, क्योंकि स्वामी श्रद्धानंद ने संस्कृत की विदुषी सिंध की असगरी बेगम को सपरिवार हिन्दू बना दिया था। अयोध्यानाथ की पत्नी असगरी आजकल शांति देवी के नाम से प्रसिद्ध हैं...जिसके कारण सारे देश में दंगे हो गए थे। जब स्वामी श्रद्धानंद ने मलकाने में मुस्लिम राजपूतों की शुद्धि करके हिन्दू बनाने का अभियान चलाया था, तो उस अभियान को रोकने के लिए मैंने ही आचार्य बिनोबा भावे को वहाँ भेजा था और मेरे कहने पर ही बिनोबा भावे ने भूख हड़ताल की थी और अनेक हिन्दुओं को पुनः मुस्लिम बनाकर ही दम लिया था, मुझे इस्लाम अपनाने में बेटे के अंदर कोई बुराई नहीं लगती, इससे वह शराब का सेवन करना छोड़ देगा, क्योंकि इस्लाम में शराब हराम है।''

''शराब का सेवन करना छोड़ देगा,'' बा ने कहा, ''वह तो अपनी ही बेटी से बीवी जैसा बर्ताव करता है।''

''अरे नहीं ब्रह्मचर्य के प्रयोग कर रहा होगा, हम भी अनेक औरतों

और लड़कियों के संग नग्न सो जाते हैं और अपने ब्रह्मचर्य व्रत की परीक्षा करते हैं।''

''तुम्हारे और तुम्हारे बेटे के कुकर्म पर मैं शर्मिंदा हूँ।'' कहते हुए वह घर से निकल पड़ी थी और सीधे पहुँची थी आर्यसमाज बम्बई के नेता श्री विजयशंकर भट्ट के द्वार पर और आवाज लगाई थी साड़ी का पल्ला फैलाकर, ''क्या अभागन औरत को भिक्षा मिलेगी?''

विजयशंकर भट्ट बाहर आए और देखकर चौंक गए कि बा उनके घर के द्वार पर भिक्षा माँग रही है, ''माँ क्या चाहिए तुम्हें?''

''मुझे मेरा बेटा लाकर दे दो, वह विधर्मियों के चँगुल में फँस गया है और अपनी ही बेटी को सता रहा है।''

''माँ आप निश्चित रहें आपको यह भिक्षा अवश्य मिलेगी।''

''अच्छी बात है, जब तक मैं अपने घर नहीं जाऊँगी।'' कहते हुए बा ने उनके ही घर में डेरा डाल लिया था।

श्री विजयशंकर भट्ट ने अब्दुल्लाह की उपस्थिति में वेदों की इस्लाम पर श्रेष्ठता विषय पर दो व्याख्यान दिए, जिन्हें सुनकर अब्दुल्लाह को आत्मग्लानि हुई कि वह मुस्लिम क्यों बन गया। फिर अब्दुल्लाह को स्वामी दयानंद का सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया गया।

और जल्द ही बम्बई में खुले मैदान में हजारों की भीड़ के सामने, अपनी माँ कस्तूरबा और अपने भाइयों के समक्ष आर्य समाज द्वारा अब्दुल्लाह को शुद्ध कर वापिस हीरालाल गांधी बनाया गया। महात्मा गांधी को जब यह पता चला तो उन्हें दुख हुआ कि उनका बेटा क्यों दोबारा काफिर बन गया और उन्होंने अपनी पत्नी बा को बहुत डाँटा कि तुम क्यों आर्य समाज की शरण में गई...''

''क्यों न जाती आर्य समाज की शरण में, आपने तो कुल और संस्कृति दोनों ही कलंकित कर रखी है।''

''मैंने क्या किया है?''

''ये पूछो क्या नहीं किया तुमने?'' बा भावुक हो गई थी, ''9 मई को सुशीला के साथ तुम सोए और ब्रह्मचर्य के प्रयोग के नाम पर उसे

अपने संग नंगा सुलाया और उसके साथ क्या किया कि वह आत्महत्या तक करने का प्रयास कर चुकी है...आखिर क्या किया था उसके संग तुमने।''

''मैंने महापाप किया था कि एक युवती को अपने संग नंगा सुलाया, लेकिन कोई अधर्म नहीं किया उसके साथ।''

''यह अधर्म नहीं है, तो फिर तुम्हारे बेटे ने अपनी बेटी और मेरी पौत्री मनु के साथ जो कुकर्म किया वह भी तुम्हारी दृष्टि में पाप नहीं है और प्यारेलाल ने भी एकांत पाकर बड़ी मनु के साथ गंदी हरकत करने का प्रयास किया और उसे ब्रह्मचर्य के प्रयोग का नाम दिया, बिलकुल तुम्हारी तरह...क्या वह पाप नहीं था?''

''प्यारेलाल को तो मैंने डाँट दिया था कि बड़ी मनु की सहजता खो गई है, उसके संग ब्रह्मचर्य प्रयोग मत करना,'' फिर बापू बोले, ''लेकिन वह शादी करना चाहता है...छोटी मनु से नहीं, वरन् बड़ी मनु से...जो मेरे दूर के चाचा की प्रपौत्री जयसुखलाल की बेटी है, 17 साल की वह बच्ची बहुत सीधी-सादी है, मेरा आदेश बहुत मानती है और मेरे कहने पर मेरे संग हर दिन नग्न सो जाती है।''

''तुमने बड़ी मनु के साथ ब्रह्मचर्य प्रयोग क्यों किया?'' बा ने कहा, ''एक किशोरी ही नहीं कई अन्य क्वारी लड़कियों को भी अपने संग नंगा क्यों सुलाते हो आखिर तुम? तुम्हारी राह पर ही तुम्हारा बेटा भी चल रहा है। तुम्हारा बेटा कहता है कि जब दादा पौत्री को नंगा करके अपने संग सुला सकता है तो मैं क्यों नहीं, लेकिन हीरा और चार कदम आगे निकल गया, वह मुस्लिम बन गया और उसने अपनी बेटी को काफिर समझकर उसके संग नीचता का व्यवहार किया, यदि तुम्हारी तरह ही मैं भी ब्रह्मचर्य प्रयोग करने लगूँ और गैर मर्दों संग नंगी सोने लगूँ तो तुम्हें कैसा लगेगा?''

''एक पतिव्रता नारी को ऐसा कहते शर्म नहीं आती कि वह पराए मर्दों संग नंगी होकर सोने की बात करती है?''

''मैंने तो केवल बात की और तुम तो क्वारी लड़कियों के संग

नग्न होकर सोते हो? तुम्हें शर्म नहीं आती पत्नी के होते? पत्नी अकेली बिस्तर पर रातभर करवटें बदलती रहती है और तुम्हें उसकी परवाह तक नहीं कि उसके भी दिल में कुछ अरमान हैं। अन्न और जल के सिवाय उसके अपने शरीर की कुछ और जरूरतें भी होंगी?''

''बुढ़ापे में सठिया गई हो क्या?''

''सठिया तो तुम गये हो बुढ़ापे में।''

बा को पति की प्रताड़ना से दुख पहुँचा और वह बीमार रहने लगी।

कस्तूरबा को ब्रॉन्काइटिस की शिकायत होने लगी थी, एक दिन फिर उन्हें दो दिल के दौरे पड़े और इसके बाद निमोनिया हो गया। इन तीन बीमारियों के चलते बा की हालत बहुत खराब हो गई। डॉक्टर चाहते थे बा को पेंसिलिन का इंजेक्शन दिया जाए, लेकिन वह इंजेक्शन उस समय भारत के किसी अस्पताल में नहीं था। बात गवर्नर तक पहुँची और उन्होंने विशेष जहाज द्वारा विलायत से इंजेक्शन मँगाया। लेकिन बापू इसके खिलाफ थे कि इंजेक्शन लगाया जाए। बापू इलाज के इस तरीके को हिंसा मानते थे और प्राकृतिक तरीकों पर ही भरोसा करते थे। बा ने कहा कि अगर बापू कह दें तो वो इंजेक्शन ले लेंगी। लेकिन बापू ने कहा कि 'वो नहीं कहेंगे, अगर बा चाहें तो अपनी मर्जी से इलाज ले सकती हैं।' बा बेहोश हो गई और बापू ने उनकी मर्जी के बिना इंजेक्शन लगाने से मना कर दिया। एक समय के बाद गांधी ने सारी चीजें ऊपरवाले पर छोड़ दीं। 22 फरवरी 1944 को महाशिवरात्रि के दिन बा इस दुनिया से चली गईं।

कालांतर में छोटी मनु का विवाह एक कपड़ा व्यवसायी सुरेन्द्र मशरुवाला से हुआ था, जो आर्य समाजी थे और जिस दिन वे ससुराल में चली तो पिता ने यही कहा था, ''बेटी मुझे क्षमा कर देना।''

हर बाप अपनी बेटी का कन्यादान करके रोता है, लेकिन वे खुशी के आँसू होते हैं, परंतु हीरालाल गांधी के आँसू खुशी के नहीं प्रायश्चित के थे।

''आकाश कहाँ तक है उसकी कोई थाह नहीं है और मैं अपने पंखों से उड़कर कहीं भी जा सकती हूँ, यह मेरी योग्यता पर निर्भर करता है, उड़ते हुए मुझे पीछे नहीं देखना है।'' उसने क्षमा किया या नहीं नहीं पता, लेकिन विदाई पर पिता से यही कहा था।

अब्दुल्लाह से हीरालाल बने बापू के पुत्र स्वामी श्रद्धानंद शुद्धि सभा के कार्यकर्ता बन गए और मरते दम तक गैर हिन्दुओं को हिन्दू बनाने के कार्यक्रम से जुड़े रहे, लेकिन उनकी गर्दन कभी ऊँची नहीं हुई, जबकि मनु का चेहरा हमेशा खिला रहता था और उन्होंने समाज सेवा को अपना कर्म बना लिया था। मनु का रिश्ता महाराष्ट्र राज्य बाल विकास परिषद और सूरत के कस्तूरबा सेवाश्रम से रहा है। मनु की बेटी उर्मि डॉक्टर बनी और अहमदाबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के प्रोफेसर भूपत देसाई से उनका विवाह हुआ, उनके दो बच्चे हुए - मृणाल और रेनु। बापू, जिसको आजकल महात्मा गांधी कहते हैं, उन्हें सारी दुनिया जानती है, लेकिन मनु को कोई नहीं जानता, जिन्होंने दुष्ट पिता को भी कुधर्म की लत छुड़ाकर वेदों के रास्ते पर लाकर माफ कर दिया था।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, वाल्यूम 86, 93 और 94, पब्लिकेशंस डिवीजन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 2001
2. गांधी के ब्रह्मचर्य प्रयोग, शंकर शरण, राजपाल एंड संस, 1590 मदरसा रोड, कश्मीरी गेट दिल्ली-6, संस्करण 20013
3. आर्य सेवक मासिक, नागपुर, जनवरी 2016
4. अपनी बेटी से दुष्कर्म करने पर बड़े बेटे हरिलाल से आहत थे बापू : दैनिक जागरण, 15 मई 2014, दैनिक भास्कर, 1 अक्टूबर 2015

किताब का हिस्सा

अभी, कुछ समय पहले आसमान एकाएक ही साफ हो गया था, पर एक दरार बीच में पड़ गई थी...ब्रिटेन के कुशल राजनीतिज्ञों द्वारा निर्मित सफल दरार।...भारत आजाद हुआ, पर एक दरार आकाश के बीच उगाकर। भारत और पाकिस्तान-आकाश एक, पर विभाजित आकाश। पंजाब का वह हिस्सा जो आजकल हरियाणा कहा जाता है वहाँ से सब लोग पाकिस्तान जा रहे थे, लेकिन एक पागल सी मुसलमानी जमीला भयभीत थी कि वह अपनी घर गृहस्थी छोड़कर पाकिस्तान कैसे जाएगी। दंगों से बचने के लिए अपनी बकरियाँ और बेटे को लेकर जंगल में ही रहने का उसने फैसला किया, वहीं फल-फूल कंद-मूल खाकर रहने लगी। जंगल में उसे एक फटी पुरानी किताब मिली, जो उर्दू भाषा में थी, उसने सोचा कि पाक कुरान है, किसी काफिर ने इसकी बेअदबी की है। उसने उसे माथे से चुमा और अपने नाबालिग बेटे को पढ़ने के लिए दिया। जंगल में और तो कुछ काम था नहीं बस वह किताब पढ़वाकर सुनने लगी। किताब के आखिर के पन्ने ही थे।

''मुंशी यह क्या बक रहे हो? सही-सही सुनाओ? कुरान के बारे में ऐसा नहीं कहते?''

''क्या हुआ अम्मी?''

''तुम कुराने पाक की आयत सुनाते हो और फिर उसका खंडन करते हो?''

''अम्मी यह खंडन इसी किताब का हिस्सा है।''

''अच्छा क्या नाम है इस किताब का?''

''नूरे हकीकत और इसके लेखक हैं स्वामी दयानंद।''

''अच्छा सुना इस काफिर ने क्या-क्या बका है कुराने पाक के बारे में...''

फिर वह बार-बार उस ग्रंथ को सुनने लगी और एक दिन अचानक ही बेटे से बोली, ''बेटा अब हमें पाकिस्तान जाने की जरूरत नहीं है?''

''क्यों अम्मी जान?''

''हम यहीं रहेंगे, यही हमारा देश है और ये सब लोग हमारे ही हैं।''

''आप कहना क्या चाहती हैं अम्मी!''

''बेटा इस किताब को सुनकर मेरी समझ में आ गया अल्लाह की असली किताब वेद हैं...वेदों में बुतपरस्ती की बू तक नहीं और मैं तुझे वेदों का प्रचारक बनाऊँगी, लोहे को लोहा काटता है मैंने इन बुतपरस्त काफिरों से निपटने के लिए सोच लिया है।''

''मैं कुछ समझा नहीं अम्मी।''

''आज से मैं हिन्दुआनी बन गई और तुम हिन्दू, अब हमें गाँव में रहने से कोई नहीं रोकेगा।''

''आप क्या कह रही हैं अम्मी।''

''मैं सही कह रही हूँ, चलो घर न...''

और फिर वे घर चल दिए। रोहतक जिले के फरमाना गाँव की कहानी है यह...उस औरत ने आग जलाकर उसमें सुगंधित पदार्थ डाले और अपने बेटे के गले में एक धागा यानी यज्ञोपवीत डाल दिया और उसका नाम रखा मनुदेव और गुरुकुल झज्जर में अपने बेटे को भेज दिया, जहाँ उन्होंने संस्कृत, व्याकरण महाभाष्य, उपनिषदों आदि का गहन अध्ययन किया। कालांतर में जमीला का बेटा जो एक मुस्लिम गडरिया की संतान था, स्वामी सत्यपति के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 7 अप्रैल 1970 को उन्होंने स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक के निर्देशन में संन्यास ग्रहण करके वेदों का प्रचार सारी दुनिया में करने का संकल्प लिया। उन्होंने मोरिशस, गुयाना, अफ्रीका आदि देशों में वेदों का प्रचार

किया और योग पर कई पुस्तकें लिखीं, सात समुद्र पार, सरल योग उनकी ये दो प्रसिद्ध पुस्तकें हैं, इन्होंने कई इसाइयों को अफ्रीका में हिन्दू बनाया और वेदों का प्रचार ये 87 वर्ष की उम्र तक करते रहे। आर्य समाजी स्वामी सत्यपति का नाम बड़े आदर से लेते हैं, लेकिन उनकी माँ जमीला बेगम को कोई नहीं जानता।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. मेरा संक्षिप्त जीवन चरित्र, स्वामी सत्यपति परिव्राजक, आर्यवन रोजड से प्रकाशित, संस्करण 2001
2. मुस्लिम विद्वानों के संग में, स्वामी आनंद बोध सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली, संस्करण 1982

न्याय हम करेंगे

''पंडित भोजदेव तुम पर आरोप है कि तुम सरकारी ड्यूटी के समय धर्म का प्रचार करते हो और मुस्लिम एवं इसाई लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाते हो? क्या यह सही है?''

''जज साहब! जो लोग किसी कारणवश विधर्मी हो गए उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में वापस लाना क्या अपराध है?''

''हाँ, सरकारी ड्यूटी के वक्त ऐसा करना अपराध है।''

''लेकिन सरकारी ड्यूटी के समय मैं उन्हीं लोगों को समझाने की कोशिश करता हूँ, जिन्हें सरकारी नौकरी का लालच लेकर विधर्मी बनाया गया है।''

''ओह तो तुम अपना गुनाह कबूल करते हो?''

''जी!''

''तुम्हें इस जुर्म में छह महीने की सजा दी जाती है।''

''जज साहब, एक बात कहूँ?''

''कहिए?''

''मैंने सुना है आप कट्टर मुस्लिम हैं और जो लोग हिन्दू से मुस्लिम बनते हैं आप उनकी अच्छी नौकरी लगवा देते हैं।''

''क्या बकते हो, तुम्हें एक हजार रुपए का आर्थिक दंड और दिया जाता है।''

''मुझे मंजूर है।'' और फिर उसे पुलिसवालों ने अरेस्ट कर लिया और जेल में ले गए। यह थे पंडित भोजदत्त आर्य मुसाफिर आगरा के जो वेदों का प्रचार और घर वापसी कार्यक्रम हिन्दू महासभा के मंच से चलाते थे।

इस मजिस्ट्रेट के सामने छह महीने बाद एक और मुकदमा आया। एक युगल दंपत्ति ने अदालत से पुलिस संरक्षण की माँग की। दअसल पति हिन्दू और पत्नी मुस्लिम थी, जिनकी शादी के खिलाफ कट्टरपंथी मुस्लिमों ने फतवा जारी कर दिया था। उस युवती का नाम था अनवरी बेगम, जिसने अपना नाम बदलकर अंगूरी रख लिया था।

''एक काफिर के साथ शादी करके तो तुम काफिर हो गई? क्या तुम नहीं जानती कि किसी मुस्लिम युवती या युवक का इस तरह विवाह करना इसलाम के खिलाफ है?'' मुस्लिम जज ने सीधे से सवाल पूछा।

''जी नहीं, मैं इनसान बन गई! मैं प्रेम या वासना में काफिर नहीं हुई, मैंने सत्यार्थ प्रकाश और वेदों का अध्ययन करने के बाद अपने मूल धर्म में वापसी की है, जिसका मेरे परिवार वाले विरोध कर रहे हैं।''

''अच्छा सत्यार्थ प्रकाश...क्या लिखा है उसमें...हम भी उसे पढ़ेंगे और पढ़कर ही तुम्हारे साथ हम इंसाफ करेंगे। तब तक तुम नारी निकेतन में रहोगी और तुम्हारा पति पुलिस हिरासत में...हम नहीं चाहते कि शहर में सांप्रदायिक दंगे भड़कें?''

इन मुस्लिम जज ने कई सप्ताह तक सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया और फिर अचानक ही हिन्दू महासभा, आगरा के कार्यालय पहुँचे और पंडित भोजदत्त जी के सामने अपने को हिन्दू बनाने का प्रस्ताव रखा....

पंडित जी अचंभित थे...लेकिन अगले ही दिन जज के घर के सामने जो नेम प्लेट लगी उस पर लिखा था : राय साहिब ठाकुर बलवन्त सिंह जी आनरेरी मजिस्ट्रेट....

उनके पूर्वज कभी ठाकुर ही थे और वे पुनः ठाकुर बन गए, राय बहादुर की उपाधि उन्हें अंग्रेज सरकार ने दी थी चमचागिरी करने और कुछ क्रांतिकारियों को सख्त सजा सुनाने के पुरस्कार में...परंतु हिन्दू धर्म अंगीकार करने के बाद इनकी नौकरी फिर भी बनी रही और यदि किसी गवाह ने उनकी अदालत में यह कह दिया कि वह आर्य समाजी

है और अमुक व्यक्ति निर्दोष है तो उस आरोपी को तुरंत छोड़ देते थे ...हर आर्य समाजी उसकी दृष्टि में सत्यवादी, न्यायकारी और राष्ट्रभक्त था अब, राय साहिब ठाकुर बलवन्त सिंह जी आनरेरी मजिस्ट्रेट के अनेक फैसलों के किस्से पुराने जमाने के आर्य समाजियों की जुबान पर आज तक हैं, उन जैसा जज न्यायकारी भारत में दूसरा नहीं हुआ.... लेकिन उस अनवरी बेगम को कोई नहीं जानता जिनके कारण उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा, वेद पढ़े और मुस्लिम से मानव धर्म वैदिक मत अंगीकार किया।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. न्याय की बलिवेदी पर, ठाकुर बलवंत सिंह, संस्करण 1958
2. निर्णय के तट पर, प्रथम भाग, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण

मछली पर दया

अमृतसर की कहानी है यह...नरगिस यहीं विवाह होकर आई थी...कभी कभी उसका भाई अब्दुल लतीफ अपनी बहन से मिलने आता था...इस बार भी आया था...तो भाई के लिए बहन ने बाजार से जिंदा मछली मँगवाई और उसे छिलने लगी...मछली तड़प रही थी और वह छील रही थी...भाई ने कहा, ''बहन तुझे इस मछली पर दया नहीं आती।''

''क्या तुम आर्य समाजी हो गए, जो ऐसी बात करते हो भाईजान!''

''आर्य समाजी वे कौन लोग होते हैं?''

''बुतपरस्ती करते नहीं और शाकाहारी होते हैं...काफिरों की तरह ...उन्हीं की एक जात है।''

''तुम उनके बारे में कैसे जानती हो?''

''यहाँ मौलवी साहब से उनका शास्त्रार्थ हुआ था, वहीं से मैं नूरे हकीकत यानी कि सत्यार्थ प्रकाश लाई थी, अलमारी में रखा है पढ़ ले तु भी, बड़ी अच्छी किताब है भाईजान...।''

अब्दुल लतीफ उर्दू, फारसी और अरबी पढ़ा हुआ था और मौलवी फाजिल तक के विद्यार्थियों को पढ़ाता था, उसने वह नूरे हकीकत जिसके लेखक स्वामी दयानंद सरस्वती थे, उसको पढ़ा और 1912 में उसने निष्कर्ष निकाला कि वेद ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, इसका प्रचार-प्रसार करना चाहिए। अब अब्दुल लतीफ ने अपना नाम देवप्रकाश रख लिया, यह नाम भी उसकी बहन ने उसका रखा था।

वह शास्त्रार्थ करने लगा, सबसे पहला शास्त्रार्थ उसका श्रद्धानंद फिल्लौरी से हुआ, जिन्होंने ओम जय जगदीश हरे की आरती लिखी थी,

उसमें फिल्लौरी जी हार गए और उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वेद ही ईश्वर की एकमात्र वाणी है, लेकिन उसमें मूर्तिपूजा नहीं। फिर उन्होंने 1936 में तीन महमदियों से ऐतिहासिक मुबाहिसा यानी कि शास्त्रार्थ किया और सिद्ध कर दिया कुरान अवैज्ञानिक ग्रंथ है, ईश्वरीय किताब नहीं, इसके बाद तो ये मुस्लिमों के पीछे हाथ धोकर पड़ गए और इन्होंने कुरान परिचय के नाम से 800 पृष्ठों का एक ग्रंथ तैयार किया, जिसमें कुरान और हदीसों का खंडन है। मंदिरों की लूट भी इनकी प्रसिद्ध रचना है, जो फारसी ग्रंथों के आधार पर लिखी गई है। 29 अक्टूबर 1972 को पौराणिकों ने इन्हें सार्वजनिक सभा में सम्मानित किया।

91 वर्ष की उम्र में ये वेदों का प्रचार करते हुए दयानंद मठ, दीनानगर, पंजाब में इस संसार छोड़कर चले गए। मुस्लिमों की अतार्किक बातों का खंडन करने के लिए कुरान परिचय ग्रंथ को आज अनेक हिन्दू पढ़ते हैं और सोचते हैं कि यह किसी महान हिन्दू विद्वान की लिखी हुई है, वे नहीं जानते कि इसके लेखक देवप्रकाश जन्म से मुस्लिम थे और नरगिस के कारण आर्य बने थे...प्यारी नरगिस की उपेक्षा क्यों? जो बुढापे में अपने बच्चों के साथ वैदिक धर्म की शरण में आई और देवप्रकाश जैसा भाई हिन्दू समाज को दिया।

elibraryaryasamaj.org

संदर्भ

1. मंदिरों की लूट, देवप्रकाश, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाजियाबाद, संस्करण 1982
2. मुस्लिम विदुषियों की घर वापसी, राहुल आर्य, संस्करण 2016
3. दैनिक हिन्दुस्तान, 30 अक्टूबर 1972

हाथ से निकला लाहौर

गोरखपुर की बेटी की कहानी है यह! यहीं पढ़ती थी लता कक्षा पाँच में...रामखिलावन के पड़ोसी जगमाल की बेटी थी वह। रामखिलावन भडभुजे यानी कि चने और मक्का भूनने का काम करता था। था बेचारा अनपढ़। गोरखपुर में दयानंद स्वामी आए तो उन्होंने उनका उपदेश सुना और वहाँ से सत्यार्थ प्रकाश खरीद लिया, लेकिन अनपढ़ थे सो पढ़ते कैसे। उसने जैसे ही समय मिलता लता को चने देकर बहकाया कि वह उसे इस किताब को थोड़ा-थोड़ा पढ़कर सुना दे...पहले दिन उसने थोड़ा पढ़कर सुना दिया। बच्चे तो बच्चे होते हैं, अगले दिन उसने अपने सहपाठियों से कहा कि रामखिलावन को पढ़ना नहीं आता और उनके पास एक किताब है, जो उसे पढ़कर सुनाता है वह उसे भुने हुए चने देता है। फिर क्या था, कई बच्चे जाने लगे किताब पढ़ने के लिए...उनमें से एक था अब्दुल रहमान...बेचारा गरीब था कई बार खाना भरपेट नहीं मिलता था इसलिए सबसे पहले पहुँच जाता रामखिलावन को उसकी किताब पढ़कर सुनाने के लिए...किताब पढ़ते-पढ़ते पुनर्जन्म और कर्मफल की बात उसकी समझ में बैठ गई कि कर्मफल भुगतना है तो बार-बार जन्म लेना ही पड़ेगा, जबकि उसके मजहब में पुनर्जन्म को मान्यता थी नहीं, इसलिए अब्दुल रहमान की लता से इस विषय को लेकर बहस हो गई...बातों-बातों में लता ने उसे हरा दिया कि बुद्धू सुना है कलवा डाकू के बारे में उसने बहुत बुरे काम किए हैं और पुलिस ने उसे मार दिया...लेकिन कलवा ने जिन लोगों को सताया था, उन बुरे कर्मो का फल तो उसे मिला ही नहीं, इसलिए वह जन्म लेकर उनका फल जरूर भोगेगा...फिर उसने एक कहानी सुनाई कि मक्का में एक

शिव की पिंडी है, जहाँ तुम लोग हज करने जाते हो और यदि किसी दिन वहाँ जाकर किसी हिन्दू ने गंगाजल चढ़ा दिया तो उस दिन सारे मुस्लिम मर जाएँगे। अब्दुल रहमान शाकाहारी बन गया और उसने कसम खाई कि वह मक्का जाकर शिव की पिंडी पर एक दिन अवश्य ही गंगाजल चढ़ाएगा।

धीरे-धीरे वह बड़ा होता गया और इस्लाम का गहन अध्ययन करके मौलाना बन गया, उसके पिता भी एक मस्जिद में मौलाना ही थे। लेकिन बचपन की बातें...और लता की एक काल्पनिक सी कहानी उसे परेशान किया करती, इसलिए उसने पासपोर्ट बनवाया और 1917 से पूर्व तीन बार हज की। इसके बाद बचपन की साथी लता की मदद से उसे ईरान के भारतीय दूतावास में दुभाषिये की नौकरी मिल गई। यहाँ एक ईरानी लड़की जो टाइपिस्ट थी, उससे अब्दुल रहमान ने निकाह पढ़ लिया और 25 अगस्त 1920 को अब्दुल रहमान को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। लेकिन वे तो कुछ और उधेड़बुन में थे और बचपन की बातें और पढ़ा गया सत्यार्थ प्रकाश उन्हें याद आता रहा, इसलिए योजना बनाकर 1925 से लेकर 1931 तक वह अरब में रहा और वहाँ उसने इस्लाम पूर्व अरब के धर्म पर अध्ययन किया...तो जगह-जगह उसे वहाँ प्राचीन वैदिक संस्कृति के अवशेष ही नजर आए। अब वापस आकर उसने अपनी पत्नी से वैदिक धर्म अंगीकार करने की इच्छा प्रकट की तो वह नहीं मानी और दोनों के बीच तलाक हो गया।

मौलाना हाजी अब्दुल रहमान भारत चले आए और उन्होंने हनुमानगढ़ आर्य समाज में मोहनलाल जी एवं तमाम अन्य लोगों की उपस्थिति में वैदिक धर्म अंगीकार करके अपना नाम ज्ञानेंद्रदेव सूफी रख लिया और वेदों का प्रचार करने लगे। ईरानी पत्नी कालांतर में अपने बेटे को लेकर पाकिस्तान चली गई और उनका बेटा आगाशाही के नाम से बाद में पाकिस्तान का विदेशमंत्री बना। ज्ञानेंद्रदेव ने भारत में दूसरा विवाह किया, जिससे उनके 2 पुत्र और 1 पुत्री का जन्म हुआ। उन तीनों के विवाह हिन्दू समाज में हुए और सभी धर्मनिष्ठ वैदिक धर्म के

अनुयायी हैं। अपनी अरब यात्रा के अनुभवों पर ज्ञानेंद्रदेव ने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है अरब का कदीमी मजहब, हिन्दी एवं अरबी में यह पुस्तक 1925 में वैदिक प्रकाशन चावड़ी बाजार से एवं बाद में अमर स्वामी प्रकाशन गाजियाबाद से हिन्दी में छपी।

इसके बाद 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ और शिमला समझौते के दौरान पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल के साथ उनका पुत्र आगाशाही भी आया था, तो पंडित ज्ञानेंद्रदेव की उनसे भेंट हुई, ''अब्बू आप पाकिस्तान क्यों नहीं आ जाते!'' उन्होंने अपने पिता को पाकिस्तान का नागरिक होने का आमंत्रण दिया था।

''और आप भारत में ही क्यों नहीं रह जाते, यहाँ वेदों के मधुर मंत्र, मंदिरों की शंख ध्वनियाँ हैं और आपके पूर्वजों की यादें।''

''एक शर्त पर यदि भारत को इंदिरा गांधी हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दें, देखिए अब्बू भारत का पलड़ा बहुत भारी है। लेकिन इंदिरा ने जीत के बावजूद भी हार मान ली है, खैर हमारा तो देश टूट ही गया, लेकिन हम तो यह मानकर आए थे कि लाहौर भी भारत को देना पड़ेगा, इसलिए लाहौर हमने हिन्दुओं के लिए खाली कर दिया था, लेकिन... कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता की नीति पर चलकर इसे एक दिन मुस्लिम राष्ट्र बनवा देगी, तब यहाँ न रहेंगे वेद और न रहेंगी शंख ध्वनियाँ...।''

''तो आप पितृऋण नहीं चुकाओगे?''

''अब्बू मैं पितृऋण चुकाने को तैयार हूँ, पाकिस्तानी संसद में अल्पसंख्यक हिन्दुओं का हिमायती मैं ही पाकिस्तान में अकेला हूँ...तभी तो कह रहा हूँ इंदिरा को मना लें हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दें और बंगलादेश के साथ-साथ लाहौर की माँग भी रखें...।''

''लेकिन हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए सांसदों का साथ जरूरी है।''

''सांसदों को छोड़िए, यहाँ शिमला में घोषणा करवा दें...यकीन मानिए दोनों देशों की दुश्मनी हिन्दुस्तान के हिन्दू राष्ट्र बनते ही खत्म हो जाएगी और लाहौर भी आपका...''

हे इंदिरा तुने बंगलादेश बनवाकर एक और मुस्लिम राष्ट्र बनवा

दिया, काश तुम पाकिस्तान से लाहौर भी झटक लेती...

आज ज्ञानेंद्रदेव को सब जानते हैं, उनकी पुस्तक हजारों लोगों ने पढ़ी है कि किस तरह अरब में वेदों और वैदिक सभ्यता के अवशेष हैं, लेकिन उस लता को कोई नहीं जानता, जिसके कारण मौलाना हाजी अब्दुल रहमान वेदों का प्रचारक बना।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. आर्य जगत में मेरा प्रवेश, ज्ञानेंद्रदेव, संस्करण 1925
2. अरब का कदीमी मजहब, वैदिक प्रकाशन चावड़ी बाजार, संस्करण 1925
3. वैदिक गर्जना, मासिक, 15 जनवरी 1982
4. परोपकारिणी मासिक, जनवरी, 1982

शैला-नूरा

अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में नूरांग में बाबा जसवंत सिंह ने एक ऐतिहासिक जंग लड़ी थी। वो 1962 की जंग का आखिरी दौर था। चीनी सेना हर मोर्चे पर हावी हो रही थी। लिहाजा भारतीय सेना ने नूरांग में तैनात गढ़वाल यूनिट की चौथी बटालियन को वापस बुलाने का आदेश दे दिया। पूरी बटालियन लौटने लगी तो दो स्थानीय लड़कियों शैला और नूरा जिनकी उम्र 9 साल और ग्यारह साल थी, उनमें से शैला ने कहा, ''आप हमें किसके सहारे छोड़कर जा रहे हैं, चीनी लुटेरे हमारा घर लूट लेंगे, हमारी यज्ञशाला तोड़ देंगे, फिर हम हवन कहाँ करेंगे?''

''बेटा हिम्मत से काम लो...?''

''हममें हिम्मत है, आप भी हिम्मत दिखाइए, तुम मत जाओ बाबा,'' शैला ने एक वृद्ध से दीख रहे फौजी का कंधा पकड़कर रोकते हुए उसे सत्यार्थ प्रकाश देते हुए कहा, ''तुम्हें सत्यार्थ प्रकाश की कसम बाबा...क्या अपनी बेटी की इज्जत के लिए तुम नहीं रुक सकते, वे मेरी माँ को भी उठा ले गए थे, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी इस बेटी की बोटी-बोटी नोंच खाएँ विदेशी आक्रांता...।''

''बेटा ये अफसरों का आदेश है, हमें अनुशासन में रहना होता है, हमें जाना ही होगा।''

''फौजी बाबा, क्या आदेश और अनुशासन किसी बेटी की इज्जत से बढ़कर है, यदि तुम बेटी की इज्जत नहीं बचा पाए तो फिर भारत माँ की इज्जत कैसे बचा पाओगे...बेटी की इज्जत ही माँ की इज्जत है

बाबा...।'' वह रोने लगी थी।

''अच्छी बात है बेटी, यदि इस जंग में तुम भी हमारा साथ दो तो हम नहीं जाएँगे।''

''हाँ बाबा...हम भी देश के लिए लड़ेंगे और मरेंगे...परंतु दुश्मन को एक इंच भी जमीन न देने देंगे।''

''शाबास मेरी बच्चियों अब ये बाबा अफसरों का आदेश नहीं मानेगा।'' और फिर जसवंत सिंह ने अपने साथियों से कहा, ''हमें आदेश के मुताबिक पीछे लौटना है, लेकिन हम इस आदेश की नाफरमानी करेंगे, क्योंकि यदि हम पीछे लौट गए तो चीनी सेना हमारी इन मासूम और इन जैसी अनेक बच्चियों को गाँव से उठा ले जाएगी, हमारी जमीन पर कब्जा कर लेगी और जीते जी हम अपनी इज्जत, अपनी जमीन पर दुश्मन को कब्जा नहीं करने देंगे।''

''परंतु यह तो अनुशासनहीनता है,'' लांस नायक त्रिलोक सिंह नेगी ने कहा, ''लेकिन देश की रक्षा के लिए हम अफसरों का आदेश नहीं मानेंगे और आपके साथ हैं।'' उन्होंने जसवंत सिंह की हाँ में हाँ मिलाई थी।

''मैं भी आपके साथ हूँ।'' गोपाल सिंह गुसाईं में भी यह कहते हुए जोश आ गया था, ''मुझे भी इन बेटियों और भारत माता के कण-कण से प्रेम है, मैं भी एक इंच जमीन तक दुश्मन को नहीं लेने दूँगा।'' और वे तीनों ही नहीं लौटे...बाबा जसवंत ने पहले त्रिलोक और गोपाल सिंह के साथ और फिर उन आर्य बालिकाओं की मदद से चीनियों के साथ मोर्चा लेने की रणनीति तैयार की। बाबा जसवंत सिंह ने अलग-अलग जगह पर राईफल तैनात कीं और इस अंदाज में फायरिंग करते गए मानो उनके साथ बहुत सारे सैनिक वहाँ तैनात हैं। परंतु उनके साथ तो केवल दो स्थानीय लड़कियाँ थीं, शैला जिसका असली नाम शैलपुत्री एक देवी के नाम पर था, जिसका परिवार विदेशी मत छोड़कर वैदिक धर्म में लौटा था और नूरा, जो बौद्ध थी, वह उसकी सहेली थी। चीनी परेशान हो गए और तीन दिन यानी 72 घंटे तक वो

ये नहीं समझ पाए कि उनके साथ अकेले जसवंत सिंह मोर्चा लड़ रहे हैं। तीन दिन बाद जसवंत सिंह को रसद आपूर्ति करने वाली नूरा को चीनियों ने पकड़ लिया। इसके बाद उनकी मदद कर रही दूसरी लड़की शैला पर चीनियों ने ग्रेनेड से हमला किया और वह शहीद हो गई, लेकिन वो जसवंत तक फिर भी नहीं पहुँच पाए। बाद में चीनी सैनिकों से घिरने पर बाबा जसवंत ने खुद को गोली मार ली। भारत माता का ये लाल नूरांग में शहीद हो गया। चीनी सैनिकों को जब पता चला कि उनके साथ तीन दिन से अकेले जसवंत सिंह लड़ रहे थे, तो वे हैरान रह गए। चीनी सैनिक उनका सिर काटकर अपने देश ले गए। 20 अक्टूबर 1962 को संघर्ष विराम की घोषणा हुई। चीनी कमांडर ने जसवंत की बहादुरी का लोहा माना और सम्मान स्वरूप न केवल उनका कटा हुआ सिर वापस लौटाया बल्कि काँसे की मूर्ति भी भेंट की। जिस जगह पर बाबा जसवंत ने चीनियों के दाँत खट्टे किए थे, उस जगह पर एक मंदिर बना दिया गया है। इस मंदिर में चीन की ओर से दी गई काँसे की वो मूर्ति भी लगी है। उधर से गुजरने वाला हर जनरल और जवान वहाँ सिर झुकाने के बाद ही आगे बढ़ता है। स्थानीय नागरिक और नूरांग को जाने वाले पर्यटक भी बाबा से आशीर्वाद लेने के लिए जाते हैं। वो जानते हैं बाबा शहीद हो चुके हैं, लेकिन बाबा मरे नहीं अमर हैं। 1962 की जंग में शहीद हुआ भारत माता का यह सपूत आज भी ड्यूटी पर तैनात है। उनकी सेना की वर्दी हर रोज प्रेस होती है, हर रोज जूते पॉलिश किए जाते हैं। उनका खाना भी हर रोज भेजा जाता है और वो देश की सीमा की सुरक्षा आज भी करते हैं। सेना के रजिस्टर में उनकी ड्यूटी की एंट्री आज भी होती है और उन्हें प्रमोशन भी मिलते हैं। अब वो कैप्टन बन चुके हैं। अब इनका नाम है : कैप्टन जसवंत सिंह रावत। महावीर चक्र से सम्मानित जसवंत को सब जानते हैं, लेकिन उन दो बेटियों का इतिहास में कहीं नाम नहीं।

संदर्भ

1. भारत की बहादुर बेटियाँ, मधु धामा, धामा साहित्य सदन, संस्करण 2016

मासूम वैदेही

23 फरवरी 1981 का दिन था वह, जब तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम में डॉक्टर नसरूद्दीन कमाल अपने साथियों के साथ एक दलित परिवार को बंधक बनाए हुए थे। घर के सभी लोगों ने इस्लाम कबूल लिया था, घर के लोग ही क्यों लगभग एक हजार दलित धर्मांतरण करके जबरन मुस्लिम बनाए जा चुके थे। मीनाक्षीपुरम का नाम बदलकर रहमतनगर रख दिया गया था।

वह दलित गिने चमार के नाम से प्रसिद्ध था। उसकी आठ वर्ष की पौत्री थी वैदेही...वह किसी भी कीमत पर मुस्लिम बनने को तैयार नहीं हुई, ''मै मर जाऊँगी लेकिन कलमा नहीं पढूँगी,'' उसने अपने दादा से कहा था, ''बाबा आपने ही तो मुझे गायत्री मंत्र सिखाया था ना ...आपने ही तो बताया था कि यह परमेश्वर की वाणी वेदों का सबसे सुंदर मंत्र है, इससे सब मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं, फिर मैं उन लोगों का कलमा कैसे पढ़ सकती हूँ, जिन्होंने मेरे सहपाठियों का कत्ल कर दिया, क्योंकि वे भी मुस्लिम नहीं बनना चाहते थे। हम ऐसे मजहब को कैसे अपना सकते हैं, जिसे न अपनाने पर कत्ल का भय हो, मुझे तो गायत्री मंत्र प्रिय है, जो मुझे निर्भय बनाता है।''

''दो टके की लौंडी, कलमा पढ़ने से इंकार करती है,' डॉक्टर नसरूद्दीन कमाल के साथ खड़े मौलाना नुरूद्दीन ने उसके बाल पकड़े और चूल्हे पर गर्म हो रहे पानी के टब में उसकी मुंडी को डूबा दिया। पानी भभक रहा था, इतना गर्म था कि बनती भाप धुँए के समान नजर आ रही थी। बालिका के चेहरे की चमड़ी निकल गई, एक बार ही डुबोते, चीख पड़ी थी, ''भगवान मुझे बचा लो?''

''तेरा पत्थर का भगवान तुझे बचाने नहीं आएगा, अब तो इस्लाम कबूल ले लड़की, नहीं तो इस बार तुझे इस खोलते पानी में डुबा दिया जाएगा।'' मौलवी ने कहा था, फिर उसके दादा ने भी कहा, ''कबूल कर ले बेटी इस्लाम, हम भी सब मुसलमान बन चुके, तू जिंदा रहेगी तो तेरे सहारे मेरा भी बुढ़ापा कट जाएगा।''

''मौलवी ने चूल्हे के पास से मिर्च पाउडर उठाकर उसकी आँखों में भरकर चेहरे पर मलते हुए कहा, ''दूध के दाँत टूटे नहीं, और इस्लाम नहीं कबूलेगी।''

एक बार फिर तड़प उठी थी वह मासूम, पर इस बार भी यही कह रही थी, ''नहीं मैं इस्लाम नहीं कबूल करूँगी।''

मौलवी को भी क्रोध आ गया था, इस बार तो उसका सिर जलते हुए चूल्हें में ही दे डाला था। परंतु प्राण त्यागते हुए भी उस बालिका के मुख से यही निकल रहा था, ''मैं इस्लाम नहीं कबूलूँगी।''

अंतिम बार डॉक्टर नसरूद्दीन कमाल की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा था, ''मेरा धर्म बचा लो...डॉक्टर साहब...''

अब उसमें कुछ नहीं रहा था, वह तो मिट्टी बन चुकी थी, डॉक्टर नसरूद्दीन कमाल भी तो धर्मांतरण करने वाले लोगों की मंडली में ही शामिल था, लेकिन उस असहाय बालिका का धर्म के प्रति दृढ़ निश्चय देखकर हृदय चीत्कार कर उठा था, ''या अल्लाह ऐसे इस्लाम के ठेकेदारों से तो मर जाना अच्छा है।'' वह घर की ओर भाग लिया था और डॉक्टर नसरूद्दीन कमाल पूरे दस दिन अपने घर से नहीं निकला, उसने कुछ खाया पीया नहीं, बस उस बालिका का ध्यान बराबर करता और आँखों में आँसू भर आते उसके...गायत्री मंत्र का अर्थ जानने के लिए उसने एक किताब खरीदी, गलती से वह नूरे हकीकत यानी सत्यार्थ प्रकाश थी। उसने उसका गहराई से अध्ययन किया और 11 नवंबर 1981 को एक जनसमूह के सामने विश्व हिन्दू परिषद और आर्य समाज के तत्वावधान में अपने पूरे परिवार के साथ वैदिक धर्म अंगीकार कर लिया। डॉक्टर नसरूद्दीन ने अब अपना नाम रखा था आचार्य

मित्रजीवन, पत्नी का नाम बेगम नुसरत जहाँ से श्रीमती श्रद्धादेवी और तीन पुत्रियों शमीम, शबनम और शीरीन का नाम क्रमशः आम्रपाली, अर्चना और अपराजिता रखा गया।

15 नवंबर 1981 को आर्य समाज सांताक्रुज में उनका जोरदार स्वागत हुआ, जहाँ उन्होंने केवल एक ही बात कही, ''मैं वैदेही को तो वापस नहीं ला सकता, लेकिन हिन्दू समाज से मेरी विनती है, मेरी बेटियों को वह अपनाए, वे हिन्दू परिवारों की बहू बनेंगी तो समझूँगा कि उस पाप का प्रायश्चित कर लिया, जो मेरी आँखों के सामने हुआ। हालाँकि वह मैंने नहीं किया, लेकिन मैं भी दोषी था, क्योंकि मेरी आँखों के सामने एक मासूम बालिका की निर्मम हत्या कर दी गई।''

आचार्य मित्रजीवन ने अपना शेष जीवन वेदों के प्रचार-प्रसार में लगा दिया, इसलिए उन्हें आज बहुत से लोग जानते हैं, उनकी पुस्तकें पढ़ते हैं, लेकिन कम ही लोग जानते हैं कि वे जन्म से मुस्लिम थे और यह तो कोई नहीं जानता कि वैदेही कौन थी?

elibrary.thearyasamaj.com

संदर्भ

1. इंडियन एक्सप्रेस, 24 फरवरी 1981
2. आर्य जगत, नई दिल्ली, 6 दिसंबर 1981 में कुलदीप नैयर का आलेख
3. वैदिक गर्जना मासिक, जनवरी, 1982
4. दैनिक विराट वैभव, नई दिल्ली 26 जनवरी 2018

सौतेली माँ का ताना

आजादी से पहले नवाब थे कुँअर अखलाक...आजादी मिली तो नवाबी चली गई...अब वे 76 साल के हो गए थे और इस उम्र में उन्होंने रचाई थी 5वीं शादी...वह भी 17 साल की किशोरी से...नई दुल्हन शहनाज घर में आई तो एक दिन उसकी पहली सौतन के बेटे कुँवर रफत अखलाक रावजादा से भेंट हो गई...उम्र में बड़े बेटे ने कम उम्र की माँ को सलाम किया, ''सलाम अम्मी जान!''

''कब्र में पैर लटकते हुए भी तुम्हारे बूढ़े बाप ने मेरे गरीब बाप की मजबूरी का फायदा उठाकर बेमेल शादी रचाई है, अगर सलाम और अम्मी छोड़कर तुम मुझसे अपने बाप से पहले निकाह करके जान बना लेते तो...मेरा जीवन तो सँवर जाता, परंतु तुम्हें क्या? तुम भी उसी की औलाद हो, औरत को पैर की जूती समझते हो? तुमसे अच्छे तो काफिर हैं, जो एक पत्नीव्रता रहते हैं और इनसान तो क्या धरती तक को माँ का दर्जा देते हैं, तुम मुस्लिम तो औरत को पैरों की जूति और इस्लाम की खेती समझते हो?''

उसकी आवाज में एक दर्द था, सौतेले बेटे ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन माँ की बात में उसे दम लगा, बाप की 76 वर्ष की उम्र में 17 वर्ष की कन्या से 5वीं शादी...लोग हँसी उड़ाने लगे थे उसके बाप की और उसकी....परंतु वह भी था दीन एवं ईमान का पक्का, इस्लाम में जब चार शादी का प्रावधान है तो वह क्या कर सकता है, मजहब की आज्ञा का पालन तो करना ही होगा...

रफत अखलाक भी कट्टर मुस्लिम था, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पढाई के दौरान वह छात्र संघ का अध्यक्ष रहा था,

उसके बाद बना जमायते इस्लामी हिन्द का नेता और हिन्दुओं का धर्मांतरण करके उन्हें मुस्लिम बनाने लगा। इसी दौरान शेख अल रशीद के नेतृत्व में हैदराबाद में जमायते इस्लामी हिन्द की गुप्त बैठक हुई और उसमें हिन्दुस्तान को मुस्लिम राष्ट्र बनाने का प्रस्ताव पास हुआ। शेख अल रशीद के मुख से अचानक ही निकल गया, ''साले काफिर इंडिया को भारत माता बोलते हैं, हमें इसे रखैल बनाना है, जैसे एक के बाद एक औरत बदलकर इस्लाम की खेती करते हुए जनसंख्या बढ़ाकर... वैसे ही इस धरती को अपनी औरत ही समझो और गैर मुस्लिम को नाजायज औलाद जिसे कलमा पढ़ाकर इस्लाम की जायज औलाद बनाना है।''

अब इस बात पर रफत अखलाक के मन में अचानक ही अपनी सौतेली माँ की बात याद आ गई कि तुमसे तो अच्छे काफिर ही हैं, जो एक पत्नीव्रता रहते हैं और धरती को भी माँ का दर्जा देते हैं और यहाँ तो धरती को रखैल बताया जा रहा है, शेख अल रशीद की बातों में मुल्क के प्रति गद्दारी की बू आने लगी और उसने उस गुप्त बैठक का बहिष्कार कर दिया। अचानक ही 1980 में उनके पिता का देहांत हो गया, तो उनकी सौतेली माँ ने फिर कहा, ''यदि मैं हिन्दू होती तो आज जवानी में विधवा नहीं होती, क्योंकि वहाँ किसी बालिका का किसी बूढ़े से विवाह होता ही नहीं।''

कुँअर रफत अखलाक ने हिन्दू धर्म का साहित्य पढ़ना शुरू किया और इसी दौरान उसके हाथ कहीं से दयानंद स्वामी का नूरे हकीकत हाथ लग गया, जिसका उन्होंने गहराई से अध्ययन किया और फिर उन्होंने अंततः 20 हजार लोगों के जनसमूह के सामने वैदिक धर्म अंगीकार किया और अपना नाम डॉक्टर आनंद सुमन रखा और वेदों का प्रचार करने लगे।

संदर्भ

1. मैं हिन्दू क्यों बना?, डॉक्टर आनंद सुमन, जनज्ञान प्रकाशन करोलबाग नई दिल्ली, संस्करण 1982

तकरीर पर तकरार

बरवाला गाँव की कहानी है यह...यहीं रहती हैं बचनो चाची और उसकी पौत्री पिंकी। मैं दो बार मिली हूँ उनसे बरवाला जाकर...दिल्ली से बस से बड़ौत गई, वहाँ से ताँगे में बैठी, वह ताँगा बावली गाँव से निकलकर बरवाला पहुँचा, रास्ते में दो नहर भी पड़ी बावली और बरवाला के बीच ...मेरी बड़ी ननंद भी यहीं रहती हैं...वैसे तो मेरी ननंद अनपढ़ हैं, लेकिन एक वेद विद्या उनके पास है ज्योतिष की, वे तारों की गति से पंचांग बना देती हैं और गाँव भर की महिलाएँ उनसे हिन्दू त्योहारों की तिथियाँ पूछने आती रहती हैं, नौमी कब, ग्रहण कब, चैत्र बैशाख कब आदि आदि...

यहाँ मस्जिद में अजान के बाद इस्लाम की तकरीर करता था कोई मौलवी महबूब अली...उसी समय पिंकी जहाँ स्कूल का होमवर्क करने बैठती थी, तो वहीं बचनो राम-नाम लेने के लिए बैठती थी। पिंकी का स्कूल का कार्य और बचनो चाची का रामनाम छोड़कर उसकी बातों में दोनों का ध्यान चला जाता था। एक दिन उन्होंने मास्टर कृष्णपाल से कह ही दिया, ''इस मौलवी ने नाक में दम कर रखा है, इसका कुछ कर कृष्णपाल...जब भी रामनाम लेने बैठती हूँ, तभी मुआ...'' कृष्णपाल बचनो चाची के घेर में आया हुआ था, और बचनो डांगरों को चारा डालने गई थी...गाँव के दूसरी तरफ घेर और घर है बचनों का...उधर ही मस्जिद भी है। पिंकी भी उनके साथ थी उस समय।

''क्या हिन्दुओं के खिलाफ भाषण झाड़ता है।''

''नहीं कई बातें उसकी अच्छी भी होती हैं, इसलिए समझदार भी लगता है।''

''चाचा,'' बीच में पिंकी बोल पड़ी थी, ''तुम तो बहुत आर्य बने फिरते हो? युवाओं और बच्चों को तो आर्य समाज में जोड़ते नहीं और पिचके गालों से दो-चार बुड्ढ़े हवन करके नारा लगाते हैं कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। संसार को आर्य बनाओगे या नहीं मुझे नहीं पता, परंतु मैं तो तब जानूँ, जब तुम इस मौलवी को आर्य बना दोगे?''

बात आई-गई हो गई और एक दिन कृष्णपाल मौलवी महबूब अली से मिले और उन्हें इंद्रप्रस्थ गुरुकुल में चलने का निमंत्रण दिया ...वहाँ से प्रस्थान के समय धर्मवीर ने उन्हें उर्दू में नूरे हकीकत यानी सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया, घर आकर उसे पढ़ने लगे मौलवी साहब, विशेष रूप से 14 वाँ समुल्लास कई बार पढ़ा, जिसमें कुरान की समीक्षा है और एक दिन उन्होंने वैदिक धर्म अंगीकार कर लिया, सारे गाँव के सामने परिवार सहित...

अब उन्होंने अपना नाम रखा पंडित महेंद्रपाल आर्य, उनकी पत्नी शांति देवी बन गई और चार बेटों के नाम सुरेंद्र, नरेंद्र, वीरेंद्र और देवेंद्र तथा बेटी का नाम सावित्री रखा गया।

बाद में वे वेदों के बड़े प्रचारक बन गए और देशभर में वेदों का प्रचार करने लगे, दुनिया के कई देशों में भी वेदों का प्रचार करने गए, वे सारी दुनिया में जाने गए, खासकर हिन्दू समाज तो उनका नाम आदर से लेता है, लेकिन बचनो चाची...या फिर पिंकी, कमाल है उन्हें कोई नहीं जानता जिनके कारण वे आर्य बने...शायद वे भी नहीं जानते....मैं भी नहीं जानती यदि बड़ौत के पास उस बरवाला गाँव में दो बार न जाती और बचनो चाची के पैर दबाकर उनसे दूधो नहाओ पूतो फलो का आशीर्वाद न लेती तो...

संदर्भ

1. घर वापसी, परिवर्धित संस्करण, फरहाना ताज, संस्करण 2015
2. बचनो चाची से निजी भेंट मधु धामा की

ठोकर लगी और मिल गए भगवान

''या अल्लाह!'' कहते हुए ठोकर लगते ही उज्बेकिस्तान की शाख नोज उल्टे मुँह जमीन पर गिरते-गिरते बची, क्योंकि उसे उसकी सहपाठी याना, जो मास्को की रहने वाली थी, ने पकड़ कर संभाल लिया था।

''जब भी हम इस पाक जगह पर आते हैं तो सीढ़ियों के इस टेढ़े मेढ़े पत्थर से हर किसी को चोट लगती है,'' याना ने कहा, ''आज इसको उखाड़ ही देते हैं।''

उन्होंने ठोकर लगने वाले इस पत्थर को धर्मस्थल की सीढ़ियों से उखाड़ दिया था। लेकिन वे उस उखड़े पत्थर को देखकर आश्चर्यचकित हुई, क्योंकि वह टूटी-फूटी किसी मूर्ति का नीचे का हिस्सा था। और उस पर कुछ लिखा हुआ भी था। उन्होंने उस लिखावट की अपने मोबाइल से फोटो खींची और घर चली गई। वे अपने देश की प्राचीन संस्कृति पर अध्ययन कर रही थी। बहुत मशक्कत के बाद इंटरनेट की मदद से जब उन्होंने उस पत्थर की शिला को पढ़ा तो दंग रह गई, वह गीता का श्लोक था :

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥

हे कृष्ण! पाप के अधिक बढ़ जाने से कुल की स्त्रियाँ दूषित हो जाती हैं। हे वार्ष्णेय (कृष्ण)! स्त्रियों के दूषित हो जाने से वर्णसंकर उत्पन्न होते हैं।

''शाख नोज कितनी अच्छी बात लिखी है, स्त्रियों के दूषित हो जाने से वर्णसंकर उत्पन्न होते हैं। और आज तो सारी दुनिया में

वर्णसंकर और दूषित लोग ही हैं।'' याना ने कहा।

''लेकिन इस पत्थर पर इतनी ज्ञान की बात किसने लिखी होंगी?'' शाख नोज ने पूछ लिया था?

''पता नहीं।''

फिर उन्होंने बड़े-बुजुर्गों से यह बात जानने की कोशिश की कि धर्मस्थल की पैड़ियों में टूटी-फूटी मूर्तियाँ कहाँ से आई, तो किसी बुजुर्ग ने उन्हें बताया कि सैकड़ों साल पहले मुहम्मद गौरी और गजनवी हिन्दुस्तान से मंदिर लूटकर लाए थे और वहीं से ये पत्थर लाए गए थे। उन दोनों ने विचार किया कि जब एक पत्थर पर इतने ज्ञान की बातें हैं, तो हिन्दुस्तान के लोग कितने ज्ञानी होंगे और वे दोनों ज्ञान की प्यास लिए भारत आ गई। यहाँ उन्होंने एक संत से वेद, उपनिषद आदि का अध्ययन किया और उनकी आस्था वेदों के प्रति जाग उठी।

आजकल शाख नोज और याना दोनों ऐसी देवियाँ हैं, जिनकी आस्था म्लेच्छ होते हुए भी पवित्र वेदों में है। पौराणिक धर्म स्थलों का भ्रमण करना भी उन्हें अच्छा लगता है। पता नहीं खंडहरों में क्या खोजती फिरती हैं। उजबेकिस्तान की शाख नोज ने वैदिक धर्म अंगीकार करने के बाद अपना नाम सुंदरी देवी रखा और मास्को की याना ने अपना नाम रखा है इंद्राणी देवीदास। दोनों भगवान श्रीकृष्ण को महान योगी और वेदों का भाष्यकार मानती हैं, जबकि भारत में श्रीकृष्ण को भागवत का नायक माना जाता है। इंद्राणी देवीदास आजकल जर्मनी में रहकर वेदों पर अनुसंधान कर रही हैं। उनका मानना है कि हिटलर के समय जो भी अनुसंधान या आविष्कार जर्मनी में हुए वे प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन के बाद ही हुए थे।

संदर्भ

1. वेद वृक्ष की छाँव तले, फरहाना ताज, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32, 2016

मदरसे में मंत्र

पुसगँवा, बरेली की कहानी है यह...यहीं लियाकत और अनवरी के बेटे मुख्तार अजीम के साथ निकाह पढ़कर आई थी महरूलनिसा...पढ़ाई के दौरान मुख्तार अजीम को कई श्रेष्ठ और योग्य हिन्दु शिक्षकों का आशीर्वाद मिला था, इस कारण दिनचर्या में कई काम वे हिन्दुओं के रीति-रिवाज अनुसार ही करते थे। 1992 में उन्हें कहीं से स्वामी दयानंद का नूरे हकीकत यानी कि सत्यार्थ प्रकाश मिला और उन्होंने घर लाकर रख दिया।

महरूलनिसा के हाथ लग गई एक दिन यह किताब तो वह उसे पढ़ने लगी, इसी दौरान मुख्तार अजीम कुछ कट्टरपंथी मुस्लिमों के संसर्ग में आया और उन्होंने एक इस्लामिक मदरसे की स्थापना की। उनका मकसद था कि इस मदरसे में कट्टरपंथी पैदा किए जाएँ, ताकि सारे हिन्दुस्तान को मुस्लिम देश बनाया जा सके। खैर मदरसा चल निकला और उनमें कुछ देशद्रोही पैदा होते, उससे पहले ही महरूलनिसा ने एक दिन अपने पति को उन्हीं का लाया सत्यार्थ प्रकाश ध्यान से पढ़ने की सलाह दी। उन्होंने पत्नी की सलाह पर वह अमर ग्रंथ पढ़ा तो उनके विचार बदल गए और उन्होंने भारी जनसमूह के सामने वैदिक धर्म अंगीकार कर लिया। महरूलनिसा उस दिन बहुत खुश हुई थी और उन्होंने अपना नाम रखा था चंद्रकांता देवी...अपने चार पुत्र और दो बेटियों के नाम उन्होंने इस प्रकार रखे : कौशल मिश्र पूर्व नाम ईसुफ, ईशप्रिय पूर्व नाम ईशुल, तेजस आर्य पूर्व नाम शाकिब, कुमारी प्रभा पूर्व नाम नूरबी, श्रुति आर्य पूर्व नाम शहनाज, और प्रकर्षदेव और अपने पति का नाम रखा प्रणव मिश्र...चूँकि उनके पति संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे

और ये स्वयं भी संस्कृत जान गई थी, इसलिए इन्होंने वैदिक वर्णव्यवस्था अनुसार अपने को ब्राह्मण वर्ण में स्थापित किया।

और फिर उस मदरसे को तोड़कर वहाँ पर वैदिक गुरुकुल बना दिया गया...यानी कि अब वे वेदों के प्रचारक हो गए थे...हाल ही में वहाँ उनके गुरुकुल में कुछ नए भवन बने हैं, यज्ञशाला बनी है और लोग अपने बच्चों को वहाँ पढ़ाने के लिए गर्व महसूस करने लगे हैं।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. दैनिक जागरण, 28 जून 2004
2. मुस्लिम विद्वानों की घरवापसी, संतोष आर्य, संस्करण 2016
3. प्रणव मिश्र से एक साक्षात्कार, तेजपाल सिंह धामा, विराट वैभव, नई दिल्ली, 2 मार्च 2003

इन्शा की इंसानियत

इन्शा खलील प्रतिभावान छात्रा थी, अचानक ही एक दिन पढ़ाई के दौरान उसने पढ़ा कि सत्यार्थ प्रकाश में कुरान का खंडन है, तो उसने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के लिए खरीदा और उसे पढ़ा। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद उसके विचार एकदम बदल गए और वह मानने लगी कि दुनिया के सारे धर्म और मत लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण ही बनाए हैं। वास्तव में सबसे बड़ा धर्म तो मानवता ही है। उसने एक ऐसे आर्य युवक से मित्रता बढ़ाई जो आर्य परिवार से संबद्ध था, लेकिन शैक्षिक योग्यता से तो वह उसके योग्य नहीं था, फिर भी इन्सा ने एक दिन उससे कहा, ''तुम्हारी परवरिश वैदिक परिवार में हुई है, यह विरासत दुनिया की हर डिग्री से बड़ी है।''

''मगर इन्सा दुनिया हमें स्वीकार नहीं करेगी।''

''मैं शादी तुमसे कर रही हूँ या दुनिया से, मुझे वेद चाहिए मूर्ख लोगों की दुनिया नहीं। मुझे संस्कारवान वैदिक परिवार चाहिए, मुझे शाकाहारी लोग चाहिए। मेरा पेट अब कब्रस्तान नहीं रहा कि मैं मुर्दे जीव-जंतुओं को जीवनभर खाती रहूँ। मैं शाकाहारी रहकर साध्वी जैसा जीवन जीना चाहती हूँ।''

बाद में दोनों ने शादी कर ली, लेकिन अदालत का चक्कर तो होना ही था, लेकिन एक दिन बड़ी राहत मिली जब इंद्रा पूर्व इन्सा खलील और भरत के पक्ष में हाइकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए भरत के मुस्लिम ससुर और पुलिस को दो टूक कह दिया कि आपकी बेटी बालिग थी, उसने अपनी इच्छा से वैदिक धर्म स्वीकारा और हिन्दू युवक से शादी की। उन्हें चैन से जीने दें, वरना कानून अपना काम करेगा

.. यदि किसी की शादीशुदा जिंदगी में दखल दिया। एक दिन अखबार में ही मैंने यह खबर पढ़ी तो ऐसा लगा कि प्रेम शाश्वत है, इसे मजहबों की दीवारों में नहीं बांधा जा सकता। हिंदू लड़के और मुस्लिम लड़की की इस शादी पर कर्नाटक हाईकोर्ट ने एक अहम फैसले में कहा कि पुलिस का जो काम है वह केवल वही करे लेकिन किसी के वैवाहिक जीवन में दखलंदाजी से बचे। कोर्ट ने राज्य सरकार से भी कहा है कि वह इंटर रिलीजियस मैरिज करने वाले कपल्स को सुरक्षा प्रदान करे।

दरअसल मंगलुरू में 19 साल की कॉलेज स्टूडेंट इन्सा खलील और कंडक्टर भरतराज गुम्पी (24) ने 2014 नवंबर में आर्य समाज के ढंग से शादी की थी। बेटी द्वारा दूसरे धर्म में शादी किए जाने से नाराज इन्सा के पिता ने भरतराज और उसके तीन दोस्तों के खिलाफ बेटी के अपहरण और जबरिया शादी कराने का केस दर्ज करा दिया। 2014, नवंबर में इन्सा और भरतराज ने स्थानीय न्यूज पेपर्स में ऐड देकर अपनी शादी की घोषणा की। इन्सा ने शादी के बाद अपना नाम भी बदल लिया, अब वह आर्या इंद्रा है। केस दर्ज होने के बाद पुलिस लगातार इस कपल को परेशान कर रही थी। इन्सा के पिता ने हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की थी।

इन्सा के पिता की याचिका को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि जब भी इस तरह की शादियाँ होती हैं, तो अपहरण और फुसलाने के केस दर्ज कराए जाते हैं और आमतौर पर ये झूठे होते हैं। कोर्ट ने ये भी कहा कि पुलिस को अपने पॉवर का गलत इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। हाईकोर्ट ने कहा कि पुलिस केवल वही काम करे, जो उसको सौंपा गया है वह किसी को परेशान न करे। अदालत ने राज्य सरकार को भी नसीहत देते हुए कहा कि इस तरह के मामलों में कपल्स को सुरक्षा दी जानी चाहिए। हाईकोर्ट पुलिस के रवैये से नाराज था। भरतराज की अपील पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट के जज ए.एन. देवगौड़ा ने कहा कि पुलिस की जाँच केवल दिखावा ही नहीं यह जनता के पैसे और हमारे समय की बर्बादी भी है। हाईकोर्ट ने कहा कि इन्सा

और भरतराज ने मर्जी से शादी की है और दोनों ही बालिग हैं। अदालत ने इन्सा के वकील की दलीलों को खारिज करते हुए कहा कि भरतराज-इन्सा और दोस्तों को झूठे आरोपों में फँसाने की कोशिश की जा रही है। आजकल दोनों बाल बच्चे वाले हो चुके हैं और उनकी दृष्टि में इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. दर-दर की ठोकरे और घर वापसी, फरहाना ताज, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32, संस्करण 2016
2. 23 मई 2015 नवभारत टाइम्स

मेरा दूसरा जन्म

मेरे अब्बू की गाड़ी से एक युवक का एक्सीडेंट हो गया, उन्हें सिर में काफी चोट आई थी। बेचारा 15 दिनों तक तो बेहोश ही रहा। अस्पताल से छुट्टी के बाद उसे पूर्णरूपेण ठीक होने के लिए मेरे अब्बू घर पर ही ले आए थे, ताकि उसकी सेवा की जा सके। उसकी देखभाल करते हुए मुझे उससे कब प्यार हो गया, पता ही नहीं चला और मेरे अब्बू ने उसी के साथ मेरा निकाह तय कर दिया था, लेकिन मुझे निकाह से एक दिन पहले ही पता चला था कि मेरे प्रेमी और होने वाले जीवनसाथी ताज जन्म से हिन्दू हैं। लेकिन मेरे परिवार को तो यह भी नहीं पता था। मैंने उन्हें इस्लाम कबूलने के लिए बहुत मनाया, लेकिन वे हिन्दू धर्म त्यागने को तैयार न हुए तो अंततः मुझे ही हथियार डालने पड़े और हमने बिना किसी को बताए आर्य समाज मंदिर में जाकर वेद मंत्रों के साथ विवाह कर लिया। लेकिन विवाह होते ही वह मुझे अपने किराए के रूम में ले गया। जहाँ मैंने शादी के कपड़े उतारे और पुराने कपड़े पहनकर जल्दी में पतिदेव की अनुमति लेकर घर के लिए ऑटो पकड़ा। जानते हो मैंने यह शादी क्यों की? इसलिए कि इससे क्या होता है, असली विवाह यानी कि निकाह तो मेरा अगले दिन होने ही वाला था। उनको खुश रखने के लिए मैंने उनकी बात भी मान ली थी और अगले दिन वाकई में मेरा निकाह भी हो गया और क्या किसी ने ऐसा देखा है कि किसी लड़की की 24 घंटे के अंदर दो बार शादी, और दूल्हा भी एक और दुल्हन भी वही। अपने फूफा की मर्सीडीज कार में मैं देर रात अपने पति के साथ विदा हुई। उसके किराए के मकान में

दहेज का सामान पहले ही पहुँचा दिया गया था। बिस्तर भी पता नहीं किसने सजाया था, लेकिन कई हजार रुपए के फूल उस पर लगाए गए थे। मैं बिस्तर पर घूँघट किए हुए ही बैठ गई थी, लेकिन जैसे ही ताज कमरे का दरवाजा बंद करने वाले थे कि लड्डू भाई आ गए और बोले, ''बच्चों अब एंज्वाय करो अच्छा गुड़नाइट।''

सेज पर मुझसे चिपकर बैठते हुए ताज ने घूँघट को उठाने की कोशिश की तो मैं बोल पड़ी थी, ''इसकी कोई जरूरत नहीं...'' मैंने अपना घूँघट खुद ही उठा दिया था।

''अरे वाह इतनी बेताब हो...'' ताज बोल उठा था।

''तुम मुसलमान नहीं हो, इसलिए हमारा निकाह नाजायज है।''

''लेकिन दुनिया की नजरों में तो हम मिया बीवी बन गए।''

''लेकिन अल्लाह के खौफ से डरो, उनकी नजरों में तो हम गुनाहगार हैं।'' मैं क्रोध से भर उठी थी।

''अब सुहागरात के बीच में यह...''

''तुमने कलमा नहीं पढ़ा हुआ है।''

''तो ठीक है पढ़ा दो।''

''मुझे मजाक पसंद नहीं, तुम्हारा खतना भी नहीं हुआ होगा?''

''नहीं...''

''....जब तक तुम खतना नहीं करवा लेते और कलमा नहीं पढ़ लेते मुझे छूना भी नहीं...''

''छूने की क्या जरूरत है तुम्हें, मैंने दिल में बसाया है, पलकों पे बैठाया है...मैं सुहागरात के लिए सात जन्म तक इंतजार कर सकता हूँ, क्योंकि मैं वासना का नहीं....प्रेम का पुजारी हूँ.....मैं आर्यवर्त में पैदा हुआ हूँ, अरब में नहीं। सच्चा हिन्दुस्तानी हूँ जो सर कटा सकता है धर्म नहीं ..., भारत माँ का बेटा हूँ...भारत माँ का बेटा हूँ...सन आफ मदर इंडिया!''

उनकी बातों से मेरी तो आँखें फटी की फटी रह गई और फिर रोना आ गया...न जाने नींद कब आई पता ही नहीं चला, लेकिन जब

आँखें खुली तो ताज बाहर से इडली ले आया था और उठते ही कहा, ''हाथ मुँह धो लो...मैं इडली ले आया हूँ...नाश्ता कर लो...'' मैं बेड पर बैठी और पगली सी उनका चेहरा कई मिनट तक निहारती रही और सोचती रही, 'नाश्ता मुझे इनके लिए बनाना था या इन्हें मेरे लिए?' मुझे आज भी इस बात का पछतावा है कि मैं शादी के पहले ही दिन भारतीय नारी का कर्तव्य न निभा सकी। सारी दुनिया में भारतीय नारी कर्तव्य परायणता के लिए जानी जाती है और मैं बदनसीब कर्तव्य पालन से विमुख रही। हम दोनों की नई-नई शादी हुई...दोनों एक ही बिस्तर पर सोते, दिनभर मित्र की भाँति रहते और रातभर एक-दूसरे को छूते तक न थे, मैं तो कट्टरता के कारण संयम में रही, लेकिन उनका संयम देखकर तो मुझे भारत के प्राचीन ऋषियों की कहानियाँ सत्य प्रतीत होने लगी थी। यह मैंने उनसे ही सीखा कि जो संयम से कार्य लेता है, वही श्रद्धा का पात्र बन पाता है। जो अपने मन, मुख और जिह्वा पर संयम रखता है, वह अपनी आत्मा को संयम से बचाकर स्वर्ग के द्वार स्वयं ही खोलता है...मैं भले ही उन्हें अपने शरीर को छूने न देती थी, लेकिन उनके संग गृहस्थ जीवन में कदम रखना मुझे जीते-जी स्वर्ग प्रतीत हुआ...उन्हें प्लेट में मेरे लिए सुबह-सवेरे इडली रखते हुए देखकर।

2

एक दिन मैं रसोई में थी।

''ठीक है माँ मैं घर जरूर आऊँगा।'' ताज ने फोन पर बात करते हुए सुबह-सुबह ही जवाब दिया था। तभी चाय लेकर मैं उनके निकट आ पहुँची थी, ''किसका फोन है...किससे बात कर रहे हो? जब देखो तब फोन पर ही लग जाते हो...यह लो चाय पिओ..'' मैंने चाय रख दी थी।

''घर से माँ का फोन था।'' ताज ने जवाब दिया था।

''क्या कह रही हैं मेरी सास!''

''मुझे गाँव बुलाया है।''

''नहीं तुम गाँव नहीं जाओगे।'' मैंने आदेश सुना दिया था।

''क्यों?'' मिया जी की प्रतिक्रिया थी।

''अगर तुम गए और वापस न आए तो...''

''लेकिन माँ बहुत बीमार है।''

''तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।''

''यह संभव नहीं है।''

''क्यों?''

''मेरे घर वाले मुस्लिम कौम से नफरत करते हैं।''

''तो मैं हिन्दू नाम रखकर चल पड़ूँगी जैसे तुम मेरे घर वालों को धोखा दे रहे हो वैसे ही मैं भी धोखा दूँगी...हिसाब-किताब बराबर हो जाएगा।''

''अच्छा तो फिर तो मुझे तुम्हारा नाम बदलना होगा।''

''चलो यह अधिकार भी तुम्हें ही देती हूँ, तुम दुनिया के पहले मर्द होंगे जिसने अपनी औरत का नामकरण किया हो।''

''तुम बहुत अच्छी हो...इतना सब होने पर भी तुम्हारी बातें बहुत मीठी होती हैं, कम बोलती हो, इसलिए तुम्हारा नाम मधु रख दूँ तो कैसा रहेगा।''

''मुझे मंजूर है,... लेकिन संभलकर रहना मधु मक्खी का डंक बहुत दर्दनाक होता है।''

''अच्छा तो यह बात है, मधुमक्खी के छत्ते में हाथ डालने से पहले मुझे धुँआ उठाना आता है।'' और यह कहते हुए ताज मुझको हग कर बैठा, मैंने छुड़ाने की कोशिश की।

3

हम आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस से दिल्ली पहुँचे और वहाँ से टैक्सी किराए पर ली, ताज के घर जाने के लिए...घर के बाहर ताज यानी जिसका घर में बचपन का नाम नील था, अब मैं आगे उन्हें इसी नाम से लिखूँगी, हमारी टैक्सी आकर घर रूकी, उसमें से नील और मैं उतरे और खड़े

हो गए। ताज यानी नील का पिता लोगों के साथ हुक्का पी रहा था, माँ आँगन में पशुओं को चारा डाल रही थी। बड़ा भाई मशीन से चारा काट रहा था...सभी लोगों ने टैक्सी को देखकर उसकी तरफ देखा...माँ ...भाई सब टैक्सी के पास आए...नील और मैंने उतरते ही माँ-पिताजी के पैर छूए, उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया, ''खुश रहो।''

अगले दिन मैं गाँव के चूल्हे पर चाय छान रही थी और मेरी ननंद भी साथ में थी ही, तभी ननंद की नजर मेरे हाथ के नाखूनों पर पड़ी, जो मेहंदी से रचे हुए थे और ननंद एकदम चीख उठी, ''माँ...जल्दी इधर आओ...देखो अनर्थ हो गया।''

मैं भौचक्क सी रह गई थी, तभी माँ आते हुए बोली, ''क्या अनर्थ हो गया बेटी।''

''अपनी इस नई नवेली के हाथों के नाखून तो देखो..'' मेरा हाथ पकड़कर दिखाने लगी थी, ''मेहंदी लगी है...यह तो मुसलमानी है।''

''बहू क्या है ये...'' सास ने पूछा था, ''बता तू कौन है?''

मैं कुछ नहीं बोली, तभी जेठानी भी आ गई थी और आते ही और भी खुलासा कर दिया था, ''मुसलमानी है तू....हमारे यहाँ मुसलमानी के हाथ का छुआ तक पानी नहीं पीते, खाना तो दूर यह तो मेरा देवर था, तुझे पता नहीं कहाँ से उठा लाया। वरना मुसलमानों की तो यहाँ परछायी से भी दूर रहते हैं।''

''क्या मुसलमानी इनसान नहीं होती?'' एक पराजित विजेता बनने के लिए बस यही हल्का सा प्रश्न पूछा था मैंने।

''नहीं...'' सास ने कहा, यानी उनकी दृष्टि में मुस्लिम इनसान नहीं थे।

''तो क्या होती है?''

''म्लेच्छ।'' अब जवाब ननंद ने दिया था।

मेरी आँखें आँसू से भर गई थी और आँखों से आँसू टपकने लगे थे। फिर सास ने पूछा था, ''सच-सच बता मधु तेरा सही नाम क्या है?''

आँखों में आँसू के साथ सहमी हुई धीरे से मैं बोली थी, ''फर्रू .. फरहाना ताज।''

4

एक दिन सासू माँ गोबर उठा रही थी और आवाज देते हुए मुझको कहा, ''मधु...पलड़ा उठा ला?''

''किस लिए माँजी!''

''गोबर उठाना है।''

अब पलड़ा क्या होता है, मैं नहीं जानती थी, और फिर पतीली देखकर सोची कि इसे ही पलड़ा कहते होंगे, इसलिए उसे उठा लाई और जब सास को देने लगी तो उसका पारा सातवें आसमान पर था, ''कंचनी भैरोई इस पतीली को तेरे सिर में दे मारूँ क्या?'' गुस्से से डाँटते हुए बोली, ''जा भाग...सूरी सी कोई काम सलीके से करती नहीं ...तेरी माँ राण्ड ने कुछ सिखाया है कि नहीं...जा भाग।'' मैं रोती हुई अंदर चली गई थी। इसी दौरान मेरा भाई मेरी सुसराल पहुँच गया था। और जब उसे पता चला कि मेरे ससुराल वाले हिन्दू हैं और मेरा पति भी तो उन्हें बहुत धक्का लगा। वह मुझे तुरंत मेरे घर के लिए लेकर चल दिया था। मैं फिर आंध्र प्रदेश जाने के लिए एपी एक्सप्रेस के लिए निकल पड़ी थी।

5

मेरे परिवार वालों ने ताज को हैदराबाद बुलाकर बहुत समझाया कि वह मुसलमान बन जाए तो मुझे उसके साथ रहने देंगे, लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ तो उसके खिलाफ रेप, धोखाधड़ी आदि धाराओं में मुकदमा दर्ज करवा दिया गया। इसी दौरान एक दिन मेरी सहेली सना मेरे घर आई, जिन्होंने इस्लाम छोड़कर हिन्दू धर्म अपनाया था। कभी तड़क-भड़क रहने वाली सना इस समय नॉर्मल ड्रेस में थी, उसके हाथ में एक बैग था, जिसमें कुछ सामान के साथ नूरे हकीकत यानी सत्यार्थ

प्रकाश किताब थी, जिसे निकालते हुए उन्होंने कहा, ''मैंने सुना है कि तुम और ताज...''

''सही सुना है...उसने मेरे साथ बहुत बड़ा धोखा किया है, वह काफिर है।''

''यानी हिन्दू...तो क्या हुआ...तेरा भी तो यही सपना था कि तू किसी काफिर से शादी करके नौ बार हज करने जैसा शबाब लूटेगी।''

''लेकिन वो वेदपरस्त है, तैयार नहीं इस्लाम कबूल करने को।''

''तो हज्र क्या है...वेदपरस्त है...बुतपरस्त तो नहीं...तुम्हें प्यार तो करता है ना...तुम्हें अपनी जिंदगी से अलग तो नहीं किया और...तुम्हारे साथ कोई जबर्दस्ती भी नहीं करता, तो फिर उसके साथ जीवन करने में आपत्ति क्या है? रूढिवाद में कहाँ फँसी पड़ी है। सच्चा जीवन साथी मिलता ही कहाँ है? ''

''तो तू क्या कहना चाहती है? तेरी जैसी मैं भी हो जाऊँ...नौ सो चूहे खाकर हज करूँ?'' मैंने कहा था।

''हज नहीं यज्ञ कर...तेरी आँखें खुल जाएँगी।'' सत्यार्थ प्रकाश उसने मेरे हाथों में थमा दिया था, ''इसे पढ़....तेरी सब गलतफहमियाँ दूर हो जाएँगी...मैं चलती हूँ...आगे तेरी मर्जी...'' वह उठ खड़ी हुई थी और चल दी थी अपनी मंजिल की ओर...

6

अब्बू अम्मी ने मेरा घर से बाहर निकलना बंद कर दिया था। बड़ी बहन शहाना यद्यपि मुझसे सहानुभूति रखती थी। परंतु मैं अब घर पिछले कमरे में अकेले पड़े-पड़े क्या करती, टाइम पास तो करना ही था, इसलिए मैंने स्वामी दयानंद का नूरे हकीकत ग्रंथ पढ़ना शुरू किया, जब सब मतांतरों का तर्कपूर्वक खंडन पढ़ा तो बहुत अच्छा लगा, लेकिन उसके बाद चौदहवाँ समुल्लास पढ़ने की बारी आई तो उसे शुरू करते ही मेरा पारा सातवें आसमान पर था, लेकिन जब कुरान की समीक्षा बार-बार पढ़ी तो मुझे लगा कि समीक्षा करने वाला पूर्वाग्रह से ग्रसित

नहीं रहा होगा, उसका मकसद तो दुनिया को सत्य से अवगत कराना ही था, इसलिए क्रोध जाता रहा और बार-बार उसे पढ़कर समझने की कोशिश करने लगी। मूल कुरान शरीफ उठाई और तर्क की कसौटी एवं विज्ञान के सिद्धांतों पर उन्हें कसने का प्रयास करने लगी। नील का कुछ सामान और किताबें घर भी थी, उनमें स्वामी दयानंद की जीवनी भी मुझे मिली, मैंने उसे भी बार-बार पढ़ा। कभी दयानंद स्वामी की जीवनी और कभी सत्यार्थ प्रकाश...बार-बार पढ़ने लगी और हर बार कुछ न कुछ नया मुझे मिल रहा था।

सत्यार्थ प्रकाश तो मेरे लिए ज्ञान का खजाना साबित हुआ। जैसे सारे कायनात का ज्ञान उसमें ही समाया हुआ हो, लेकिन उसे पढ़कर ही पता चला कि पवित्र वेद भी ईश्वरीय पुस्तकें हैं, तो एक दिन बुरकानशीं होकर जब डॉक्टर के पास गई, तो वहीं से निजाम लाइब्रेरी चली गई, जहाँ मुझे ऋग्वेद का उर्दू अनुवाद मिल गया, जो किसी आर्य समाजी विद्वान का किया हुआ था, जिन्होंने 1939 में इस्लाम से ही वैदिक धर्म अंगीकार किया था। मैंने उसका अध्ययन किया और मेरी दीवानगी इस हद तक बढ़ गई कि मैं समझने लगी कि मैं इस जमाने की औरत नहीं हूँ, गलती से जन्म ले लिया है, मैं तो कभी किसी जन्म में ईरान की रहने वाली थी, जहाँ अग्नि मंदिरों में ऐसे ही ग्रंथों की आयतें गूँजा करती थी। यह ग्रंथ तो संस्कृत के साथ-साथ उर्दू में अनुवादित था, लेकिन संस्कृत के अनेक शब्द अरबी में ज्यों के त्यों हैं, यह देखकर तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत ही है और सभी उसी से निकली हैं और वेद ही सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं। वेदभाष्य पढ़ने के बाद मुझे लगा कि मेरा पुनर्जन्म हुआ है। वास्तव में व्यक्ति का जन्म सुसंस्कार संपन्न होने के बाद ही होता है।

ईश्वरीय किताब का ज्ञान होने के बाद बार-बार स्वामी दयानंद का जीवन चरित्र पढ़ने से मुझे ऐसा लगता था कि स्वामी दयानंद के जीवन की समाज सुधार की घटनाएँ मेरी आँखों के सामने चलचित्र की भाँति

चल रही हैं। काशी शास्त्रार्थ, चाँदपुर मेला शास्त्रार्थ, विष देने वाले को माफ करना आदि भूतकाल के सीन मेरी आँखों के सामने दृष्टिगोचर होते प्रतीत हो रहे थे। सामने कुछ न होते हुए भी मैं परेशान हो उठी थी कि ओ मेरे देव दयानंद इस जमाने में यह मेरी बदनसीबी कि आज मैं हूँ तो तुम नहीं और यह उन लोगों की बदनसीबी जो आपके जमाने में थे और उन्होंने आपको बिना पहचाने ही जहर दे दिया। स्वामी दयानंद के उपकार जानकर बार-बार मेरी आँखों से आँसू झरने लगे थे, जबकि घर वाले सोचते थे कि मैं इसलिए रोती हूँ कि मेरी दुनिया उजड़ गई, उन्हें कहाँ पता था कि मैं इसलिए रो रही हूँ कि मुझे नई दुनिया मिल गई...एक नया घर मिल गया, एक नया संदेश मिल गया, जो सृष्टि के आदिकाल से है और नित नया ही रहता है : वेद ज्ञान, जो मुझे सत्यार्थ प्रकाश के कारण मिला।

7

एक दिन मैं किताब पढ़ रही थी कि मेरे अब्बू सईद आए, "फर्रू तुम यह हिन्दुओं की किताब सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ रही हो?"

"सत्य को जानने के लिए।"

"ऐसा क्या सत्य शेष रह गया जो कुरान शरीफ में नहीं है?"

"अब्बू यह किताब तो 1400 साल पहले दुनिया में आई, क्या इसके बिना करोड़ों साल से लोग अधूरे ज्ञान के साथ ही जी रहे थे? अब्बू सच तो यह है कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मुझे पता चला कि जब यह दुनिया बनी अल्लाह ने अपनी किताब वेद के रूप में तभी भेज दी थी..."

"सही बात है, लेकिन उसके बाद भी अल्लाह ने बहुत सी किताबें भेजी, ऐसी कोई कौम या जाति या भाषा नहीं जिसमें अल्लाह ने अपनी किताब न भेजी हो, लेकिन उन सब किताबों से लोगों ने अल्लाह की बातें निकालकर अपनी बातें भर दी, इसलिए अल्लाह ने अंत में पूर्ण ज्ञान के साथ पाक कुरान धरती पर उतारी।"

''अब्बू क्या अल्लाह का ज्ञान इतना कमजोर था कि लोगों ने उसे अच्छा न जानकर बार-बार बदला और इस कारण अल्लाह को अपनी किताब नए-नए संशोधन के साथ भेजनी पड़ी...एक बात बताओ अब्बू ....हम जब कोई मकान बनाते हैं, उसमें कोई टूट फूट हो जाती है, तो उसकी मरम्मत करते हैं, न कि हर बार उसे तोड़कर नया बनाते हैं।''

''तुम्हारा कहने का क्या मतलब है?''

''मेरा सीधा सा मतलब है कि अल्लाह ने जब यह दुनिया बनाई अपना ज्ञान वेदों के रूप में तभी भेज दिया था...यहूदियों ने प्राचीन ग्रंथों को विकृत किया, ऐसा दोष उन पर कुरान ने लगाया है और देवपुत्र कहकर ईसा की पूजा करने वाले इसाइयों की निंदा की है। सृष्टि के आरंभ में अथर्ववेद महर्षि अंगिरा के माध्यम से इस दुनिया में आया ...जेंद अवेस्था अथर्ववेद का ही रूपांतरण मात्र है, परंतु यह रूपांतरण विकृत रूप में हुआ, जैसे पारसियों ने एक छंद का गलत रूपांतरण करके लिख मारा कि मशहर के दिन सब मुर्दे जी उठेंगे और उन्हें न्याय मिलेगा? यह विकृत ज्ञान पारसियों से यहूदियों ने और यहूदियों से मुहम्मद ने लिया।

''जैसे मकान की थोड़ी बहुत टूट-फूट होने पर उसकी मरम्मत करते हैं, वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान को शुद्ध किया जाना चाहिए था...और जब घर जब पूरी तरह टूट जाता है, तो तब नया घर बनाते हैं, ठीक ऐसे ही जैसे सृष्टि समाप्त होती है और नई सृष्टि बनती है, तो ईश्वर तब एक ही बार नया ज्ञान भेजता है।''

''खुदा के कहर से डर नालायक, पता नहीं वो क्या कर देंगे।''

''क्यों क्या खुदा कुछ भी कर सकता है?''

''हाँ खुदा कुछ भी कर सकता है!''

''अब्बू, क्या खुदा अपने जैसा शक्तिशाली दूसरा खुदा बना सकता है।...नहीं अब्बू अल्लाह अपने जैसा दूसरा शक्तिशाली खुदा नहीं बना सकता...ईश्वर भी अपने नियमों और प्रकृति के सिद्धांतों से बंधा हुआ है। यह मैं नहीं दुनिया की पहली किताब ऋग्वेद कहती है...।''

अगले दिन भी ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। मैं ऋग्वेद का भाष्य पढ़ रही थी कि अम्मी आते ही भड़क गई, ''फर्रू तुम फिर काफिरों की किताब वेद पढ़ रही हो, क्यों हमें जीते-जी मारना चाहती हो...खुदा बहुत ही रहमदिल और इंसाफपसंद है, अपने गुनाहों की माफी माँग लो ...वह तुम्हें माफ कर देगा..''

''अम्मी मैंने कौन सा गुनाह कर दिया...क्या दुनिया की पहली किताब वेद पढ़ना गुनाह है? और क्या सचमुच खुदा गुनाहों को माफ कर देता है? नहीं झूठ बोलती हो अम्मी तुम, खुदा किसी के भी गुनाह माफ नहीं कर सकता...?''

''नास्तिक हो गई है तु जो खुदा की रहमदिली और इंसाफ पर सवाल उठा रही है।''

''नहीं नास्तिक नहीं हूँ मैं...मैं भी मानती हूँ कि खुदा रहमदिल और इंसाफ करने वाले हैं। लेकिन कुरान में जैसा लिखा है वैसा नहीं, वरन वेद में जैसा लिखा है वैसा खुदा है मेरा....खुदा रहमदिल इसलिए है कि उसने हमें कर्म करने की आजादी दी है, अपने बुद्धि, बल और विवेक से हम सच और झूठ में अंतर करके स्वेच्छा से कर्म करते हैं यही खुदा ही रहमदिली है, लेकिन हम जैसा कर्म करेंगे, उसके अनुसार खुदा हमें वैसा ही फल देगा यही खुदा का न्याय है, जैसा कर्म वैसा फल ...यही खुदा का इंसाफ है...नमाज, पूजा पाठ या किसी रिश्वत के कारण खुदा की न्याय व्यवस्था रत्तीभर भी इधर से उधर नहीं होती...कोई गुनाह करके कितनी भी नमाज पढ़ ले, पूजा पाठ कर ले, उसका गुनाह खुदा माफ नहीं कर सकते...उसे बुरे कर्म का फल बुरा मिलकर ही रहेगा ही...हाँ अच्छे कर्म का फल भी उसे अच्छा अवश्य मिलेगा।''

''तो फिर खुदा की इबादत करना सब बेकार है?''

''नहीं अम्मी, ईश्वर की प्रार्थना करना बेकार नहीं है, उससे हमें सही कार्य करने की प्रेरणा मिलती है...अल्लाह की इबादत से हम झूठ से सच...अंधेरे से रोशनी और मौत से अमरता की ओर जाते हैं।''

''अपना वेद ज्ञान अपने पास रख, और यह ले पर्चा इसमें वह सब

लिखा है, जो अगली तारीख पर तुझे कोर्ट में ताज के खिलाफ बोलकर उस काफिर को हमेशा के लिए सलाखों के पीछे पहुँचाना है।''

''जी अम्मी...।''

मैं अम्मी का दिया पर्चा लेकर उसे पढ़ने लगी थी।

एक दिन घर में कोई न था तो मैं वीसीआर पर रामायण की सीडी लगाकर उसे देखने लगी, अचानक ही मेरा भाई युसूफ आ गया। और भड़क उठा मेरे ऊपर, ''मेरी प्यारी बहन, फर्रू जितने ध्यान से तुम रामायण देख रही हो, यदि उतने ध्यान से दीन की शिक्षा ली होती तो तुम जिंदा पीर बन जाती है...इस रामायण से क्या शिक्षा मिलेगी, उस राम ने तो अपनी गर्भवती पत्नी सीता को तलाक देकर बयाबान जंगल में मरने के लिए भेज दिया था, ऐसे ही जैसे तुम्हारे ताज ने तुम्हें...''

''भाईजान! भले ही श्रीराम ने सीता का त्याग कर दिया, लेकिन सीता ने तो राम का त्याग नहीं किया था? और दीन की शिक्षा लेकर जिंदा पीर तो औरंगजेब भी बना था, लेकिन अपने छोटे ही नहीं बड़े भाई को भी मारकर युवराज बना और पिता को कैद करके दिल्ली का बेरहम तानाशाह...और तुम राम पर अँगुली उठाते हो, उन्होंने तो पिता की एक आज्ञा का पालन करने के लिए 14 वर्ष वनों में गुजार दिए और उसका छोटा भाई लक्ष्मण भी सुख चैन और पत्नी को महल में छोड़कर वनों में श्रीराम के साथ रहा, सेवा करने के लिए और जिस भाई भरत को गद्दी पर बैठाया, उसने भी सिंहासन पर श्रीराम की खड़ाऊँ रखकर प्रतिनिधि के रूप में शासन किया और वनवास से वापस आने पर राजपाट राम को सौंप दिया....ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम हिन्दुओं के ही नहीं हमारे भी पूर्वज हैं।''

8

उस दिन होशोहवाश में मैं जज के सामने अपना अंतिम बयान दर्ज करा रही थी, लेकिन अब कोई भय मेरे अंदर नहीं था, था तो बस सत्य और असत्य का आभास। मैंने जज साहब से कहा, ''जज साहब मैं अपने

पति के साथ ही रहना चाहती हूँ। मुझे मजहब और धर्म नहीं चाहिए, मुझे तो मेरा पति चाहिए। एक कहावत है अनपढ़ जाट पढ़े जैसा और पढ़ा-लिखा जाट खुदा जैसा...मेरा पढ़ा-लिखा पति ही मेरा खुदा है, वही मेरा मजहब है। वे सही-सलामत रहेंगे तो धर्म तो अपने आप ही बन जाएगा, क्योंकि मैंने इनसे ही सीखा है कि प्रेम सबसे अच्छा मजहब है। मैं जानती हूँ कि अब हमें न मुसलमान अपनाएँगे और न ही हिन्दू, लेकिन हम तो अपना पुराना धर्म अपना ही सकते हैं। जो न हिन्दुओं का है, न मुसलमान का।''

''पुराना धर्म मतलब?'' जज ने पूछ लिया था।

''जज साहब! इसलाम जहाँ कहता है मुस्लिम बनो, वहीं बाइबिल कहती है इसाई बनो....लेकिन दुनिया के सबसे पुराने ग्रंथ वेद ही कहते हैं कि मनुर्भव यानी मनुष्य बनो...इसलिए मैं न हिन्दू बनना चाहती हूँ, न मुस्लिम...मैं तो मनुष्य यानी भारतीय बनकर जीवन गुजारना चाहती हूँ।''

''मनुर्भव यानी मनुष्य यानी भारतीय इसका क्या मतलब है?''

''जज साहब जब-जब धर्म बदला है, तब-तब राष्ट्रीयता भी बदल गई है। सिंध और पंजाब में धर्म बदला तो भारत माता का एक अंग टूटकर वहाँ की नागरिकता पाकिस्तानी हो गई, बंगाल में धर्म बदला तो फिर मेरी भारत माता का दूसरा अंग टूट गया और वहाँ की नागरिकता बांग्लादेशी हो गई...मेरी भारत माता के इतने टुकड़े हुए हैं कि कहीं पाकिस्तान, कहीं बांग्लादेश, कहीं अफगान और यहाँ तक कि बर्मा, इंडोनेशिया तक इसी से टूटकर नए-नए देश बने हुए हैं...लेकिन मजहब के नाम पर नया देश बनाने से किसे शांति मिली है, किसी को भी तो नहीं, यदि शांति मिली होती, जन्नत मिली होती तो इराक के आतंकी और अफगान के तालिबान अपने ही मुस्लिम भाइयों का खून खराबा नहीं कर रहे होते। जैसे अन्य इस्लामिक देशों में हो रहा है इसलिए मैं चाहती हूँ मेरी होने वाली संतान की नागरिकता भारतीय रहे।''

''भारतीय नागरिकता,'' जज साहब ने पूछा, ''क्या कोई तुम्हें भारत से बाहर भेजने का षड्यंत्र रच रहा है?''

''नहीं जज साहब ऐसी बात नहीं, दरअसल मेरे बच्चों की नागरिकता भारतीय तभी रह सकती है, जब मेरे बच्चे पवित्र वेद पढ़ें, राष्ट्रधर्म निभाने की शिक्षा वेदों के अलावा और कोई धर्मग्रंथ देता ही नहीं, यदि लोगों ने वेद पढ़े होते तो भारत माता के इतने टुकड़े नहीं होते।''

''लेकिन तुमने वेद पढ़े हैं, तो फिर ऐसे ख्यालात पहले क्यों नहीं आए?''

''जज साहब! यही तो मेरी बदनसीबी है कि मैंने वेद नहीं पढ़े, लेकिन मेरी खुशनसीबी है कि मुझे वेदपाठी शौहर मिल गया। कुछ ही दिन पहले मैंने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश नूरे हकीकत पढ़ा है, उसी में वेदों के संदर्भ पढ़े हैं, धर्म के नाम पर धंधा करने वाले मत-मतांतरों की खोली गई पोल पढ़ी है...उसे पढ़कर ही मेरी धारणाएँ बदल गई। मैं कर्जदार हो गई स्वामी दयानंद सरस्वती की कि उनके अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश ने मेरी आँखें खोल दी...'' मैं घर से नूरे हकीकत लेकर आई थी, जिसे जज की ओर बढ़ा दिया, जज साहब ने उसे देखकर रख लिया।

''भारत का संविधान किसी को भी कोई भी मत, मजहब या धर्म अपनाने से नहीं रोकता, इसीलिए तुम्हें वैदिक धर्म अंगीकार करने की अनुमति दी जाती है और तुम अपने पति के साथ जा सकती हो ...'' आगे भी जज ने फैसले में बहुत कुछ कहा, सब सुनते रहे और फिर मैं नील के कंधे पर हाथ रखकर कोर्ट परिसर से निकली...तो कोर्ट के बाहर लोगों के हाथों में हॉकी, डंडे देखे, लेकिन पुलिस को देखकर उन्होंने छिपा लिए...लड्डू भाई ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया। जब हम अदालत से निकलकर सड़क पर आए तो मैं आश्चर्यचकित थी कि हमें देखने के लिए सैकड़ों लोग सड़कों पर थे। मस्जिद से मौलवी और मंदिर से पुजारी भी निकल-निकलकर सड़कों पर आ गए थे। दूकानों से उनके मालिक

निकलकर हमें देख रहे थे, यहाँ तक कि फुटपाथ पर पटरीवालों और रहड़ीवालों के लिए भी हम जिज्ञासा की वस्तु बन गए थे। मैं भी चारों ओर लोगों को देख रही थी, उनकी प्रतिक्रिया परख रही थी, अब मुझे किसी का भय नहीं था। एक मोची जो किसी के जूते ठीक करने का कार्य छोड़कर ही उठ खड़ा हुआ था और साईं मंदिर की दीवार से सटकर पैर के पंजों पर खड़ा होकर हमें देख रहा था। तभी पुजारी की दृष्टि उस पर पड़ी और उसे दीवार के सहारे से धक्का दे दिया था। वह जमीन पर गिरते-गिरते बचा, मैंने मन में सोचा कि ऐसी ही प्रवृत्ति के कारण हिन्दू समाज का पतन हुआ है।

अब हमारा हैदराबाद में कोई मकान नहीं था, पिता के घर नहीं जा सकती थी, इसलिए कोई ठिकाना होने तक आर्य समाज मंदिर में जाना उचित समझा। हम आर्य समाज मंदिर की ओर बढ़ चले, पुलिस की घर तक पहुँचाने की जिम्मेदारी थी, लेकिन घर तो था नहीं...कुछ लोग अभी भी हमारे पीछे थे, मेरा भाई युसूफ अभी भी प्रतिशोध लेना चाहता था शायद या फिर हमें मौत के घाट उतारने का उसका इरादा अभी भी पक्का ही था...सायँकाल हो चुका था और आर्य समाज में हवन चल रहा था। एक स्टूल पर कुछ धार्मिक पुस्तकें रखी थी, शायद हवन के बाद पढ़ने के लिए...सत्यार्थ प्रकाश...पवित्र वेद...मंदिर की दीवार पर वेदों की कुछ सूक्तियाँ भी लिखी थी, जिनमें से एक थी : मनुर्भव यानी मनुष्य बनो...इन सबको युसूफ पढ़ रहा था, लेकिन अचानक ही उन्होंने अपना दाहिना हाथ कंधे के पीछे किया और छिपाया हुआ खंजर निकाल लिया था। अब मेरी और नील की हत्या तय थी, क्योंकि पुलिस वाले आर्य समाज मंदिर के द्वार से ही लौट गए थे। उनकी ड्यूटी पूरी हो गई थी...नील मुझे बचाता हुआ आगे बढ़ा तो मैंने उसे रोक दिया और बलिदान देने की इच्छा जताई, क्योंकि क्रांति लानी है तो बलिदान तो देना ही होगा, मेरी भी इच्छा हो गई थी वेदप्रचार की क्रांति आए, इसलिए मैंने सोचा कि पहली बलिदानी मैं ही बनूँ और मैंने मत्था स्टूल पर रखे वेदों पर रख दिया, सब लोग हक्के बक्के रह

गए, लेकिन कोई युसूफ को रोकने का साहस न कर पाया, वह मेरे पास आया, लेकिन उसने खंजर वाले हाथ को ऊपर जरूर किया, परंतु वह खंजर तो कब का जमीन पर गिर पड़ा था, अब तो उसका हाथ मेरे सिर पर रखने के लिए उठा था, मुझे आशीर्वाद देने के लिए उठा था। अदालत में सही अर्थों में मेरे पक्ष में होते हुए भी मुझे न्याय नहीं मिला था, क्योंकि वहाँ हमारी पूर्ण सुरक्षा की जिम्मेदारी पुलिस को नहीं सौंपी गई, सही अर्थों में सच्चा न्याय तो मुझे आर्य समाज मंदिर में मिला, जहाँ जान के दुश्मन बने भाई से मुझे अंततः बदले में प्रेमभरा आशीर्वाद मिला, लेकिन यह भी मेरी जीत नहीं थी, यह तो मेरे देव दयानंद की ही जीत थी, यह उन वेदों की जीत थी, जिन्हें मैंने भले ही न पढ़ा हो, लेकिन समझने का प्रयास तो किया और उनके छूने मात्र ने ही मेरी जिंदगी बदल दी, मरने के बाद स्वर्ग मिलता है या नहीं... मैं नहीं जानती, लेकिन वेदों की शरण में जाने से निस्संदेह जीते जी ही स्वर्ग मिलता है, जीते जी ही पुनर्जन्म होता है। मैं दूसरा जन्म पाकर धन्य हो गई।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. दर-दर की ठोकरे और घर वापसी, फरहाना ताज, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32, संस्करण 2016
2. मेरा दूसरा जन्म, फरहाना ताज, संस्करण 2017
3. लवलोर्न बेगम एंड लोस्ट निजाम, फरहाना ताज, एडीशन 2015
4. घर वापसी, फरहाना ताज, संस्करण 2003

घर चलो न पापा

दो बालिकाएँ नमाज पढ़ रही थी। नमाज खत्म होने पर एक उसमें से जमीन पर गिर पड़ी, दूसरी ने उसे उठाया, ''क्या हुआ जन्नत...'' माथे पर हाथ रखती हुई बोली थी, ''तुम्हारा बदन तो तप रहा है, क्या नमाज पढ़नी जरूरी थी ऐसी हालत में...।'' उसे उठाती हुई बिस्तर पर ले गई थी।

''हाँ संजीदा तुम तो जानती हो कि मैं पाँच वक्त की नमाज पढ़ती हूँ, कभी मिस नहीं करती...मिस करूँगी तो अल्लाह मिया को क्या मुँह दिखाऊँगी?''

''अच्छी बात है बाबा, चल मौली साहब के पास चलते हैं, दुआ पढ़कर फूँक मार देंगे तो बुखार ठीक हो जाएगा।''

''नहीं मैं पैरासीटामोल ले लूँगी, मुझे दुआ की नहीं दवा की जरूरत है।''

''चल पगली अल्लाह से बड़ा कोई हकीम है क्या? कुरान पढ़ने से बढ़कर कोई चमत्कार...और नमाज से बढ़कर कोई दवा...चल मौली साहब के पास, ऐसी दुआ पढ़ेंगे कि सारी बीमारी छूमंतर हो जाएगी।''

''चल दीदी जैसी आपकी मर्जी।''

वे थोड़ी ही देर में हॉस्टल के कक्ष से मौली साहब के कक्ष में पहुँच गई थी। मौली साहब ने दुआ पढ़कर फूँक मार दी थी और फिर कहा, ''अरे तुम्हारे ऊपर तो जिन्न का साया है, पर चिंता नक्को करो जी, अल्लाह ताला सब ठीक कर देंगे।''

''जी मौली साहब, शुक्रिया।'' जन्नत ने कहा था।

''मौली साहब, अब जन्नत ठीक तो हो जाएगी ना...'' संजीदा ने

कहा था, ''बहुत चिंता हो रही है इसकी।''

''ठीक क्यों नहीं होगी,'' मौली साहब ने कहा, ''पर तुम इनसे दूर रहना, कहीं ऐसा न हो कि जिन्न इनके अंदर से निकलकर तुम्हारे अंदर घुस जाए और यह कुछ अनाप-शनाप बके तो विश्वास नहीं करना, क्योंकि जिन्न कुछ भी उल्टा-पुल्टा बुलवा सकता है। बड़ा शक्तिशाली जिन्न है।''

''जी मौली साहब, लेकिन अब दोबारा दुआ पढ़ाने के लिए कब आना है।'' संजीदा ने कहा।

''रात को, जब हॉस्टल में सब सो जाएँ तब आना और बिल्कुल अकेली।''

''अकेली क्यों?''

''अकेली आने से डरती हो? तुम्हारी बला दूसरे के सिर चढ़ गई तो कौन जिम्मेदार होगा?''

2

रात का समय था, दोनों सो रही थी... जन्नत धीरे से उठी, संजीदा को कपड़ा उढ़ाया और शॉल ओढ़कर मौली साहब के कमरे की ओर चल पड़ी थी। अपने आप ही बड़बड़ाई थी, ''दुआ पढ़ाकर आती हूँ, कहीं मुआ मेरा जिन्न मेरी सहेली को न आ जाए...''

थोड़ी ही देर में वह मौली साहब के कमरे में पहुँच गई थी, उस समय रात को मौली साहब कंघी कर रहे थे, सजे सँवरे थे और इत्र लगा रहे थे। बिस्तर पर फूल सजा रहे थे।

''सलाम वालेकुम।'' जन्नत ने कक्ष में प्रवेश करते हुए कहा।

''वालेकुम अस्सलाम,'' मौली साहब ने जवाब दिया, ''आइए मोहतरमा और दरवाजा कुंडी लगाकर बंद कर दो...कहीं कोई दूसरा जिन्न न आ जाए।''

''जी।''

''माशा अल्लाह क्या खूब लग रही हो...आज हम ऐसी दुआ पढ़ेंगे

कि तुम्हारे अंदर का शैतान जिन्न हमेशा के लिए तुम्हारा जिस्म छोड़कर भाग जाएगा...और तुम तो जन्नत हो ना...पर आज हम आपको असली जन्नत दिखाएँगे।''

''असली जन्नत मतलब?''

''हाँ देखना...अच्छा चलो कपड़े उतारो...''

''जी कपड़े उतारूँ,'' जन्नत ने शक की नजर से कहा, ''मगर क्यों?''

''कपड़े नहीं उतारोगी तो मैं जिन्न से कैसे पीछा छुड़वाऊँगा तुम्हारा।''

''जी।'' उसने बुर्का उतार दिया था।

''मोतरमा, खाली बुर्का या चुन्नी उतारने से काम नहीं चलेगा।''

''तो फिर?''

''सारे कपड़े उतारो।''

''नहीं मैं सारे कपड़े नहीं उतारूँगी।''

''सारे कपड़े नहीं उतारोगी तो जन्नत कैसे देखोगी।''

''जन्नत देखने के लिए तो पहले मरना पड़ता है ना...मैं नहीं मरूँगी...''

''तुम्हें मरने को कौन कहता है, मर तो हम गए हैं ना आप पर।''

''क्या बकवास करते हैं आप...'' जन्नत ने मौली साहब से कहा, ''मुझे नहीं देखनी जन्नत-वन्नत...'' मौली उसे पकड़कर जबरदस्ती करने लगा था और वह चिल्लाने लगी थी, ''मुझे छोड़ दो....अल्लाह के लिए मुझे छोड़ तो...''

3

कमरे में मुर्गे बोलने की आवाज आ रही थी, चिड़िया चहचहाने लगी थी बाहर, लेकिन रोने की भी आवाज आ रही थी, जन्नत बैठी रो रही थी।

संजीदा अँगडाई लेते हुए उठ बैठी थी, ''या अल्लाह शुक्रिया तेरा

...बहुत अच्छी नींद आई।'' फिर जन्नत की ओर देखकर चौंकी थी, ''जन्नत क्या हुआ तुझे, तू रो क्यों रही है, अरे तेरी तो आँखें सूज गई, खून की उल्टी आई क्या, कपड़ों पर खून लगा है...या किसी जानवर ने हमला किया है...गालों पर काटने के निशान...''

जन्नत दहाड़ मारकर रोने लगी थी और संजीदा के गले से लग गई थी और उसे रात की घटना मौली साहब की करतूत बता डाली थी।

दिन भर तो उन्होंने कैसे काट लिया, लेकिन रात को दोनों चुपके से अपना आवश्यक सामान बांधकर निकल ली थी वहाँ से।

''अब समझ में आया...'' संजीदा ने कहा, ''जब जोया बोलती थी कि जन्नत देखी क्या? उस कोड़वर्ड को मैं समझती थी कि तुम्हें पूछ रही है...मुझे क्या पता था कि मौली साहब ने उसे भी अपनी गंदी हरकत से नापाक कर दिया है।''

''अब बस भी करो...'' जन्नत बोली, ''हम हॉस्टल से तो भाग आए...मगर जाएँगे कहाँ...ऊपर से रात का समय...।''

''रेलवे स्टेशन चलते हैं...जो भी रेल आएगी उसमें बैठ लेंगे...और अपने घर चले जाएँगे और घर वालों को मौली साहब की करतूत बता देंगे।''

''ना...बाबा ना...'' जन्नत ने प्रतिरोध किया था, ''मैं घर नहीं जाऊँगी, जोया भी तो भाग गई थी ना हॉस्टल से घर...घर वालों ने उसकी सुनी क्या? उसे मार-पिटकर फिर वापस मौली साहब के पास छोड़ गए अपनी ही इज्जत को...''

''हाँ तुम ठीक कहती हो...हम घर नहीं जाएँगे.....जोया शायद जन्नत देखकर पागल हो गई है।''

दोनों रेलवे स्टेशन गई, वहाँ एक रेल आकर रुकी तो उसमें बैठ गई, लेकिन टीटी ने उन्हें बिना टिकट पाया तो गाँव की गँवार समझकर उन्हें सुबह सवेरे एक ग्रामीण रेलवे स्टेशन पर उतार दिया। वे दोनों गाँव की ओर चल पड़ी थी।

''बहुत भूख लग रही है दीदी...'' जन्नत ने कहा था चलते हुए, ''हम रेल में बैठकर इस गाँव में तो पहुँच गए...बिना टिकट होने से टीटी ने इस गाँव के स्टेशन पर उतार दिया, मगर हम जा कहाँ रहे हैं?''

''जहाँ अल्लाह ले जाए।'' संजीदा ने कहा, ''वहीं चले जाएँगे।''

''नहीं अल्लाह पर मेरा भरोसा नहीं, मौली साहब भी तो इस धरती पर अल्लाह के ही दूत हैं...कुरान का प्रचार-प्रसार करते हैं काफिरों को इसलाम कबूल करवाकर शबाब लूटते हैं, मगर उसने मेरे साथ क्या किया?''

इसी समय कुछ स्त्री पुरुष साईं राम...साईं राम कहते हुए जा रहे थे, तो संजीदा बोली, ''चल इनके साथ चलते हैं, सुना है साईं तो सब दुखियों की सुनता है...अल्लाह मालिक एक है।'' वे उनके पीछे-पीछे चलने लगी थी।

वे लोग एक आश्रम में जा पहुँचे थे, जहाँ सब इकट्ठा हुए और फिर एक साधु ने अपना प्रवचन देना शुरू किया था, ''भक्तों कलयुग में बिना गुरु के मुक्ति नहीं मिलती, गुरु भगवान का रूप होता है... धन दौलत क्या चीज है, गुरु को जो सर्वस्व समर्पण कर देता है, उसे स्वर्ग का अधिकारी होने से कोई नहीं रोक सकता।''

उन्होंने उनका प्रवचन सुना और दिन वहीं आश्रम में काट दिया, लेकिन रात को कहाँ जाती, इसलिए वहीं ठहर गई और जैसे ही अंधेरा हुआ तो सत्संग पंडाल में ही सो गई थी दोनों...लेकिन वहाँ भी उन्हें भला कौन आराम की नींद सोने देता...सेवादार लाठी की ठक-ठक करते हुए आ पहुँचा था, ''कौन है वहाँ?'' पास आ गया था जन्नत और संजीदा के, ''कौन हैं आप और यहाँ क्यों सो रही हैं, घर नहीं गई।''

''सेवादार जी हमें सोने दो...'' संजीदा ने कहा, ''हमारा इस दुनिया में कोई नहीं।''

''ओह!'' सेवादार ने कहा, ''यह बात है, परंतु जिसका इस दुनिया में कोई नहीं होता, उसके श्रीहरि साईं हैं...कलियुग में कलि के

अवतार वही हैं...लेकिन यहाँ सोने से पहले साईं को समर्पण करना होगा।''

''समर्पण मतलब?''

''पूरी आस्था के साथ गुरुमंत्र लेना और गुरु की हर आज्ञा का पालन करना।'' सेवादार ने बता दिया था।

''कहाँ हैं गुरुदेव? क्या रात के समय गुरुमंत्र लेना ठीक है? सुबह नहीं ले सकते? अब हमें सोने दो ना प्लीज!''

''नहीं, जब तक तुम गुरु के प्रति समर्पण नहीं करोगी आश्रम से तुम्हारा नाता नहीं जुड़ सकता।''

''तो ठीक है, दिला दो गुरुमंत्र।'' जन्नत ने सेवादार की बातों पर सहमति जता दी थी।

जब वे सेवादार के साथ श्रीहरि साईं की कुटिया में पहुँची तो वे अर्धनग्न से बैठे थे और उनके प्रवेश करते ही बोले, ''गुरुमंत्र लेकर समर्पण करने आई हो....आपका ही इंतजार था, परमपिता ब्रह्मा ने तुम्हारे आने की भविष्यवाणी तो सदियों पहले ही कर दी थी, तुम्हें तो आना ही था।''

''जी गुरुदेव।'' संजीदा ने कहा था।

''उधर से शहद उठा लो...'' साईं ने कहा, ''दोनों को एक साथ गुरुमंत्र देंगे हम जन्नत और संजीदा और हम आपका नाम जानकी और सीता रखेंगे...।''

''जी।'' जन्नत ने कहा।

''हम शहद से दो बार जीभ पर ओम् लिखेंगे, आप दोनों वह शहद चाटना। और फिर हम पिंडी पर शहद लगाएँगे, वह चाटना...''

''पिंडी मतलब?'' संजीदा ने पूछा।

''अरे आप पिंडी नहीं जानती...पहले शिव की मूर्ति के मुख की पूजा होती थी, अब उनकी पिंडी की पूजा होती है।''

''संजीदा भाग...'' जन्नत बोल उठी थी, ''यह शैतान भी मौली साहब से कम नहीं।''

''मेरी राधा और रूकमणी कैसे भागोगी,'' साईं ने कहा था, ''बाहर सेवादारों का पहरा है....चलो कपड़े उतारो, वरना मैं ही इन्हें फाड़ डालूँगा...''

''गुरुदेव मेरी सहेली बीमार है,'' संजीदा ने कहा, ''इसे छोड़ दो और जो चाहो मेरे साथ कर लो, गुड़िया समझकर खेल लो या बेटी समझकर चरणों में स्थान दे दो भगवान साईं।''

''बालिके अभी तो हम जवान हैं हमें बेटी नहीं, खेलने के लिए गुड़िया चाहिए।''

''संजीदा तुम क्या कह रही हो?'' जन्नत ने कहा, ''जानती भी हो कितनी पीड़ा होती है...''

''तुम चुप रहो और कुटिया की कुंडी खोलकर द्वार पर पहरा दो और सेवादार को वहाँ से हटा दो।''

''सुना नहीं जन्नत...'' साईं ने कहा, ''इन्होंने क्या कहा? बाहर पहरा दो और सेवादारों को उनके कमरों में भेज दो...''

जन्नत ने कुंडी खोली, बाहर चली गई..

''सेवादार अपने कक्षों में चले गए भगवन!'' संजीदा ने फिर साईं से कहा, ''बहुत भूख लगी है प्रभु, क्या भूखी गुड़िया से खेलोगे?''

''सामने सेब भी हैं और धारदार चाकू भी... अब चाकू से सेब काटो या हमें ही काट दो...'' साई ने कहा, ''हम तो वैसे ही कट गए हैं आप पर।''

संजीदा ने सेब उठाया और चाकू से काटने लगी, साईं के पास बैठ गई, साईं उसे बुरी नियत से छूने लगा था तो संजीदा ने उस पर चाकू का जोरदार प्रहार किया और साई चिल्ला उठा था, ''काट दिया, भरी जवानी में हिजड़ा बना दिया मुझे...''

संजीदा ने बाहर आकर जन्नत का हाथ पकड़ा, ''भाग जन्नत भाग...मैंने उसकी पिंडी ही काट दी, न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।''

4

दोनों अब रेलवे स्टेशन पहुँची और वहाँ से रेल में सवार हुई और एक

अन्य बड़े शहर के स्टेशन पर उतर गई थी, और वहाँ से शहर में प्रवेश किया था...घूमते-घूमते कहीं नए ठिकाने की तलाश में दोनों परेशान हो उठी थी। सड़क पर डरी सहमी सी संजीदा एवं जन्नत जा रही थी कि सामने से एक पुलिसवाला आता दिखाई दिया, तो दोनों डर गई थी।

''जन्नत पुलिस...'' संजीदा ने कहा, ''कहीं हमें ही तो तलाश नहीं कर रही।''

''हो सकता है, अब क्या करें?''

''सामने देख निजाम ग्राउंड में बुक फेयर लगा है, उसमें जाकर खो जाते हैं पुलिस से बच जाएँगे।''

''चल दीदी।''

फिर दोनों छिपते हुए बुक फेयर में प्रवेश कर गई थी। दोनों एक बुक स्टाल के सामने ठहर गई और किताबें उठाकर देखने लगी थी, अचानक ही जन्नत ने एक किताब उठाकर देखते हुए कहा, ''संजीदा देख, फरहाना आंटी की किताब और उनका फोन नंबर भी है इस पर।''

''कौन फरहाना आंटी।''

''तू नहीं जानती इन्हें,'' जन्नत ने कहा, ''एक बार घर आई थी हमारे, मेरी अम्मी की सहेली हैं...'' फिर वह पुस्तक विक्रेता की ओर मुखातिब हुई, ''अंकल हमें फरहाना आंटी को फोन करना है, प्लीज एक बार अपना फोन दे दो ना...'' उसने उन्हें फोन दे दिया था।

''हैलो फरहाना आंटी मैं जन्नत!''

''कौन जन्नत? अरे हाँ याद आया...'' उधर से आवाज आई थी, ''कैसी हैं आप, आप तो हॉस्टल में रहकर पढ़ाई कर रही हैं ना...इस्लाम की तालीम ले रही हैं, अरे विज्ञान की तालीम लेना था...चलो छोड़ो ये बातें अब ये बताओ कि इस आंटी की कैसे याद आ गई।''

''आंटी हमें बचा लो आंटी...'' वह रोने लगी थी।

''बेटा क्या हुआ? रो क्यों रही हो, अच्छा जिस फोन से तुम बात कर रही हो वे तुम्हारे अंकल हैं, उन्हें अपनी समस्या बताओ, वे तुम्हारी जरूर मदद करेंगे और फोन उन्हें दो।''

''जी आंटी।'' उसने फिर फोन पुस्तक विक्रेता को दे दिया था।

''बोलो...'' पुस्तक विक्रेता ने फरहाना से कहा था।

''देखो उस बच्ची की बात सुनो और उसकी पूरी मदद करो।''

''ठीक है बेगम साहिबा...'' फोन बंद कर जेब में रख लिया था और उनसे पूछने लगा, ''बेटा मुझे अपना पापा ही समझो और जो बात हो मुझे बेझिझक बता दो!''

दोनों उसके कंधे पर सिर रखकर रोने लगी थी, ''अंकल... अंकल।''

फरहाना ने जिस पुस्तक विक्रेता से जन्नत और संजीदा की मदद करने को कहा था, उसने उन दोनों से उनके घरों का पता पूछकर वहीं उनके घरवालों को बुलवा लिया और उनके सुपर्द कर दिया, लेकिन घर वालों को इस बात पर यकीन नहीं हुआ कि उनके साथ कुछ गलत हुआ है, क्योंकि मौली साहब ने उनके घर वालों को आकर बता दिया था कि तुम्हारी बच्चियाँ लापता हो गई हैं और वे सख्त अनुशासन में रहना नहीं चाहती हैं। इसका प्रभाव यह हुआ कि संजीदा और जन्नत को दोबारा घरवालों ने आवासीय विद्यालय में भेज दिया, जहाँ जन्नत के साथ एक बार फिर इतना बुरा हुआ कि स्कूल वालों को अंततः उसे उसके घर भेजना पड़ा। उसकी बीमारी लाइलाज सी नजर आ रही थी।

5

जन्नत अस्पताल के बिस्तर पर लेटी हुई थी, डॉक्टर उसके पिता को धीरे से बता रहे थे, जन्नत की आँखें बंद थी, लेकिन कान उनकी ओर ही थे, ''खून रूक नहीं पा रहा है,'' डॉक्टर कह रहा था, ''लोहे की जंग लगी रोड़ थी शायद अंदर सैप्टिक हो गया है, बच्चादानी भी निकाल दी, लेकिन फिर भी बच नहीं पाएगी, एक दो दिन बस...''

जन्नत ने आँखें खोलते हुए कहा था, ''डॉक्टर यह तो मैं भी जानती हूँ कि मैं अब बच नहीं सकती, आप सब लोग मेरे ठीक होने का नहीं मरने का इंतजार कर रहे हैं।''

''नहीं बेटा हम आपको बचा लेंगे,'' डॉक्टर ने दिलासा दिलाई थी, ''तुम चिंता मत करो।''

''अब और झूठी दिलासा नहीं डॉक्टर, मरते हुए आदमी के सामने झूठ नहीं बोलना चाहिए मौली साहब ने मेरे साथ जो किया उसके जख्म तो कब्र में भी नहीं मिटेंगे, फिर मैं ठीक कैसे हो सकती हूँ, परंतु मेरी अंतिम इच्छा पूरी करोगे डॉक्टर।''

''क्या इच्छा है बेटी तुम्हारी।''

''मैं दिल्ली में अपनी फरहाना आंटी से बात करना चाहती हूँ।''

डॉक्टर ने मोबाइल निकालकर आगे बढ़ा दिया था और संजीदा ने हाथ में लेकर उसमें फरहाना का फोन मिलाकर जन्नत को दे दिया था, ''आंटी मैं जन्नत।''

''जन्नत इतनी बुझी सी आवाज में क्यों बात कर रही हो,'' उधर से फरहाना की आवाज आई थी, ''सब ठीक तो है ना?''

''आंटी मैं अंकल को कभी माफ नहीं करूँगी।''

''क्यों?''

''उन्होंने उस दिन बुकफेयर में हमारी बात तो सुनी, लेकिन हम दोनों को हमारे घर भेज दिया और घर वालों ने बिना हमारी बातें सुने हमें ही धमकाकर दोबारा मौली साहब के पास भेज दिया हॉस्टल मदरसे में....और उसने एक बार फिर मेरे साथ...'' वह फिर रोने लगी।

''बेटा रोओ मत सब ठीक हो जाएगा।''

''आंटी मैं कल तक नहीं रहूँगी, मेरा एक काम करोगी?'' वह बहुत ही भावुकता से कह रही थी।

''नहीं बेटा तुम्हें कुछ नहीं होगा...बोलो क्या काम?''

''अंकल चाहते तो मैं तुम्हारी दहलीज से शादी की चुनरी ओढ़कर सुसराल जाती, मगर अल्लाह के घर जा रही हूँ, तुम मेरे लिए कफन भेज दोगी तो मेरी रूह को शांति मिल जाएगी, मैं इन नापाक लोगों के कफन में दफन नहीं होना चाहती, जिन्होंने मुझे दोबारा जबरन भेड़िया के पास भेज दिया।''

''ऐसा मत बोलो बेटा...'' वह रोने लगी थी।

6

फरहाना का पति आ गया था, तो उसने उससे कहा, ''सुनो दो हजार रुपए चाहिए।''

''किसलिए?''

''जन्नत इस दुनिया में नहीं रही, उसकी ख्वाहिश थी कि वह कफन मेरे हाथ का ओढ़कर इस दुनिया से रूख्सत हो...इतनी जल्दी मैं तो वहाँ जा नहीं सकती, सहेली के खाते में पैसे ट्रांसफर करने हैं, उसने मेरी ओर से कफन भेज दिया है।''

''हे भगवान! परंतु वहाँ तो कब्र के लिए भी सात साल के लिए जमीन खरीदनी पड़ती है...पता करो कब्र की जमीन के लिए कितने पैसे लगेंगे एटीएम लेकर पेटीएम से उनके खाते में ट्रांसफर कर दो।''

''आप तो आर्य हैं और कब्र की जमीन के लिए पैसे? क्या यह आपके सिद्धांत के खिलाफ नहीं है?''

''एक बार सिद्धांत पर चलकर उसके माँ-बाप के पास छोड़ा और उन्होंने फिर उसे शैतान के पास भेज दिया और एक मासूम की जान चली गई मेरे कारण...उसकी आस्था इस्लाम में थी, तो उसके मुताबिक ही अंतिम संस्कार होना चाहिए...आपसे उसने कफन माँगा जीते जी ...कुछ सोच समझकर ही माँगा होगा, कफन के साथ-साथ दो गज जमीन भी उसे दे दो....और मैं चलता हूँ आज बहुत काम है।''

''आज तो छुट्टी है क्या काम है तुम्हें...''

''वकील के पास जाना है जन्नत तो चली गई, लेकिन कम से कम संजीदा को तो इंसाफ दिला दूँ, वह अभी भी उस शैतान की ऐशगाह में कैद है।''

7

मौली साहब और साईं के खिलाफ केस दर्ज करवाया गया और उसमें संजीदा को मुख्य गवाह बनाया गया। दोनों दरिंदों को कारागार में

पहुँचा दिया था...लेकिन संजीदा ने कोर्ट में स्वेच्छा से यह बात कही कि वह अपने पिता के घर नहीं जाना चाहती और न ही उस विद्यालय में और न ही किसी नारी निकेतन में जाना चाहती है, वरन उस फरहाना आंटी और उनके पति के साथ उनके घर जाना चाहती है तो अदालत में असमंजस की स्थिति पैदा हो गई थी, ''आर्डर...आर्डर...साइलेंस प्लीज...संजीदा बेगम न तो आप पिता के घर जाना चाहती हैं, न मदरसे में और न ही नारी निकेतन में...तो आप जाना कहाँ चाहती हैं?''

''जज साहब जिस आदमी ने हमारे लिए इंसाफ की लड़ाई लड़ी है...'' संजीदा ने कहा था, ''मैं और जन्नत ही क्यों कई अन्य लड़कियों को दोजख से निकालकर शैतान मौली साहब और खुद को भगवान कहने वाले श्रीहरि साईं को सलाखों के पीछे पहुँचवा दिया...मैं मुरझाई अब उन्हीं के घर आँगन में महकना चाहती हूँ।''

''मगर एक हिन्दू किसी मुस्लिम को अपने घर में क्यों रखेगा?'' जज ने उसे समझाने की कोशिश की थी, ''कोई गैर तुम्हारी पढ़ाई लिखाई, शादी विवाह का खर्च क्यों उठाएगा? पराई लड़की का बोझ क्यों ढोएगा?''

''जज साहब न तो वे हिन्दू हैं और न अब मैं मुस्लिम, और न ही मैं उनके लिए पराई हूँ...''

''मतलब?''

''जज साहब, मैंने उन्हीं का दिया हुआ स्वामी दयानंद सरस्वती का लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा है...उसे पढ़कर मुझे समझ में आ गया कि धर्म क्या है और अधर्म क्या है?''

''तो क्या है धर्म और अधर्म में अंतर?''

''मुझे जन्नत की हूर नहीं बनना...वहाँ भी मौली साहब जैसे शैतान मिलेंगे, जिनका एक से काम नहीं चलेगा वे 72-72 हूरें चुन लेंगे, तब 71 सौतन मुझे नहीं चाहिए, मेरी दृष्टि में यह अधर्म है।''

''और धर्म क्या है?''

''जज साहब मैंने स्वामी दयानंद को पढ़कर जाना कि जब यह

दुनिया बनी अल्लाह ने तभी अपनी किताब, भेज दी थी, जिन्हें वेद कहते हैं...और वेद ही अल्लाह के असली ग्रंथ हैं क्योंकि वे तो किसी को न मुस्लिम बनने को कहते हैं और न ही हिन्दू...वे तो बस मनुर्भव यानी कि मनुष्य बनने को कहते हैं, इसलिए वेदों की राह पर चलना ही धर्म है। इसलिए अब मैं न मुस्लिम रही और न मेरे नए अभिभावक हिन्दू हैं...फिर वे पराये कैसे हो सकते हैं?''

''और वे तुम्हारा अभिभावक बनने को तैयार न हों तो?''

''जज साहब, मेरे पूर्वज सदियों पहले हिन्दू थे, इसलिए मेरी नसों में भी उन ऋषियों का ही लहू है, जो इनकी नसों में दौड़ता है और कोई ऐसा पंप इस दुनिया में नहीं बना जो मेरा लहू निकालकर अरबी खून मेरे अंदर डाल दे, अब आप जो फैसला करें मुझे मंजूर होगा।''

''यह अदालत संजीदा को उसकी इच्छानुसार धर्म आचरण करने की अनुमति देती है, लेकिन अंततः संजीदा का धर्म या मजहब क्या होगा, इसका फैसला यह बालिग होने पर अदालत के समक्ष ले सकेगी, तब तक श्री .....को इसके अभिभावक के रूप में नियुक्त किया जाता है....द कोर्ट इज एक्जर्न।'' जज चला गया था, सब आदमी उठकर चले गए थे। संजीदा का नया अभिभावक माथे पर हाथ धरे बैठा था, संजीदा ने उसे आकर कहा, ''घर चलो न पापा'' उसकी अंगुली पकड़ ली थी और आगे आगे चलने लगी थी, बिलकुल बच्चों की तरह.. कालांतर में फरहाना ताज वेदों की राह पर चलते हुए मधु के नाम से जानी गई...लेकिन संजीदा को कोई नहीं जानता...आजकल संजीदा का नाम प्रज्ञा आर्य है और वे मधु की तरह ही वेदों की ओर लौट आई हैं।

संदर्भ

1. घर चलो न पापा, प्रज्ञा आर्य, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32, 2016

अनामिका

हमें बचपन से ही ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करने की अभिलाषा रहा करती है। ऐसे ही हम एक बार पाउल गाँव में भी चले गए। हम वहाँ एक खंडहर में बीते हुए इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे थे कि एक लड़की हमारे पास आई और बोली, ''दीदी! हम आपसे कुछ कहना चाहती हैं?''

''कहिए क्या कहना चाहती हैं!''

''लगता है आप तो यहाँ की रहने वाली नहीं हैं!''

''हाँ, हम यहाँ के रहने वाले नहीं हैं, दिल्ली के हैं।''

''हमें अपने साथ दिल्ली ले चलो!''

''क्यों वहाँ क्या करोगी?''

''हम कोई नौकरी करके अपना पेट पाल लेंगे?''

''आप हैं कौन? और आपके मात-पिता कहाँ हैं।''

''हमारा इस दुनिया में कोई नहीं है।''

फिर हमने जोर दिया तो उसने विस्तार से हमें बताया। उसका जन्म एक मुस्लिम खानदान में हुआ था। उसका अब्बा उसका निकाह एक ऐसे आदमी से करना चाहता है, जो पहले से ही तीन बीबी और 17 बच्चों का बाप है। लेकिन उसे यह कतई मंजूर नहीं, क्योंकि वह तो किसी हिन्दू परिवार में जाना चाहती है, जहाँ सात जन्मों का बंधन हो।

''मगर आपने मुस्लिम होकर हिन्दू धर्म से क्यों प्रीत लगाई?'' हम पूछ बैठे थे उसे तो उसने बताया, ''हमारे घर की दीवार एक आर्य समाज मंदिर से लगी हुई है। हम अक्सर घर की छत पर बैठकर पढ़ा

करते थे और रविवार को आर्य समाज मंदिर से कोई उपदेशक के उपदेश की वाणी हमारे कानों में पड़ा करती थी। एक बार हम आर्य समाज के मंदिर में चले गए और फिर घरवालों से नजरें बचाकर हर रविवार को जाने लगे और वहीं एक युवक से हमारा परिचय हुआ! लेकिन यह बात अधिक दिनों तक भला कैसे छिपी रह सकती थी, इसलिए रविवार को हमारा घर से निकलना ही बंद कर दिया गया। फिर भी हवन की सुगंधी, वेदों की वाणी हम छत पर बैठकर ग्रहण करते ही थे। हमारा छत पर बैठना भी बंद कर दिया और हम कहीं काफिर न हो जाएँ इसलिए हमारा निकाह एक बूढ़े आदमी से तय कर दिया, जो हमें स्वीकार नहीं। इसलिए हम यहाँ आत्महत्या करने के मकसद से आए थे। लेकिन हमारी रूह की आवाज कहती है कि खुदकुशी करना पाप है, इसलिए समझ में नहीं आता कि हम क्या करें?''

उसकी अविश्वसनीय सी बातों के कारण हमने उसे बहुत समझाया कि वह अपने घर चली जाए और अंधेरा होते ही हम वहाँ से अपने ठहरे हुए स्थल की ओर चल दिए। अगले दिन हम लोगों ने एक बस में सफर किया और हम पुणे पहुँचे। पुणे वह पवित्र शहर है, जहाँ कभी किशोर शिवाजी ने एक गोहत्यारे का वध किया था, पुणे वह पवित्र शहर है, जहाँ कभी वीर सावरकर ने अपने कर्मों से पवित्र किया था और पुणे वह पवित्र शहर है, जहाँ मेरे देव दयानंद सरस्वती ने 15 व्याख्यान दिए थे, जिन्हें सुनकर जस्टिस रानाड़े और एओ ह्यूम उनके दीवाने हो गए थे। हाँ वही पुणे शहर उसमें कदम रखते ही जीते जी स्वर्ग में प्रवेश करने का आभास अंतर्रात्मा को होता है। पुणे में हमने 24 घंटे बिताए और हमने देखा कि वह लड़की हमारा पीछा करते-करते वहाँ भी आ पहुँची थी। एक बार तो हमें लगा कि कहीं इस लड़की के साथ कोई और न हो और वे हमारा पीछा कर रहे हों? क्या कोई हमें हानि पहुँचाने का प्रयास तो नहीं कर रहा, लेकिन फिर मन में आया कि ऋषि दयानंद तो ऐसा कदाचित नहीं सोचा करते थे, इसलिए हमने भी यह विचार छोड़ दिया। हमने पुणे से दिल्ली आने के लिए तैयारी कर ली थी।

पुणे से नई दिल्ली आने के लिए भारतीय रेल हवा से बातें करते हुए दौड़ रही थी। रात का समय था हम अपनी-अपनी बर्थ पर सो गए। मेरी बर्थ नीचे थी और मेरे हमसफर नील की बर्थ बीच वाली, नीचे की बर्थ निधि की थी और उस समय तक तेजस एवं कोमल (तमन्ना) इस दुनिया में आई नहीं थी। हालाँकि तेजस मेरे पेट में थी और मुझे नींद नहीं आ रही थी। नील तो जोरदार खर्राटे मार रहा था। मैं तो कल्पना में खोई हुई थी कि मेरी तेजस मुझे पेट में ही कह रही हो कि 'मम्मी सो जाओ, डरो मत मैं तेरे पेट में पैर नहीं फैलाने वाली।' हे भगवान इसने पेट में ही पैर फैला दिए तो....तभी कानों में आवाज गूँजी, ''यह आपकी ही बेटी है!'' वह आवाज पेट से नहीं गूँजी थी, पास आए हुए टीटी ने कही थी। टीटी के साथ वही पाउल गाँव वाली लड़की थी, ''तू रेल में भी आ गई?'' मैंने तो इतना ही कहा, टीटी ने आगे बोल दिया, ''इसने बताया कि यह बिना रिजर्वेशन के आई है, आप लोगों को शर्म नहीं आती, खुद आरक्षण करवाया और जवान बेटी को बिना टिकट लेकर आए, चलिए 850 रुपए निकालिए!''

मैं असमंजस में थी और मैंने फिर बिना कुछ सोचे समझे अपने पर्स से पैसे निकालकर टीटी को थमा दिए। वह निधि के पास एक ही बर्थ पर सो गई। लेकिन मेरी तो आँखों में अब नींद थी ही नहीं...एक बेटी और बिना जने ही गले पड़ गई, कहीं कोई पुलिस केस हो गया तो...किसी ने शिकायत कर दी तो कि किसका अपहरण करके लाए हो ...तरह-तरह के सवाल और जवाब एक का भी नहीं। तीन बजे करीब नील उठे तो मैंने उसे सारी बातें बताई। वह कुछ नहीं बोले और फिर सो गए। उस लड़की का जन्म का नाम और उसके पिता का नाम तो मैं आपसे साझा नहीं कर सकती, क्योंकि मैंने तो उसका रेल के अंदर ही नाम रख दिया था अनामिका...किसी प्रख्यात साहित्यकार की एक रचना का नाम भी अनामिका है, एक फिल्म की नायिका भी अनामिका है और यही नाम मैंने उसका रख दिया था।

दूसरी जाटनी

''हाँ जाट परिवार में आई तो जाटनी तो हूँ, लेकिन उससे पहले वैदिक हूँ, फिर जाट परिवार में मैं अकेली आई क्या? न जाने कितनी मुस्लिम लड़कियों ने जाट लड़कों से शादी रचाई होगी?''

''हम तो एक को ही जानते हैं?''

''किसे?''

''आपको!'' कहकर अनामिका हँस पड़ी।

''क्यों एक क्यों दो क्यों नहीं?'' मैंने कहा।

''दूसरी कौन?''

''वह इकराना भी तो बागपत में ही है और जाट के लड़के से शादी करके जाटनी बनी।''

''कौन इकराना?''

''जो कल हमसे मिलकर गई?''

''कल तो आपसे कोई नहीं मिला, हाँ कल तो अनु आंटी आई थी। उसके अलावा तो और कोई नहीं आया।''

''वह अनु ही तो इकराना है।''

''मतलब!''

''अब उसकी भी रामकहानी सुनानी पड़ेगी।''

''अब तो सुना ही दो मम्मी।''

''कुछ ही दिन पहले की ही तो बात है। यूपी की एक मुस्लिम लड़की के जाट लड़के से शादी करने के बाद बागपत जिले की पुलिस में हड़कंप मच गया था। इस शादी के बाद दंगे भड़कने का डर था। पंचायत का कहना था कि लड़का और लड़की भाई-बहन हैं, क्योंकि एक ही गाँव के रहने वाले हैं। पंचायत ने दोनों को अलग रहने का

आदेश दिया था। 23 साल की लड़की को पुलिस सुरक्षा में रखा गया।''

''आप इकराना की बात छोड़कर क्या सुनाने लगी मम्मी?''

''इकराना की ही तो कहानी है मेरी धर्मपुत्री, लेकिन पहले एक बात बताओ?''

''मुझे तो तुम मम्मी कहती हो और उन्हें अंकल, उन्हें पापा क्यों नहीं?''

''आपने ही तो मुझे अपनाया है, अंकल का जी तो आज भी करता है कि मेरे घर वापस भेज दें और बूढ़े के साथ निकाह करके मैं भरी जवानी में ही बेवा हो जाऊँ।''

''अच्छा यह बात है, हमें तो पता ही नहीं था।''

''अब तो पता चल गया है ना, अब इकराना के बारे में बता भी दो कि वह कैसे अनु बनी?''

''इकराना बानो अपने गाँव झुंडपुर से 25 साल के जाट लड़के अमरदीप के साथ चली गई थी, पहले इकराना ने वैदिक धर्म अंगीकार किया और फिर अमरदीप के साथ आर्य समाज मंदिर में विवाह और फिर पंजीकरण भी करवाया और उसके बाद वे गाँव में लौटे। इकराना ने दोघट थाने में पुलिस सुरक्षा के लिए गुहार लगाई थी। पुलिस को डर था कि इस मामले से सांप्रदायिक हिंसा भड़क सकती है।

इसके चलते पुलिस ने इकराना का मेडिकल टेस्ट करवाया। इकराना ने जज के सामने बयान दिया कि उसने अपनी मर्जी से अमर दीप के साथ शादी की है। उसकी आस्था पवित्र वेदों में है, इसलिए उसने अपना नाम बदलकर अनु रख लिया है। आर्य समाज के अलावा इलाहाबाद कोर्ट में भी दोनों ने 5 जून 2015 को शादी का पंजीकरण करवाया। वो गाँव में ही शांति से रहना चाहते हैं। इसी दौरान पाँच गाँव की पंचायत ने फैसला सुनाया कि लड़का जाट है इसलिए वे दोनों गाँव में नहीं रह सकते। गाँव के लोगों का कहना है कि वे दोनों भाई-बहन हैं।''

''मगर दोनों भाई-बहन कैसे हुए? क्या उनके परिवार वालों ने भी

नहीं अपनाया।''

''ऐसी बात नहीं है, अनु के श्वसुर आर्य समाजी हैं। उन्होंने बहू को स्वीकार किया है, लेकिन दोनों की सुरक्षा के मद्देनजर फिलहाल तो उन्हें गाँव से कहीं दूर दूसरे शहर में रहने का आदेश दिया है, जहाँ अनु का शौहर नौकरी करने लगा है।''

''ओह! और अनु कभी-कभी समय पाकर आपके पास दुख बँटाने आ जाती है।''

''नहीं ऐसा कुछ नहीं, वह तो उस दिन ऐसे ही....।''

''अच्छा एक बात बताओ अम्मा,'' अनानिमा ने कहा, ''गरीब गुरबा मुस्लिम लड़कियाँ ही क्यों हिन्दू धर्म अंगीकार करती हैं?''

''गलत बात, फिल्म इंडस्ट्रीज में 40 से अधिक हिन्दू अभिनेताओं की असल जिंदगी में जीवन साथी मुस्लिम परिवार से हैं।''

''फिल्मी दुनिया में तो कोई जात धर्म है ही नहीं, मैंने किसी अच्छे परिवार का उदाहरण माँगा है।''

''कई मुस्लिम सांसद महिलाओं ने वैदिक धर्म अंगीकार किया है।''

''उदाहरण दीजिए?''

''असम से सांसद रही रानी नाराह राजनेता भरत चंद्र नाराह की पत्नी वैदिक धर्म अंगीकार करने से पहले जहाँआरा चौधरी थी। राजनीतिज्ञ नजमा हेपतुल्ला (मौलाना अबुल कलाम आजाद की भतीजी) की तीन बेटियों में से एक ने प्रख्यात आर्यसमाजी से शादी की है और पूर्णतः वैदिक धर्मी बन गई है। यह उसकी बेटी के बदले संस्कारों या यूँ कहें कि हजारों साल पहले के जाग्रत हुए संस्कारों का ही कमाल है कि नजमा हेपतुल्ला कई बार ऐसा बयान दे चुकी हैं कि हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी लोग हिन्दू ही हैं।'' कहते हुए मैं किचिन में चली गई।

संदर्भ

1. दर-दर की ठोकरे और घर वापसी, फरहाना ताज, धामा साहित्य सदन, शाहदरा दिल्ली-32, 2016

जब सरस्वती बनीं मदीहा

सिकंदराबाद के निकट पिलखन गाँव की कहानी है यह। 1904 का सन् था, बरसात का मौसम और मदरसे की छुट्टी हो चुकी थी... लड़कियाँ मदरसे से निकल चुकी थी...अचानक ही आँधी आई और एक लड़की की आँखों में धूल भर गई, आँखें बंद और उसका पैर एक कुत्ते पर जा टिका ...वह कुत्ता उसके पीछे भागने लगा...लड़की डर गई और दौड़ते हुए एक ब्राह्मण मुरारीलाल शर्मा के घर में घुस गई...जहाँ 52 गज का घाघरा पहने पंडिताइन बैठी थी...उसके घाघरे में जाकर लिपट गई, ''दादी मुझे बचा लो...।''

दादी की लाठी देख कुत्ता तो वहीं से भाग गया, लेकिन बाद में जहाँ भी दादी मिलती, तो यह बालिका उसको राम-राम बोलकर अभिवादन करने लगी, दादी से उसकी मित्रता हो गई और दादी उसे समय मिलते ही अपने पास बुलाने लगी, क्योंकि दादी को पंडित कृपाराम ने उर्दू में नूरे हकीकत लाकर दी थी, दादी उर्दू जानती थी, परंतु अब आँखें कमजोर हो गई थी, इसलिए उस लड़की से रोज-रोज वह उस ग्रंथ को पढ़वाने लगी और यह सिलसिला कई सालों तक चलता रहा। लड़की देखते ही देखते पंडितों के घर में रखे सारे आर्ष साहित्य को पढ़-पढ़कर सुनाते हुए कब विद्वान बन गई पता ही नहीं, पता तो तब चला, जब एक दिन उसका निकाह तय हो गया और दादी कन्यादान करने गई। निकाह के समय जैसे ही उसने अपने दूल्हे को देखा तो वह न केवल पहले से शादीशुदा था वरन एक आँख का काना भी था, इसलिए लड़की को ऐसा वर पसंद नहीं आया, परंतु घरवालों और रिश्तेदारों ने दबाव डाला लड़की पर... हाथ तक उठाया, तो विवशता के आँसुओं की गंगा जमुना की धारा उसकी आँखों से बह

चली...परंतु अबला ने जैसे ही देखा कि 52 गज के घाघरे वाली पंडिताइन कन्यादान करने आई है, अपने पौते के साथ तो एक बार फिर इतने वर्षो बाद दादी से चिपट गई थी, 'दादी मुझे बचा लो, मैं काने से निकाह नहीं करूँगी।'

'काने से नहीं करेगी तो तेरे लिए क्या कोई शहजादा आएगा?'

वह वधू दादी को छोड़ने का नाम न ले रही थी, दादी भी रोने लगी, उसे समझाने का प्रयास किया, कि 'जैसा भी है, उसी से नियति समझकर शादी कर ले।'

'अगर आपकी बेटी होती तो क्या आप उसकी शादी काने से कर देती?' वधू ने दादी से पूछा था।

'तु भी तो मेरी ही बेटी है।'

'सिर पर हाथ रखकर कहो कि मैं तुम्हारी बेटी हूँ।'

'हाँ तुम मेरी बेटी हो।' कहते हुए पंडिताइन ने उस मुस्लिम कन्या के सिर पर हाथ रख दिया था।

'तो फिर हमेशा के लिए अपने 52 गज के घाघरे में मुझे छिपा लो दादी।''

'मतलब।'

'अपने इस पौते से मेरा विवाह करके मुझे अपने घर ले चलो।'

'क्या?' कोहराम मच गया, एक मुस्लिम लड़की की इतनी हिम्मत की निकाह के दिन जात-बिरादरी की बदनामी करे और पंडित के लड़के से शादी करने की बात कह दे, आखिर इतनी हिम्मत आई उसके अंदर कहाँ से...जब किसी ने पूछा तो, उसने बताया, 'दादी को नूरे हकीकत यानी कि दयानंद सरस्वती का सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर सुनाते हुए। कर्म से मुझे पंडिताइन बनने का हक वेदों ने दिया है और मैं इसे लेकर रहूँगी।'

पंचायत बैठी, लड़की अब अपनी बात पर अड़ गई कि शादी करेगी तो पंडित के लड़के से वरना नहीं, पढ़ेगी तो वेद पढ़ेगी वरना कुरान नहीं। चतुरसेन और पंडित के लड़के की यारी थी, चतुरसेन आर्य

समाजी किशोर था और उसने पंडित के लड़के को मना लिया था कि मुस्लिम लड़की से शादी करेगा तो सात पीढ़ियों के पूर्वजों के पाप ध ुल जाएँगे। उधर पंडित कृपाराम ने दादी को समझाया और दादी भी मान गई। मुरारीलाल शर्मा ने भी हाँ भर दी। लेकिन मुस्लिम जमात में कोहराम मच गया और उस मुस्लिम परिवार का हुक्का-पानी गिरा दिया... उसे मुस्लिम धर्म से बाहर निकाल दिया, कुएँ से पानी भरना बंद हो गया। परंतु वह परिवार भी अब इसलाम की दकियानूसी बातों से तंग आ चुका था और उसने अपनी पत्नी और तीन बेटों के साथ चार दिन में ही घर में कुआँ खोदकर पानी की समस्या से छुटकारा पाया और अपनी बेटी की शादी हिन्दू युवक से करने के साथ-साथ सपरिवार वैदिक धर्म अंगीकार करने की घोषणा कर दी। यज्ञ हवन के साथ उस युवती का पिता आर्य बन गया और नाम रखा चौधरी हीरा सिंह।

2

आज हीरा सिंह की बेटी की शादी थी, किसी ने कहा, 'हिन्दू इसकी बेटी ले जाएँगे, लेकिन इसके घर का हुक्का-पानी तक न पिएँगे।' ठाकुर बडगुजर ने जब यह सुना तो हीरासिंह का हुक्का भर लाया और पहली घूँट भरी और फिर हीरा के मुँह में नेह ठोक दी और हीरा जाटों, पंडितों, और ठाकुरों के साथ बैठकर हुक्का पीने लगा। पंडित कृपाराम ने उसके नए कुएँ से पानी भरा और सबको पिलाया और खुद भी पिया। मुरारीलाल शर्मा ने एक लंबा भाषण दिया और आर्य समाज के प्रख्यात भजनीक तेजसिंह ने कई भजन सुनाए और बिन दान-दहेज के उस मुस्लिम बालिका मदीहा खान का विवाह संस्कार ब्राह्मण के लड़के से हो गया। उस जमाने में अपनी तरह का यह पहला अंतरधर्मीय विवाह था।

पंडित कृपाराम आगे चलकर स्वामी दर्शनानंद सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए और उन्होंने हरिद्वार के निकट एक गुरुकुल महाविद्यालय स्थापित किया। बालक चतुरसेन प्रख्यात उपन्यासकार हुए और आर्य

समाज अनाज मंडी की स्थापना की और हीरा सिंह विधायक तक बना। स्वामी दर्शनानंद, चतुरसेन शास्त्री, ठाकुर हीरासिंह आदि को आज सब जानते हैं, लेकिन इतिहास के पन्नों में सरस्वती (मदीहा खान) का कहीं नाम नहीं है, जिनकी प्रेरणामात्र से आधा दर्जन लोग विद्वान और समाजसेवी बने और सिकंदराबाद आर्य समाज वैदिक धर्म प्रचार का सबसे बड़ा गढ बन गया था।

elibrary.thearyasamaj.org

संदर्भ

1. यादें, आचार्य चतुरसेन, संज्ञान प्रकाशन, संस्करण 1968, पृष्ठ 45
2. मेरी आत्मकथा, चतुरसेन शास्त्री, हिन्द पाकेट बुक्स, 1970
3. सिकंदराबाद आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास, ठाकुर हीरा सिंह, पृष्ठ 76
4. मेरा संक्षिप्त जीवन परिचय, स्वामी दर्शनानंद सरस्वती, पृष्ठ 34

प्रायश्चित

''ख्वातीन-हजरात, अजीज बुजुर्गो और दोस्तो, आज की शाम बड़ी खुशनसीब है कि आज हम सब अंजुमन फाउंडेशन के ताउल से आयोजित शाम ए सुफियाना के लिए इकट्ठा हुए हैं। वैसे तो सूफी नाम के स्रोत को लेकर कोई एक मत नहीं है। कुछ लोग इसे यूनानी सोफस से निकला मानते हैं, तो कुछ इसको अरबी सफरू यानी पाक शब्द से निकला मानते हैं। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि ये सूफ यानी कि ऊन से आया है, क्योंकि कई सूफी दरवेश ऊन का चोंगा पहनते थे। मादरे वतन हिन्द ने हमेशा से ही सूफी परम्परा को आगे बढ़ाया है और यह प्रोग्राम भी उसी का हिस्सा है। देश में एकता और साम्प्रदायिक सौहार्द को कायम करने में सूफी सन्तों और कव्वालों की खास भूमिका रही है। रूमी, राबिया बसरी, अमीर खुसरो, सलीम चिश्ती और न जाने मोहब्बत का पैगाम देने वाले कितने ही सूफी संतों व गायकों ने लोगों के दिलों में मोहब्बत के बीज बोए हैं और हम सभी लोगों का भी तहे दिल से शुक्रिया अदा फरमाते हैं, क्योंकि आपके आने से कार्यक्रम रंगीन और मौसम खुशगवार हो उठा है।'' इसके बाद मंच पर एक के बाद एक कई गायक आए और लोगों को सूफी दुनिया में पहुँचा दिया...कार्यक्रम कब खत्म हुआ पता ही नहीं चला।

''कार्यक्रम कैसा लगा?'' समन खान ने पूछा।

''अच्छा था, परंतु तेजस को बुखार चढ़ गया है, कार्यक्रम पर डिस्कस फिर करेंगे, पहले घर चलें?''

''तो पहले निजामुद्दीन ओलिया की दरगाह चलते हैं वहाँ दुआ पढ़वा लेंगे, बुखार घर जाने तक ठीक हो जाएगा।'' समन ने कहा।

''यदि ऐसा है तो फिर ये अस्पताल वगैरा क्यों हैं?'' मैंने पूछा।

''ओह! तुम तो इन बातों पर विश्वास ही नहीं करती, फिर वह

आगे बोली, ''एक नौगजा पीर की मजार पंजाब हरियाणा बॉर्डर पर शाहबाद कस्बे से सात किलोमीटर दूर हाईवे नंबर 1 पर स्थित है। जानती हो उसके बारे में...वहाँ निजामुद्दीन या अजमेर शरीफ की तरह ही हर मन्नत पूरी हो जाती है।''

''अच्छा कैसे?''

''वहाँ अल्लाह और भगवान दोनों एक साथ आशीर्वाद देते हैं।''

''मतलब?''

''वह जगह हिन्दू मुस्लिम एकता की प्रतीक है, क्योंकि वहाँ पर एक ही जगह मुस्लिम संत की मजार और हिन्दू के अराध्य देव शिव का मंदिर है। आपको पता है उस मजार पर श्रद्धालु चढ़ावे में घड़ियाँ और नगदी चढ़ाते हैं। वहाँ पर आपको करीने से सजाई हुई घड़ियाँ नजर आएँगी। जो भी यहाँ घड़ी चढ़ा कर दुआ माँगते हैं, वे सब चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं।''

''वे घड़ियाँ कहाँ जाती हैं?'' मैंने पूछा।

''उस पीर की देखरेख का जिम्मा रेडक्रॉस के पास है। वहाँ पर इतनी अधिक घड़िया और राशि चढ़ती है कि बाद में रेडक्रॉस को उन्हें बेचना पड़ता है।''

''देखिए समन खान रेडक्रॉस का संबंध इसाइयों से है, इसका मतलब है कि यहाँ इसाई और मुस्लिम मिलकर हिन्दुओं को मूर्ख बनाते हैं और वहाँ चढ़ावा चढ़वाते हैं...यह अंधविश्वास है।'' मैंने आगे कहा, ''ऐसे नौ गजा पीर तो हिन्दुस्तान में हजारों हैं, इसका मतलब नौ गजा कोई धार्मिक उपाधि हुई।''

वह बोली, ''हाँ होती होगी, लेकिन मुझे नहीं मालूम।''

''नहीं मालूम तो सुनो,'' मैं आगे बोली, ''किसी युग में भारत में एक पद होता था क्षेत्रपाल, जो किसानों से कृषि कर वसूलता था और राजा को देता था। बाद में मुस्लिम युग आया तो भूमि कर यानी लगान वसूलनेवाला क्षेत्रपाल से हो गया भूमिया और भूमिया के ऊपर भी एक अफसर होता था, जिसकी सुरक्षा नौ गज के घेरे में चलती थी, जैसे आजकल जेड श्रेणी की सुरक्षा होती है, ठीक वैसे ही। जब भूमिया किसी से कर वसूलने में असमर्थ होता तो वह किसान के घर

से जवान बेटी को उठाकर ले जाता और उसे पहले अपने अफसर को पेश करता। सबके सामने जेड श्रेणी की सुरक्षा में उसका बलात्कार किया जाता, और जानते हो जेड श्रेणी की सुरक्षा में कोई कदम नहीं रखता था, जैसे आज नहीं रख सकते, इसलिए कुकर्म के वक्त उसके ऊपर एक चादर डाल दी जाती थी, फिर बाद में भूमिया उसे अपना शिकार बनाता था। जमाना बदल गया और आज भूमिया और नौ गजा पीर को सबसे अधिक हिन्दू औरतें पूजती हैं और उन पर आज भी चादर चढ़ाती हैं, इससे अच्छा तो वह चादर किसी गरीब को दे दो। आज देश आजाद है, गुलामी की पीड़ा और दर्द आज क्यों सहती हो बहनों और आज क्यों बलात्कारी पर चादर डालती हो। पीरों की कब्रों पर चादर चढ़ानी बंद करो और याद करो कि ये कौन थे? तुम्हारे पूर्वजों के साथ अत्याचार करनेवाले और तुम इन्हें पूजते हो?''

''ये सब बनावटी बातें हैं, सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के लिए, इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण है?'' समन ने पूछ लिया था।

''हाँ है,'' मैं आगे उसे प्रमाण गिनाने लगी थी, ''सूफी हजरत नाथडौली जो तुर्क के शहजादे थे, उन्होंने मदुरै और तिरूचिरापल्ली में धन के बल पर हजारों हिन्दू मुसलमान बनाए और आज इनकी मजार पर हजारों हिन्दू औरतें भी जाती हैं? क्यों?''

''और कोई प्रमाण?''

''सयद इब्राहीम शहीद ने हुक्मरान के जोर पर हजारों हिन्दू औरतों को मुसलमानी बनाया और आज इनकी दरगाह पर हजारों हिन्दू जाते हैं क्यों? खलीफा बाबा फखरूद्दीन ने पेनूकोंडा के राजा को मुसलमान बनाया और बाद में सारी प्रजा... आज इनकी मजार पर हजारों हिन्दू भी जाते हैं क्यों? मुइनुद्दीन चिश्ती ने दिल्ली से अजमेर जाते हुए 700 हिन्दु औरतों को मुसलमानी बनवाया तलवार के बल पर और हजारों हिन्दू इन्हें चादर चढ़ाते हैं क्यों? फखरूद्दीन गजशकर ने पंजाब में गयारह दलित जातियों को मुसलमान बनाया और आज इनकी मजार पर हजारों हिन्दू और सिख भी जाते हैं क्यों? हजरत निजामुद्दीन के खलीफा शेख अखी सिराजुद्दीन और उसके भी खलीफा शेख अलाउल हक ने आधा बंगाल मुसलमान बनाया और इनकी दरगाहों पर हिन्दू ही

अधिक जाते हैं क्यों? और सुनो हजरत निजामुद्दीन को शास्त्रार्थ में समेनाथ नामक संत ने हराया। समेनाथ ने एक किसान के बालक को इतना ज्ञान दिया कि वह कालांतर में राजा हम्मीर बना, सबसे शक्तिशाली राजा और उसने तुगलक को पराजित किया और तुगलक दिल्ली छोडकर भाग गए थे। परंतु हिन्दू समेराम की समाधि पर नहीं जाते, जो दिल्ली में ही है, लेकिन जाते हैं हजरत निजामुद्दीन की समाधि पर... क्यों? यकीन नहीं आता तो ताजा प्रमाण सुनो। मुसलमानों ने एक किताब छापी थी, हिन्दुओं के काले कलूटे देवता, उसके खिलाफ एक आर्य समाजी ने किताब छापी, फिर दोबारा मुसलमानों ने आर्यसमाज के खिलाफ छापी और फिर आर्य समाज की ओर से छपी रंगीला रसूल। इस पर राजपाल नामक प्रकाशक की हत्या हुई और हत्यारे इल्मुद्दीन को फाँसी, लेकिन आज इल्मुद्दीन गाजी हैं और पाकिस्तान के सबसे बड़े पीर और हर साल उर्स लगता है उनकी मजार पर। नेट पर पढ़ ले सारी कहानी और इल्मुद्दीन के उर्स में आज भी अल्पसंख्यक हिन्दू जाना नहीं भूलते पाकिस्तान में।''

''फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता?'' समन ने आगे कहा।

मैंने अपने बैग से सत्यार्थ प्रकाश निकाला और उसे देते हुए बोली, ''इसे पढ़ना और फिर कभी बात करेंगे पीर ओलिया पर...''

समय गुजरता गया...कई महीने बाद समन मेरे पास आई और कुछ डिस्कस किया...फिर चर्चाओं का दौर चलने लगा...सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव में आकर अंधविश्वासों से उसका विश्वास उठ गया...उसे पता चल गया था कि धर्म क्या है और अधर्म क्या है और उसके पूर्वजों को किस प्रकार विधर्मी बनाया गया था कोड़े मार-मार कर. ..इसलिए वैदिक धर्म अंगीकार कर उसने अपने उन पूर्वजों के पापों का प्रायश्चित किया, जो विधर्मियों के आगे झुक गए थे।

❑❑❑